हिन्दी यू.एस.ए की त्रैमासिक 'ई पत्रिका'

कर्मभूमि

वर्ष ४ अंक १२ मई २०११

दशम् हिन्दी महोत्सव के अवसर पर

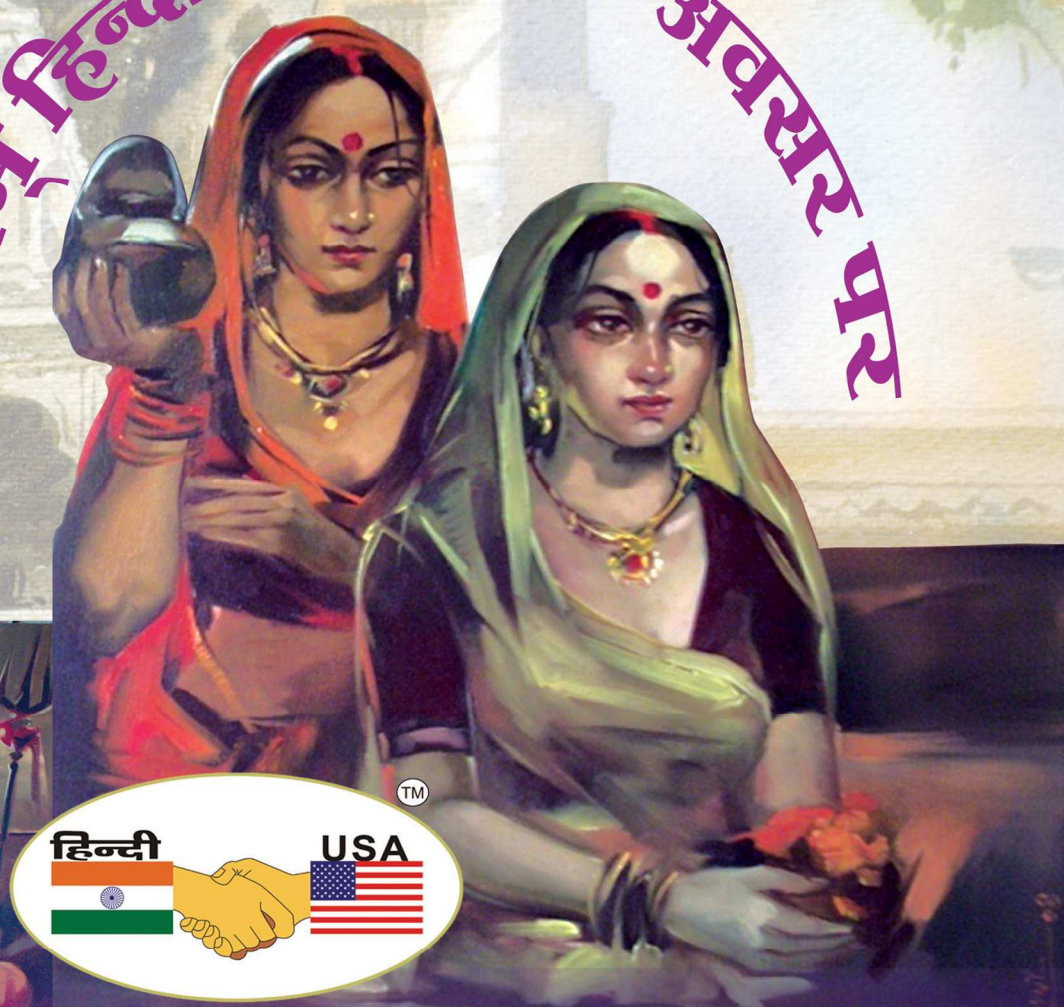

भारतीय संस्कृति विशेषांक

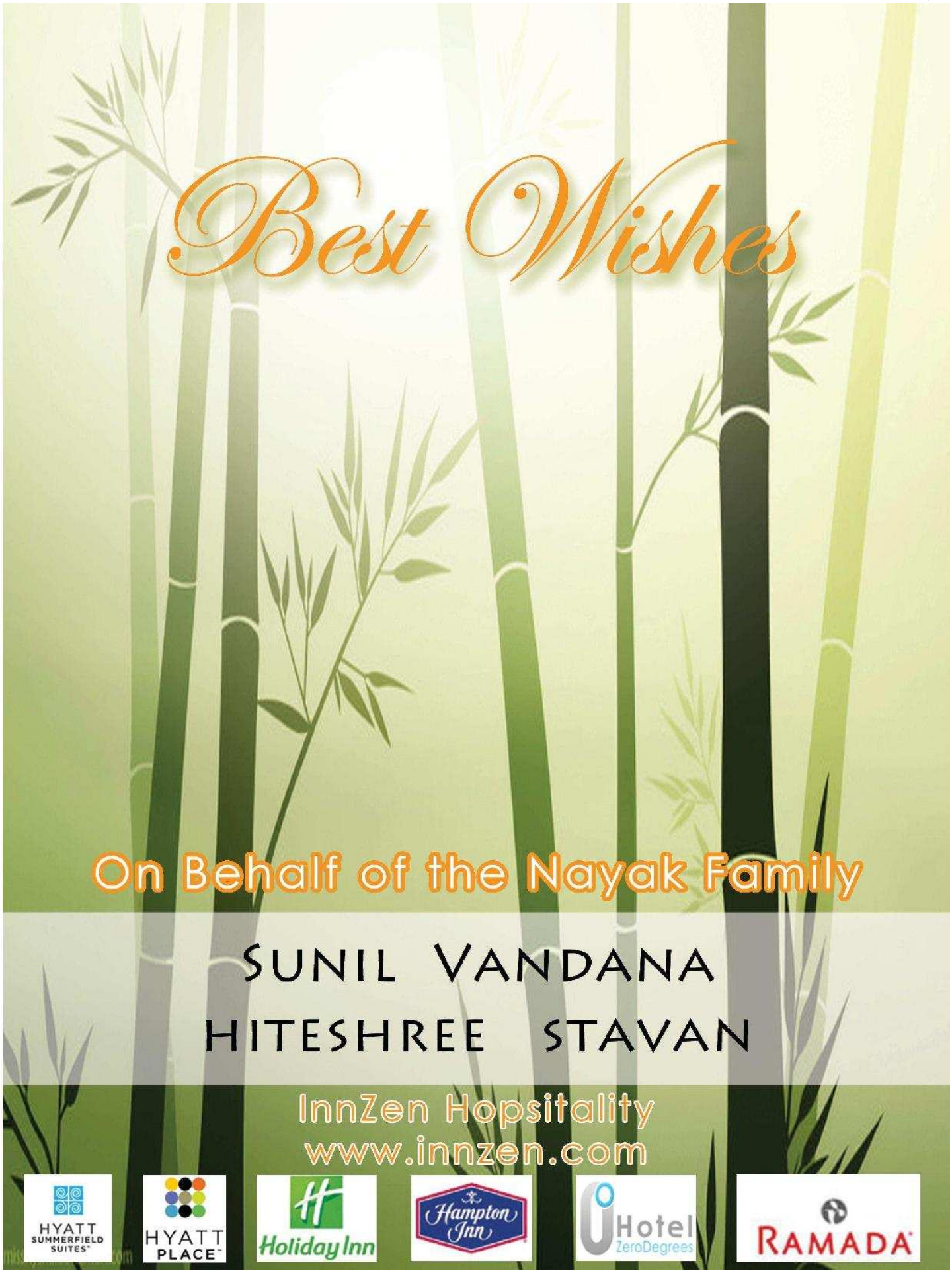
Best Wishes
On Behalf of the Nayak Family
SUNIL VANDANA
HITESHREE STAVAN
InnZen Hopsitality
www.innzen.com
HYATT SUMMERFIELD SUITES
HYATT PLACE
Holiday Inn
Hampton Inn
Hotel ZeroDegrees
RAMADA

www.hindiusa.org 1-877-HINDIUSA

स्थापना: नवंबर 2001 संस्थापक: देवेन्द्र सिंह

हिन्दी यू.एस.ए. के किसी भी सदस्य ने कोई पद नहीं लिया है, किन्तु विभिन्न कार्यभार वहन करने के अनुसार उनका परिचय इस प्रकार है:

निदेशक मंडल के सदस्य

देवेन्द्र सिंह (मुख्य संयोजक) - 856-625-4335
रचिता सिंह (शिक्षण तथा प्रशिक्षण संयोजिका) - 856-582-5035
राज मित्तल (धनराशि संयोजक) - 732-423-4619
अर्चना कुमार (सांस्कृतिक कार्यक्रम संयोजिका) - 732-372-1911
माणक काबरा (प्रबंध संयोजक) - 718-414-5429
सुशील अग्रवाल (पत्रिका 'कर्मभूमि' संयोजक) - 908-361-0220

हिन्दी भवन समिति

डा. नरेश शर्मा (हिन्दी भवन संयोजक) - 609-226-9702
सुमन दाहिया शाह (प्रचार एवं प्रसार संयोजिका)-732-429-2134
संजय गुप्ता (राशि संचय संयोजक) - 917-297-7367
सूर्य नारायण सिंह (तकनीकी संयोजक) - 732-648-3150

शिक्षण समिति

विभिन्न कक्षा स्तर संयोजक

रचिता सिंह - कनिष्ठा १, २; वरिष्ठ स्तर
सुमन दाहिया शाह - प्रथमा १ स्तर
अर्चना कुमार - प्रथमा २ एवं मध्यमा २
रश्मि सुधीर - मध्यमा १
सुशील अग्रवाल - उच्चस्तर

पाठशाला संचालक/संचालिकाएँ

एडीसन: राज मित्तल - 732-423-4619
माणक काबरा - 718-414-5429
गोपाल चतुर्वेदी - 908-720-7596
सा. ब्रुंस्विक: उमेश महाजन - 732-274-2733
पंकज जैन - 908-930-6708
प्रतीक जैन - 646-389-5246
मॉटगोमरी: सुधा अग्रवाल - 908-359-8352
पिस्कैटवे: दीपक लाल - 732-763-3608
ई. ब्रुंस्विक: मैनो मुर्मु - 732-698-0118
सविता नायक - 732-257-5511
वुडब्रिज: अर्चना कुमार - 732-372-1911
जर्सी सिटी: मुरली तुल्शियान - 201-533-9296
प्लेंसबोरो: रॉबिन दाश - 609-275-7121
गुलशन मिर्ग - 917-597-5443
लावरेंसविल: रत्ना पाराशर - 609-584-1858
ब्रिजवाटर: राज बंसल - 732-947-4369
चैरी हिल: रचिता सिंह - 856-582-5035
चैस्टरफील्ड: शिप्रा सूद - 609-920-0177
फ्रैंक्लिन: दलवीर राजपूत - 732-422-7828
होमडेल: सुषमा कुमार - 732-264-3304
मोनरो: सुनीता गुलाटी - 732-656-1962
नॉरवॉक - बलराज सुनेजा - 203-613-9257
विक्रम भंडारी - 203-434-7463
सेयरविल: राम पहलाजानी - 732-316-1940

हम को सारी भाषाओं में हिन्दी प्यारी लगती है, नारी के मस्तक पर जैसे कुमकुम बिंदी सजती है।

संपादकीय

प्रिय पाठकों,

अत्यंत हर्ष सहित कर्मभूमि का यह "भारतीय संस्कृति" विशेषांक आपके समक्ष प्रस्तुत कर रहे हैं। जिस देश की संस्कृति, सभ्यता, परम्पराएँ एवं संस्कार विश्व की अन्य सभी संस्कृतियों में सर्वोपरि हैं, ऐसे देश की संस्कृति की कुछ झलक अपने पाठकों के समक्ष रखने का एक लघु प्रयास किया है। भारतीय संस्कृति अपने आप में इतनी विशाल और गहन है कि इसका बारीकी से अध्ययन किया जाय तो मनुष्य का एक जन्म इसके किये पर्याप्त नहीं है। इसे पूर्ण रूप से समझने हेतु मनुष्य को कई जन्म लेने होंगे। हमने इस अंक में हमारी संस्कृति के बारे में नयी पीढ़ी को कुछ जानकारी प्रदान करने का एक लघु प्रयास किया है। हमें पूर्ण विश्वास है कि पिछले अन्य अंकों की भाँति यह अंक भी आपकी कसौटी पर खरा उतरेगा।

कर्मभूमि का पूर्व अंक जो कि महाभारत विशेषांक था, की देश-विदेशों में बहुत चर्चित रहा। पाठकों ने इसे बहुत सराहा तथा अपनी अनेक प्रतिक्रियाएँ इसके बारे में दीं। इसके अधिकांश लेख हमारे विद्यार्थियों, अध्यापकों एवं छात्रों के अभिभावकों द्वारा लिखे गए थे।

अपने दस वर्ष पूर्ण करके हिन्दी यू.एस.ए. इस वर्ष अपनी दसवीं वर्षगाँठ मना रहा है। एक दशक की इस अविराम यात्रा में अनेक उतार-चढ़ाव आते रहे हैं, परन्तु संस्था के स्तम्भ, इसके कार्यकर्ताओं के अटूट साहस एवं समर्पण से, यह संस्था निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर है। "हिन्दी यू.एस.ए. की आत्म कथा" लेख आपको इसके प्रादुर्भाव से अब तक की कहानी सरल शब्दों में कहेगा।

हिन्दी यू.एस.ए. के एक कर्मठ कार्यकर्ता श्री दिग्विजय सिंह जी का जनवरी २०११ में लम्बी बीमारी के बाद देहांत हो गया था। इसकी क्षतिपूर्ति अत्यंत दुर्लभ है। दिग्विजय जी एक सच्चे हिन्दीप्रेमी एवं राष्ट्रभक्त थे। यह पंक्तियाँ उनके लिए पूर्ण रूप से सार्थक हैं और उन्हें श्रद्धा से समर्पित हैं।

हिन्दी का सिपाही था वो
संगीत का पुजारी था वो।
दिग्विजय नाम था जिसका,
भारत का दीवाना था वो ॥

संस्कार और संस्कृति, भारतीय संस्कृति का आधार, संयुक्त परिवार - खोता हुआ अस्तित्व, भारतीय जनजीवन सभ्यता और संस्कृति के आईने में, हनुमान चालीसा भावार्थ, अग्नि, मोहन जोदड़ो एवं हड़प्पा एक प्राचीन परन्तु विकसित सभ्यता, महात्मा बुद्ध - एक महान आत्मा, भाषा और संस्कृति, गो-रक्षा इत्यादि कई

सुन्दर लेखों से यह अंक सुसज्जित है। अधिकांश लेख हमारे छात्र, अभिभावकों एवं कार्यकर्ताओं द्वारा लिखे गए हैं। महाभारत प्रश्नावली एक रोचक एवं ज्ञानवर्धक प्रश्नावली है जिससे आपका ज्ञान बढ़ेगा तथा अपार आनंद भी प्राप्त होगा। 'बच्चों की दुनिया' अनुभाग नन्हें-मुन्ने बच्चों द्वारा लिखित कविताओं, कहानियों एवं चित्र-कलाओं से सुशोभित है।

हमारी विनती है कि इस अंक की सभी रचनाएँ पढ़ें एवं इनका भरपूर आनंद लें। अपनी प्रतिक्रियाओं से हमें अवगत कराएँ। सम्भव है कि कुछ रचनाओं में व्याकरण एवं वर्तनी की कुछ अशुद्धियाँ रह गयीं हों, इसके लिए हम क्षमा प्रार्थी हैं। कृपया उदार हृदय से हमारे छात्रों एवं अन्य लेखकों का उत्साहवर्धन करें ताकि उन्हें श्रेष्ठतर रचनाएँ लिखने की प्रेरणा मिल सके। आपके पत्रों, आलोचनाओं/समालोचनाओं की हमें प्रतीक्षा रहेगी। मातृभूमि, मातृभाषा, एवं मातृसंस्कृति ये तीन देवियाँ हैं, इनका सम्मान करने से ही हमें विश्व में सम्मान प्राप्त होगा, आइये इसका हम स्वयं पालन करें तथा अपने बच्चों को सिखाएँ।

दशम् हिन्दी महोत्सव की शुभकामनाएँ

कर्मभूमि

लेख–सूची

०७ - हिंदी यू.एस.ए. का परिचय एवं प्रमुख उद्देश्य

१० - आपके पत्र

१३ - श्रृद्धांजलि

१४ - महोत्सव के कवियों का परिचय

१६ - हिंदी भवन परियोजना

२२ - संस्कार और संस्कृति

२३ - योग दर्शन

२४ - भारतीय जनजीवन – सभ्यता और संस्कृति के आईने में

२८ - भारतीय संस्कृति

३० - महाभारत प्रश्नावली

३६ - संयुक्त परिवार - खोता हुआ अस्तित्व

३८ - महात्मा बुद्ध

४० - हिन्दी यू.एस.ए. की आत्मकथा

४६ - हिंदी यू.एस.ए. के कार्यकर्ता

४८ - पिछले महोत्सवों की झलकियाँ

५८ - हनुमान चालीसा भावार्थ: गतांक से आगे

६१ - माता-पिता का कर्ज़

६२ - अग्नि

६६ - मोहनजोदड़ो व हड़प्पा

६९ - ग्रीष्म कालीन शिविर

७० - भाषा और संस्कृति

७३ - भारतीय पारंपारिक चित्राकला

७४ - गोरक्षा

७६ - जिज्ञासा

७८ - दिशाओं का महत्त्व

८० - नया सबेरा

बच्चों की दुनियाँ

८२ - मेरा अनुभव

८३ - होली चित्रकला

८४ - मेरी उदयपुर यात्रा

८५ - धन्य धन्य है हमारी भारतीय संस्कृति

८६ - भारतीय संस्कृति प्रश्नावली

८९ - पहेलियाँ

९१ - हिंदी क्या है?

९२ - नव वर्ष तुम्हारा अभिनंदन है

९३ - संदेश

९४ - मेरी सोच बदल गई

९५ - माता-पिता

संरक्षक

देवेंद्र सिंह

रूपरेखा एवं रचना

सुशील अग्रवाल

सम्पादकीय मंडल

देवेंद्र सिंह

माणक काबरा

अर्चना कुमार

राज मित्तल

भारतीय संस्कृति विशेषांक

आपकी प्रतिक्रियाएँ एवं सुझाव हमें अवश्य भेजें

हमें विपत्र निम्न पते पर लिखें

karmbhoomi@hindiusa.org

या डाक द्वारा निम्न पते पर भेजें:

HindiUSA

3 Quay Circle

Sewell NJ-08080

दशम् हिन्दी महोत्सव में आपका स्वागत है

एक परिचय

हिन्दी यू.एस.ए. हिन्दी प्रेमियों और हिन्दी की सेवा करने वाले स्वयंसेवकों का एक ऐसा संघ है, जिसके प्रत्येक कार्यकर्ता का केवल एक ही सपना है कि हमारी प्यारी हिन्दी भाषा अपने स्वाभिमानी सिंहासन पर पुन: सत्तारूढ़ हो सके। अपने इस स्वप्न को पूरा करने के लिए सभी कार्यकर्ता वर्ष में ३६५ दिन कार्यरत रहते हैं।

हिन्दी यू.एस.ए. एक ऐसा संघ है, जिसमें कोई पदाधिकारी नहीं है। सभी कार्यकर्ता केवल स्वयंसेवक हैं, तथा अपनी-अपनी कार्यक्षमता के अनुरूप विभिन्न क्षेत्रों में कार्यरत हैं। इस समूह की एक और विशेषता है कि इसका सदस्य बनने के लिए कोई सदस्यता शुल्क राशि के रूप में निर्धारित नहीं है। हिन्दी यू.एस.ए. का सदस्य बनने का अर्थ है कि आप तन मन और धन से हिन्दी को बढ़ाने के कार्यों में अपना पूरा सहयोग देने के लिए तैयार हैं।

हिन्दी यू.एस.ए. में ५० मुख्य स्वयंसेवकों के अतिरिक्त २५० शिक्षक-शिक्षिकाएँ, ३५०० विद्यार्थी गण, तथा लगभग ६,००० अभिभावक शामिल हैं, जो भारतीय संस्कृति के उत्थान, धर्म की रक्षा, तथा हिन्दी की उन्नति के प्रति पूर्ण जागरूक हैं, और नियमित रूप से विभिन्न सभाओं, कार्यक्रमों, तथा विपत्रों द्वारा अपने विचारों का आदान-प्रदान करते रहते हैं। क्या आप भी इस समूह के साथ मिल कर भारत की राष्ट्र-भाषा के लिए काम करना चाहेंगे? यदि हाँ, तो आज ही इस विशिष्ठ व अनोखे समूह के सदस्य बनें।

अधिक जानकारी के लिए आप हमारी वेबसाईट www.hindiusa.org देख सकते हैं, या हमें 877-HINDIUSA अथवा hindiusa@hindiusa.org पर संपर्क कर सकते हैं। अपनी जन्मभूमि के प्रति अपने कर्तव्यों से अवगत होइये और एक जागरूक नागरिक बनिए। यही हमारा स्वप्न है।

के प्रमुख उद्देश्य

हिन्दी यू.एस.ए. पिछले दस वर्षों से निम्न उद्देश्यों की पूर्ति में संलग्न है।

१) अमेरिका में जन्मी प्रवासी पीढ़ी को हिन्दी का बुनियादी ज्ञान देना, इसके लिए हिन्दी यू.एस.ए. निम्न कार्य कर रहा है:

- अमेरिका तथा कैनेडा के विभिन्न राज्यों में हिन्दी पाठशालाओं की स्थापना करना।
- विभिन्न स्तरों का पाठ्यक्रम तैयार करना।
- शिक्षकों को स्तरों के अनुसार प्रशिक्षित करना।
- हिन्दी पुस्तकों का प्रकाशन तथा चयन करना जो कि विदेशी बच्चों के लिए उपयोगी हो सकें।
- प्रतिवर्ष मौखिक तथा लिखित परीक्षा का आयोजन करना।
- प्रोत्साहन के लिए बच्चों को पदक प्रदान करना।
- बच्चों को हिन्दी ज्ञान प्रदर्शन के लिए विशाल मंच उपलब्ध करवाना।

२) अमेरिका के स्कूलों में हिन्दी को एक ऐच्छिक भाषा के रूप में स्थापित करने का प्रयास करना।

३) अमेरिका के स्कूल में पढ़ाने के लिए प्रशिक्षित शिक्षिकों को तैयार करना।

४) हिन्दी के प्रति जन मानस की जागरुकता को बढ़ाना तथा आने वाली पीढ़ी के हृदय में हिन्दी के प्रति प्रेम जागृत करना - इसके लिए हिन्दी यू.एस.ए.:

- प्रतिवर्ष हिन्दी महोत्सव का आयोजन करता है, इसमें १,५०० से अधिक बच्चे सांस्कृतिक कार्यक्रमों, प्रतियोगिताओं तथा नृत्यों में भाग लेते हैं।
- भारत से कवियों को आमंत्रित कर हिन्दी साहित्य को मनोरंजन, शिक्षा, और हिन्दी प्रेम से जोड़ना।
- हिन्दी महोत्सव द्वारा विभिन्न प्रांतों के लोगों को आपस में जोड़ना।
- पुस्तकों की प्रदर्शनी द्वारा हिन्दी साहित्य तथा लेखन का प्रचार करना।

के प्रमुख उद्देश्य

- हिन्दी सीखने व अभ्यास करने की सामग्री उपलब्ध कराना।
- प्रतिवर्ष प्रवासी कवियों को प्रोत्साहन एवं सम्मान देने हेतु "स्थानीय कवि सम्मेलन" को हिन्दी दिवस के रूप में मनाना।

५) भारतीय बाजारों में दुकानों के नामों को हिन्दी में लिखवा कर भारतीयों में से हीन भावना को निकाल कर अपनी भाषा के प्रति गर्व का रोपण करना।

६) भाषा के प्रति जागरुकता, लेखन के प्रति सक्रियता, काव्य के प्रति रचनात्मकता को जीवित रखने तथा हिन्दी पढ़ने वाले विद्यार्थियों को लेखन हेतु प्रोत्साहित करने के लिए हिन्दी यू.एस.ए. की ई-पत्रिका "'कर्मभूमि'" प्रकाशित करना।

७) हिन्दी यू.एस.ए. की दसवीं वर्षगाँठ पर हिन्दी भवन के निर्माण के लिए सक्रिय अभियान प्रारंभ करना।

८) बच्चों के कार्यक्रम रेडियो पर करवा कर उन्हें हिन्दी बोलने के लिए प्रोत्साहित करना।

इन उद्देश्यों की पूर्ति आपके सहयोग के बिना असंभव है।

दशम् हिन्दी महोत्सव की शुभकामनाएँ

For: Buying and Selling Real Estate

Varinder Bal (Broker Associate)

Short Sales & Foreclosure Resource (SFR)

Cell: 609-558-4444
Office: 609-387-0335 Ext 208
E Mail: balcentury21@yahoo.com

आपके पत्र

महाभारत विशेषांक- वस्तुतः एक शोध ग्रंथ

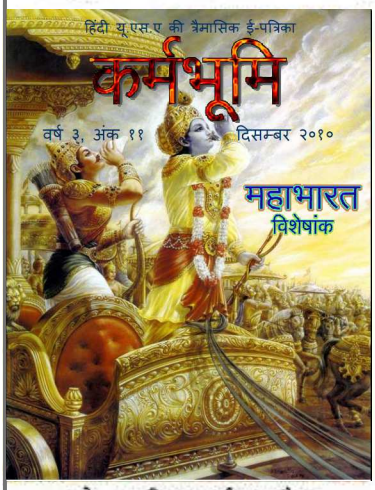

प्रो. राजीव शर्मा, इन्दौर

हिन्दी यू.एस.ए. की त्रैमासिक पत्रिका 'कर्मभूमि' का महाभारत विशेषांक अपने आप में एक शोध ग्रंथ है। संपादक मंडल का परिश्रम इसके प्रत्येक पृष्ठ पर झलकता है। मातृभूमि, मातृभाषा, मातृ संस्कृति को देवियों की तरह आराध्य मानने का उद्घोष यह विशेषांक पूर्ण करता हुआ नज़र आता है। महाभारत प्रश्नावली, महाभारत एक अद्भुत ग्रंथ, दानवीर कर्म, द्रोणाचार्य, महाभारत एवं रामायण का तुलनात्मक विश्लेषण जैसे विषयों पर पैनी कलम चलाई गई है।

विविध विषयों के अन्तर्गत प्रसन्नता अर्जित वरदान (गरिमा अग्रवाल), एक श्लोकी महाभारत (विशेषांक का आगाज़), हिन्दी का अभियान (देवेन्द्रसिंहजी की हृदय काव्याभिव्यक्ति), देवेन्द्रजी की ही महाभारत व रामायण पर तुलनात्मक लेखनी, एक तार्किक रचना रचिता सिंह की शीर्षक 'क्या महाभारत को घर में नहीं रखना चाहिये', प्रमिला अग्रवाल की कर्ण तथा श्वेता सीकरी की दानवीर कर्ण, लेख क्यूँ लिखें (राकेश पुरील), महाभारत एक धर्म युद्ध (प्रभात अग्रवाल), सुधा अग्रवालजी की महाभारत प्रश्नावली आदि लेखों, कविताओं, विश्लेषणों में उन शब्दों को उकेरा गया है जो भारत के प्राचीनतम दर्शन को परत-दर-परत खोलते चलते हैं।

एक अति अच्छा काम यह किया गया है कि इस विशेषांक में बच्चों की लेखकीय प्रतिभा के लिये एक अलग खण्ड 'बच्चों की दुनिया' सृजित किया गया है, जिसमें ऋषभ राउत की चित्रकला है और कु. अविना की फूलों की नदी। वसुंधरा दानी

त्याग की आवश्यकता

देवेंद्र सिंह

की श्रीकृष्ण महिमा भी है और वागीशा शर्मा की एक ने कही दूजे ने लिखी भी। विभिन्न पाठशालाओं के भिन्न-भिन्न उत्सवों की रिपोर्ट सचित्र छपी हुई है। विशेषांक ने 'अल्मा टाइम्स' की रामायण अंक की समीक्षा को प्रमुखता से प्रकाशित किया है।

श्री राज मित्तलजी की व्यक्तिगत रुचि का आलम यह है कि उन्होंने अपने सभी मित्रों को ई-मेल से महाभारत विशेषांक की जानकारी देते हुए बताया है हिन्दी USA एक स्वयं सेवी संस्था है, जो उत्तरी अमेरिका में 30 से अधिक पाठशालाओं का संचालन करती है। इनमें 3500 विद्यार्थी हिन्दी व भारतीयता के सबक पढ़ते हैं। इन्हें तालीम देने के लिये 350 शिक्षक कृतसंकल्पित हैं। राष्ट्र के लिये पुण्य कार्य में सन्नद्ध प्रत्येक कलमकार व सहयोगी को साधुवाद।

नमस्ते सुशील अंकल,

मेरी ओर से आपको बहुत-बहुत धन्यवाद कि आपने मेरी कविता को कर्मभूमि का हिस्सा बनाया। मुझे आपकी यह पत्रिका बहुत अच्छी लगी। मैं हर बार इसके लिए कुछ और अच्छा भेजने का प्रयत्न करूँगी।

धन्यवाद

वसुंधरा, इंदौर (भारत)

Dr. Kiran Bedi
INDIAN POLICE SERVICE

Office Add.:
56, Basement, Uday Park
New Delhi - 110 049 (INDIA)
Tel. : +91-11-47100700

Dear Mr. Singh:

It is my pleasure to write a few lines for the souvenir of your 10th Hindi Mahotsav that you are celebrating on May 21-22, 2011 at the Franklin High School in Somerset, New Jersey.

I was the keynote speaker at your 3rd Hindi Mahotsav in 2004. I had the privilege to witness the young students performing Hindi programs with such dedication that I knew your team's efforts will bear good fruits. I routinely hear in Bharat about the growth of HindiUSA and its activities. Preserving Hindi in the younger generation growing up in the United States is one of the best ways to preserve our culture there. Keep up the good work.

I personally wanted to attend your 10th Hindi Mahotsav, but due to a prior commitment I will not be able to come. My best wishes are with HindiUSA. It will be my pleasure, if I can positively contribute and help in the work HindiUSA is doing.

Keep in touch.

Sincerely,

(Kiran Bedi)

E-mail : kiranbedioffice@gmail.com Website : www.kiranbedi.com

दिनांक: २५-०३-११

-: संदेश :-

भाषा तो संस्कृति का भूषण है । संस्कृति की सही पहचान उसकी भाषाकी गरिमा में से मिलती है । राष्ट्रका गौरव बढाने में भाषा का, एक राष्ट्रभाषा का विकास होना आवश्यक है । भारतीय साहित्य में हिंदी भाषा महत्वपूर्ण स्थान पर है, करीब करीब सभी राज्य की प्रजा हिन्दी में स्वाभाविकता से व्यवहार करना फलदायी समजती है । परदेश में बसनेवाले हमारे भारतीय भी अपनी हिंदी भाषा के लिये प्रेमपूर्वक सजग रहे हैं, वह बडी गर्व और आनंद की गाथा है ।

मुझे जानकर खुशी है कि **हिन्दी युएसअे** द्वारा न्युजर्सी में **हिन्दी महोत्सव**का आयोजन प्रतिवर्ष हो रहा है, ऐसे दशवे महोत्सव के आयोजन पर आप सभी को मेरी शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूं ।

आपका,

(नरेन्द्र मोदी)

To,
Shree Devendra Singh,
Hindi USA,
New Jersey, USA
3 Quay Circle,
Sewell, Nj 08080

नरेन्द्र मोदी
मुख्य मंत्री, गुजरात राज्य

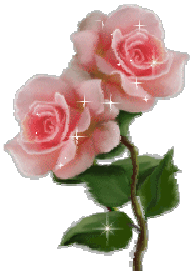

श्रृद्धांजलि

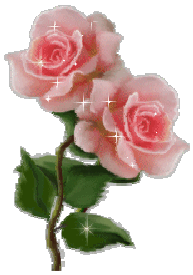

इस वर्ष हिंदी यू.एस.ए. परिवार ने अपनी कार्यकर्ता टीम के एक कर्मठ कार्यकर्ता को सदा के लिए खो दिया। “स्वर्गीय दिग्विजय म्यूर जी” जो पिछले २ वर्षों से एक चिकित्सालय में जीवन और मृत्यु की लड़ाई लड़ रहे थे, अंततः काल की गति से हार गए। दिनांक जनवरी ३१, २०११ को हम सभी कार्यकर्ताओं को उनके दु:खद निधन का समाचार मिला।

श्री दिग्विजय जी का निधन हिंदी यू.एस.ए. परिवार के लिए एक बहुत बड़ा आघात है। दिग्विजय जी प्रथम हिंदी महोत्सव से ही हिंदी यू.एस.ए. से जुड़े थे, तथा सदैव ही नए-नए विचारों द्वारा हिंदी के प्रचार के बारे में सोचते थे। हिन्दी यू.एस.ए. संस्था का नामकरण भी दिग्विजय जी के सुझाव से हुआ था। पिछले कुछ वर्षों में जब वे अस्वस्थ थे तब भी वे धनराशि एकत्र करवाने का प्रयास करते रहते थे। आप अच्छे कार्यकर्ता होने के साथ-साथ हार्मोनिका (माउथ आर्गन) के अद्वितीय कलाकार तथा बहुत अच्छे इंसान थे। आप अपने पीछे परिवार में दो २ पुत्रियाँ, एक पुत्र तथा पत्नी को छोड़ गए हैं।

आज दशम् हिंदी महोत्सव में हम सब दिग्विजय जी की कमी अनुभव कर रहे हैं। आज उन्हें हम सभी की भावभीनी श्रृद्धांजलि सादर सपर्पित है।

हिंदी का सिपाही था वो,

संगीत का पुजारी था वो।

दिग्विजय नाम था जिसका,

भारत का दीवाना था वो॥

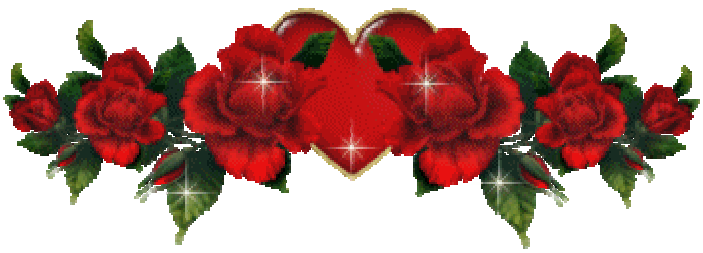

महोत्सव के कवियों का परिचय

डॉ. सुनील जोगी: सुनील जोगी जी नई पीढ़ी के सर्वाधिक चर्चित एवं उर्जा सम्पन्न संयोजक, कवि, और गीतकार हैं। इन्होंने हिन्दी में एम.ए. तथा पी.एच.डी. की है, और इन्हें संस्कृत का भी ज्ञान है। इसीलिए इनकी कविताओं और गीतों में भाषा की शुद्धता, साहित्य का ज्ञान और श्रोताओं को हर रस में सराबोर करने का सामर्थ है। इनकी ५० से अधिक कृतियाँ प्रकाशित हो चुकी हैं, और इनकी प्रकाशित पुस्तकों में प्रसिद्ध हस्तियों जैसे भारत रत्न लता मंगेशकर, श्री जगजीत सिंह, श्री सुनील दत्त, श्री राज बब्बर, पंडित जसराज जैसे अनेक व्यक्तियों ने अपनी भूमिका, अनुशंसा एवं विचार लिखे हैं। इनकी पुस्तकों का लोकार्पण पूर्व राष्ट्रपति श्री शंकर दयाल शर्मा, पूर्व प्रधान मंत्री श्री अटल बिहारी वाजपई, मुख्य मंत्री श्रीमती शीला दीक्षित इत्यादि द्वारा किया जा चुका है। भारत की प्रतिष्ठित कैसेट कम्पनियों द्वारा इनके २५ से अधिक ऑडियो कैसेट एवं सी.डी. प्रसारित किए जा चुके हैं। इन्होंने २,००० से अधिक मंचों पर अपने कविता पाठ से श्रोताओं का मन जीता है। सुनील जी ने फिल्मों और धारावाहिकों के लिए पटकथा और गीत भी लिखे हैं, और राष्ट्रीय पत्र-पत्रिकाओं में इनकी कविताएँ, स्तम्भ, लेख, और साक्षात्कार प्रकाशित हो चुके हैं। इन्होंने लगभग १० देशों में अपना कविता पाठ किया है, और अमेरिका में इनकी यह चौथी यात्रा है। हिन्दी महोत्सव में आपकी यह दूसरी काव्य प्रस्तुति है। सुनील जी संसद भवन की हिन्दी समिति के पूर्व समन्वय अधिकारी और हिन्दी अकादमी दिल्ली सरकार के पूर्व सहायक सचिव रह चुके हैं। ये पूर्व लोकसभाध्यक्ष के अपर निजी सचिव के रूप में संसद भवन में भी कार्य कर चुके हैं। ये 'हास्य हंगामा' काव्य समूह के सूत्रधार हैं।

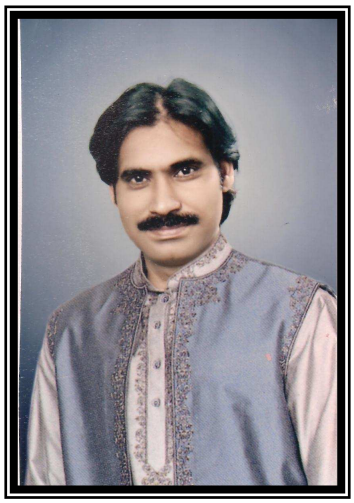

मनोज कुमार 'मनोज': मनोज कुमार एक युवा कर्मठ कवि हैं, जिन्होंने भारत में अनुपम काव्यात्मक शैली प्रस्तुत करने में बहुत ख्याति अर्जित की है। इनका जन्म मेरठ में हुआ था, और वहीं से इन्होंने हिन्दी में स्नातक की उपाधि प्राप्त की। मनोज जी ने गायन में औपचारिक रूप से शास्त्रीय संगीत की शिक्षा ली है, और प्रयाग संगीत समिति द्वारा 'संगीत प्रभाकर' की उपाधि से भी सम्मानित हुए हैं। वर्तमान में ये हिन्दी के अध्यापक हैं, और उल्लेखनीय कवि श्री सुमित्रा नंदन पंत पर एक शोध कार्य भी कर रहे हैं। इनकी कृतियाँ कई प्रतिष्ठापूर्ण पत्रिकाओं में प्रकाशित हुई हैं। इनकी रचनाएँ 'ऑल इंडिया रेडियो' पर नियमित रूप से प्रसारित होती रहती हैं। मनोज जी के कार्यक्रम दूरदर्शन पर भी प्रसारित हुए हैं, और इनकी कविताएँ हिन्दी पुस्तकों

महोत्सव के कवियों का परिचय

जैसे 'निहारिका', 'निरंजना', 'पारिजात', और वीठिका में भी सम्मिलित की गई हैं। इनकी प्रतिभा के अनुरूप इन्हें कई पुरुस्कार जैसे 'काव्य भारती', 'नैतिक मूल्य प्रहरी सम्मान २००७', 'सरदार पटेल अंतर्राष्ट्रीय पुरुस्कार २००८', 'काव्य श्री', 'काव्य श्रीरोमणी', 'दुश्यन पुरुस्कार २०१०', 'कला विभूति सम्मान २०११', इत्यादि भी मिल चुके हैं। इनका प्रसिद्ध काव्यात्मक संग्रह 'वंदना के स्वर दे' है। इन्होंने कई पुस्तकों का संपादन भी किया है, जिनमें 'काव्य पुरुष राम प्रकाश राकेश अभिनंदन ग्रंथ' भी शामिल है। हिन्दी महोत्सव में मनोज जी की यह पहली उपस्थिति है।

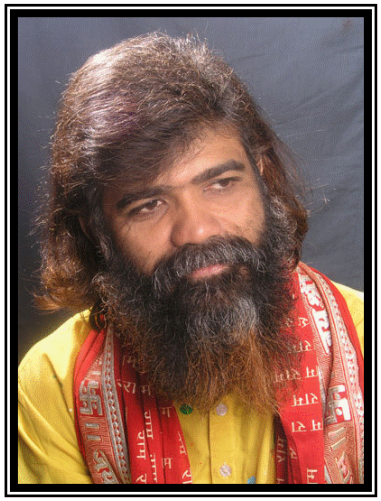

बाबा सत्यनारायण मौर्य: बाबा मौर्य अमेरिका और विश्व के अनेक देशों की कई बार यात्राएँ कर चुके हैं। बाबा जी को भगवान ने कई विधाओं से सम्पन्न किया है, जिन्हें वे 'भारत माँ की आरती' कार्यक्रम के द्वारा प्रस्तुत करके भारतीय संस्कृति के खोए हुए वैभव को फिर से उजागर करने का अनुपम प्रयास कर रहे हैं। बाबा जी का जीवन भारत माँ की सेवा में समर्पित है। इन्होंने अपनी प्रतिभाओं को व्यवसायिक नहीं बनाया है। बाबा जी के व्यक्तित्व की सबसे अच्छी बात यह है कि ये गाँव के सीधे-सादे देहातियों से लेकर देश-विदेश के बुद्धिजीवियों तक सभी से उनके स्तर की बात कर लेते हैं, और उन्हें अपने चिंतन और गहरे ज्ञान से प्रभावित भी कर लेते हैं। बाबा मौर्य से वार्तालाप करने में कितना समय निकल गया, इसका पता नहीं चलता, और सुनने वाला व्यक्ति कुछ नया ज्ञान अर्जित करता है। बाबा जी में जहाँ एक ओर एक ग्रामीण की सरलता झलकती है, वहीं दूसरी ओर आधुनिक उपकरणों का उपयोग अपनी कला में करके वे अपने ज्ञान से सबको आश्चर्यचकित कर देते हैं। इनकी कविताओं, गानों, और व्याख्यानों से श्रोताओं के दिलों में अव्यवस्थाओं और भ्रष्टाचार के विरुद्ध छुपा हुआ आक्रोश सहज ही बाहर निकल कर आता है, क्योंकि बाबा जी अपनी बात बिना मिलावट और कृत्रिमता का आवरण ओढ़े हुए सीधे-सीधे बोलते हैं। इनकी कविता और भजन करते हुए चित्रकला, व्यंग्य चित्रकारी, और दर्शन-प्रवचन हिन्दुत्व के गौरव की गरिमा जगाने में अत्यंत प्रभावशाली सिद्ध हो रहे हैं। बाबा जी की भारतीय संस्कृति के विषयों के ऊपर चित्रात्मक प्रदर्शनी हर वर्ष त्रिनिदाद, सूरीनाम, गॉयाना जैसे देशों में लगती है, और त्रिनिदाद के राम-लीला कार्यक्रम में इनकी विशेष भूमिका रहती है। बाबा जी की कला केवल मनोरंजन के लिए नहीं है, अपितु यह भारतीय संस्कृति के उत्थान का एक महत्वपूर्ण अभियान है। बाबा जी हिन्दी महोत्सव में कई बार आ चुके हैं, और इस दसवें महोत्सव में हमारे विशेष अनुरोध पर 'भारत माँ की आरती' करने के लिए पधारे हैं।

हिंदी भवन परियोजना

हिंदी भवन क्या है?

जब किसी विचार का क्रियान्वयन केन्द्रित होकर किया जाता है तो कार्य करने की शक्ति एवं क्षमता बढ़ जाती है। हिंदी भवन हिंदी के प्रचार-प्रसार के केन्द्र के रूप में निर्मित किया जा रहा है। हिंदी भवन अमेरिका में भारतीयों की एकता एवं अखंडता का प्रतीक होगा। हिंदी भाषा एवं भारतीय संस्कृति को समर्पित, यह भारत के बाहर सबसे बड़ा हिंदी भवन निर्मित किया जायेगा, जो कि विश्व की दूसरी सबसे अधिक बोले जाने वाली भाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। यह समस्त हिंदी भाषियों के उपयोग हेतु सभी साधनों से सुसज्जित एक भव्य सामाजिक केन्द्र होगा। हिंदी यू.एस.ए. ने इस भागीरथ परियोजना को सफलतापूर्वक पूर्ण करने हेतु कर्मठ एवं संकल्पित स्वयंसेवी व्यक्तियों की सहायता से अग्रणी होकर महत्वपूर्ण बीड़ा उठाया है।

हिंदी यू.एस.ए. विश्व की विशालतम प्रवासी हिंदी सेवी संस्था है, जो पिछले दस वर्षों से हिंदी भाषा एवं भारतीय संस्कृति के प्रचार-प्रसार तथा इसे आने वाली पीढ़ी को सौंप कर जीवित रखने का महत्वपूर्ण कार्य कर रही है। संस्था ने दस वर्ष पूर्व अपना अभियान केवल दो विद्यार्थियों के हिंदी प्रशिक्षण से आरम्भ किया था, और आज यह ३,५०० से अधिक छात्र-छात्राओं को विभिन्न स्तरों पर ठोस पाठ्यक्रम स्वरचित पुस्तकों द्वारा हिंदी में प्रशिक्षत कर रही है।

हिंदी भवन की आवश्यकता क्यों?

* परिवार की शक्ति घर से, धर्म एवं अध्यात्म की शक्ति मठ, मंदिरों या अन्य धर्मस्थलों से, तथा शिक्षा की शक्ति गुरुकुलों, विद्यालयों से होती है। इसी प्रकार किसी सामाजिक कार्य के सफलतापूर्वक सञ्चालन के लिए भवन या केन्द्र का निर्माण अत्यंत महत्त्वपूर्ण होता है। इस भावना को हिंदी एवं संस्कृति के प्रचार-प्रसार का आधार मानकर हिंदी यू.एस.ए. संस्था ने केंद्र के रूप में हिंदी भवन के निर्माण का संकल्प लिया है।

* हिंदी भवन के निर्माण का मुख्य प्रयोजन समस्त भारतीयों एवं भारतवंशियों को संगठित कर अपनी भाषा एवं संस्कृति पर गर्व करने की भावना पैदा करना है। भारतवर्ष की राजभाषा होने के नाते, भारत में बोली जाने वाली अनेक भाषाओँ के बीच हिंदी सामंजस्य स्थापित कर सेतु का कार्य कर सकती है। आशा एवं विश्वास है कि हिंदी भवन का निर्माण, अमेरिका एवं विश्व में हम भारतीयों को सामूहिक पहचान एवं सम्मान दिलाने में प्रमुख भूमिका निभाएगा। हिंदी भवन प्रवासी भारतीय बच्चों को अपने माता-पिता एवं पूर्वजों के देश एवं अपनी सनातन संस्कृति के प्रति आस्था एवं प्रेम को उतरोत्तर जागृत करने एवं विकसित करने में अत्यंत सहायक होगा, तथा अमेरिका में हिंदी और भारतीय संस्कृति के प्रति उनकी आस्था एवं जागरूकता बढ़ाएगा।

* भारत में दैनिक एवं राजकीय कार्यों में राजभाषा हिंदी के प्रयोग कम होने से भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति भी प्रभावित हो रही है। हिंदी का उदगम् देवभाषा संस्कृत से है, जिसके कारण हिंदी भारतीय सभ्यता एवं परम्पराओं का आधार रही है। हिंदी भवन के माध्यम से अमेरिका में हिंदी का दृढ़ता से प्रचार-प्रसार कर भारत में भी हिंदी के प्रयोग को

अधिक प्रभावी बनाया जा सकेगा।

* जैसे-जैसे भारतवर्ष वाणिज्य एवं तकनीकी क्षेत्रों में विश्व में अपनी पहचान बनाकर एक शक्तिशाली राष्ट्र बनने की ओर अग्रसर हो रहा है, वैसे-वैसे हिंदी अपना महत्व सिद्ध कर सुगमता से अपना स्थान बनाये रखते हुए महत्वपूर्ण भाषा के रूप में स्थापित होगी। हिंदी भवन इस कार्य को सकारात्मक रूप देने में विशेष भूमिका निभाएगा।

* इमारतें और स्तम्भ सभ्यता और संस्कृति के प्रतीक होते हैं, जिनके माध्यम से सभ्यताएँ संरक्षित रहती हैं। उसी भाव से हिंदी भवन के निर्माण का संकल्प लिया गया है। हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार एवं रक्षा हेतु निर्मित यह भव्य हिंदी भवन एक सामाजिक केन्द्र एवं संग्रहालय भी होगा, जहाँ हिंदी एवं भारतीय संस्कृति से सम्बंधित सामग्री के उपलब्ध विशाल भंडार को संरक्षित करके रखा जायेगा।

* आज अन्य भाषा-भाषी अमेरिकी नागरिक भी हिंदी के अध्ययन में रूचि लेने लगे हैं। इस दृष्टि से हिंदी भवन सभी भाषा-भाषियों को भारतीय भाषाओँ एवं संस्कृति की ओर आकर्षित करने और उनके प्रचार-प्रसार में सहायक होगा।

हिंदी भवन में क्या-क्या निर्मित होगा?

वृहत हाल - आधुनिक तकनीक से निर्मित एक भव्य सभागार जिसमें ५०० व्यक्तिओं के बैठने की सुन्दर व्यवस्था होगी। सांस्कृतिक कार्यक्रमों के मंचन एवं प्रस्तुति हेतु एक भव्य स्टेज का निर्माण किया जायेगा। इस हाल का प्रयोग साहित्यिक, सांस्कृतिक समारोहों के साथ-साथ हिंदी की परीक्षाओं, प्रतियोगिताओं, त्यौहारों, विवाह, जन्मदिवस आदि उत्सवों के आयोजनों हेतु भी किया जायेगा।

सभाकक्ष - ३०-३५ व्यक्तियों की क्षमता वाला एक सभा भवन समस्त आधुनिक तकनीकी सुविधाओं, उपकरणों एवं फ़र्नीचर से युक्त होगा जिसमें सामाजिक संस्थाएँ अपनी सभाएँ अथवा बैठकें सुचारू रूप से कर सकेंगी।

सार्वजनिक पुस्तकालय - यह पुस्तकालय अपने आपमें अनूठा और हिंदी के प्रचार-प्रसार की एक

हिंदी भवन के लिए प्रस्तावित प्रतिपादन

हिंदी भवन परियोजना...

महत्वपूर्ण कड़ी होगा। विशाल संख्या में हिंदी की पुस्तकों और साहित्य का वृहत भण्डार इसमें उपलब्ध होगा। सभी उम्र के बच्चों एवं बड़ों के लिए पुस्तकें, संगणक, वीडिओ आदि इसमें उपलब्ध होंगे। पुस्तकालय द्वारा समय-समय पर साहित्यिक, सांस्कृतिक, नैतिक ज्ञानवर्धक कक्षाओं एवं गोष्ठियों का आयोजन किया जायेगा, जिसमें सभी भाग ले सकेंगे। ३ से १० वर्ष के बच्चों के लिए कहानी-सभा का आयोजन किया जाएगा।

सांस्कृतिक हॉल - यह हॉल बच्चों को विभिन्न भारतीय ललित कलाओं-नृत्य, संगीत, गायन, अभिनय आदि सिखाने हेतु प्रयोग में लाया जायेगा। भारतीय इतिहास, रामायण, श्रीमद भागवत् गीता, धर्म-अध्यात्म, भजन आदि की कक्षाएँ तथा प्रवचन आदि भी इसमें आयोजित किये जायेंगे।

कक्षागृह - हिंदी भवन में ५ कक्षागृहों का निर्माण किया जाएगा जिनमें हिंदी एवं अन्य भाषाओँ की कक्षाओं के साथ-साथ वैदिक गणित, SAT, हिंदी टंकण, गोष्ठियों एवं विभिन्न कौशल की कक्षाओं एवं सेमिनारों का आयोजन किया जायेगा।

थीम पार्क - हिंदी भवन में विशिष्ट प्रकार का विशाल थीम पार्क होगा जिसमें बच्चों के बुद्धिवर्धक खेल, पहेलियाँ, चित्र प्रदर्शनी, अभिनय आदि जैसी अनेक रुचिपूर्ण गतिविधियाँ आयोजित की जायेंगी, और खेल ही खेल में बच्चों को हिंदी ज्ञान प्राप्त होगा और उनकी रूचि बढ़ेगी।

रसोईघर एवं भोजन कक्ष - रसोईघर एवं भोजन कक्ष समस्त आधुनिक सुविधाओं एवं उपकरणों से सुसज्जित होगा तथा सभी प्रकार के बड़े समारोहों के प्रीतिभोज हेतु सक्षम होगा।

अतिथि कक्ष - हिंदी भवन में कुछ अतिथि कक्षों का निर्माण भी किया जायेगा जिनमें भारत से अथवा न्यूजर्सी के बाहर से आने वाले मेहमानों, विद्यार्थियों, तथा अतिथियों को अस्थायी निवास की सुविधा प्रदान की जाएगी।

हिंदी भवन के निर्माण में आप किस प्रकार सहायता कर सकते हैं --

हिंदी भवन निर्माण परियोजना का सञ्चालन एक समर्पित एवं संकल्पित संस्था हिंदी यू.एस.ए. के द्वारा किया जा रहा है। इस सन्दर्भ के आधार पर आपको आश्वस्त किया जाता है कि आपके द्वारा दी गई अनुदान राशि का एक-एक पैसा भवन के निर्माण हेतु समुचित रूप में खर्च किया जायेगा। किसी प्रकार के प्रबंधकारी या प्रशासनिक खर्च अनुदान राशि से नहीं लिए जायेंगे। अमेरिका में रहने वाले व्यक्तियों के लिए उनकी अनुदान राशि IRS की धारा 501 (C) 3 के अंतर्गत आयकर मुक्त होगी।

अनुदान राशिदाता एवं सहयोगी

हिंदी रत्न: $100,000 या उससे अधिक अनुदान राशि दान करने वाले व्यक्ति या संस्था को हिंदी रत्न से विभूषित किया जाएगा, एवं हिंदी भवन के प्रवेश द्वार पर हिंदी रत्न के नाम की स्थापित सम्मान पट्टिका में नाम अंकित किया जायेगा| अनुदानकर्ता एवं उनके निकटतम परिजन २० वर्षों तक प्रतिवर्ष ६ बार तक हिंदी भवन द्वारा प्रदत्त सुविधाओं का उपयोग निःशुल्क कर सकेंगे। इसके साथ ही अनुदानकर्ता को हिंदी यू.एस.ए के प्रत्येक आयोजन में मुख्य अतिथि के रूप में सम्मानित कर उनका विज्ञापन स्मारिका के बाहरी अंतिम पृष्ठ पर छापा जायेगा। उनके नाम का विशेष बैनर भी सभी कार्यक्रमों में मंच के पास प्रदर्शित किया जायेगा।

हिंदी भवन परियोजना...

हिंदी रत्न अनुदानकर्ता हिंदी यू.एस.ए. के सभी समारोहों में १० व्यक्तिओं को निःशुल्क अपने साथ ला सकेंगे।

हिंदी मित्र: $50,000 या इससे अधिक राशि दान करने वाले व्यक्ति या संस्था को हिन्दी मित्र से विभूषित किया जायेगा। हिन्दी भवन के वृहत हॉल के प्रवेश द्वार पर हिन्दी-मित्र के नाम की सम्मान पट्टिका स्थापित की जाएगी। अनुदानकर्ता एवं उनके निकटतम परिवार के सदस्य १० वर्षों तक, प्रति वर्ष ४ बार तक हिन्दी भवन द्वारा प्रदत्त सुविधाओं का उपभोग निशुल्क कर सकते हैं। इसके साथ ही, अनुदानकर्ता को हिन्दी यू.एस.ए. के प्रत्येक आयोजन में विशिष्ट अतिथि के रूप में सम्मानित कर, उनका विज्ञापन, स्मारिका के मुखपृष्ठ के अन्दर के पृष्ठ पर छापा जायेगा। उनके नाम का विशेष बैनर भी सभी कार्यक्रमों में प्रदर्शित किया जायेगा। हिन्दी-मित्र अनुदानकर्ता, सभी हिन्दी यू.एस.ए. के समारोहों में ५ व्यक्तियों को अपने साथ निशुल्क ला सकेंगे।

हिन्दी हितैषी: $25,000 या इससे अधिक राशि दान करने वाले व्यक्ति या संस्था को हिन्दी हितैषी से विभूषित किया जायेगा। हिन्दी भवन पुस्तकालय के प्रवेश द्वार पर हिन्दी हितैषी के नाम की सम्मान पट्टिका स्थापित की जाएगी। अनुदानकर्ता एवं उनके निकटतम परिवार के सदस्य ५ वर्षों तक, प्रति वर्ष २ बार तक हिन्दी भवन द्वारा प्रदत्त सुविधाओं का उपभोग निशुल्क कर सकते हैं। इसके साथ ही, अनुदानकर्ता को हिन्दी यू.एस.ए. के प्रत्येक आयोजन में विशिष्ट अतिथि के रूप में सम्मानित कर, उनका विज्ञापन 'कर्मभूमि', हिन्दी यू.एस.ए. द्वारा प्रकाशित त्रैमासिक पत्रिका, के प्रत्येक अंक में छापा जायेगा।

हिन्दी सहयोगी: $10,000 या इससे अधिक राशि दान करने वाले व्यक्ति या संस्था को हिन्दी सहयोगी से सम्मानित किया जायेगा। हिन्दी भवन के सांस्कृतिक हॉल के प्रवेश द्वार पर हिन्दी सहयोगी के नाम की सम्मान पट्टिका स्थापित की जाएगी। अनुदानकर्ता एवं उनके निकटतम परिवार के सदस्य ३ वर्षों तक, प्रति वर्ष १ बार हिन्दी भवन द्वारा प्रदत्त सुविधाओं का उपभोग निशुल्क कर सकते हैं। इसके साथ ही, अनुदानकर्ता को हिन्दी यू.एस.ए. के प्रत्येक आयोजन में विशिष्ट अतिथि के रूप में सम्मानित कर, उनका १/२ पृष्ठ का विज्ञापन 'कर्मभूमि', हिन्दी यू.एस.ए. द्वारा प्रकाशित त्रैमासिक पत्रिका, के प्रत्येक अंक में छापा जायेगा।

हिन्दी प्रेमी : $5,000 या इससे अधिक राशि दान करने वाले व्यक्ति या संस्था को हिन्दी प्रेमी के रूप में सम्मानित किया जायेगा। हिन्दी भवन के सभाकक्ष के प्रवेश द्वार पर हिन्दी प्रेमी के नाम की सम्मान पट्टिका स्थापित की जाएगी। अनुदानकर्ता एवं उनके निकटतम परिवार के सदस्य २ वर्षों तक, प्रति वर्ष १ बार हिन्दी भवन द्वारा प्रदत्त सुविधाओं का उपभोग निशुल्क कर सकते हैं। इसके साथ ही, अनुदानकर्ता का १/२ पृष्ठ का विज्ञापन 'कर्मभूमि', हिन्दी यू.एस.ए. द्वारा प्रकाशित त्रैमासिक पत्रिका, के प्रत्येक अंक में ५ वर्षों तक मुद्रित किया जायेगा।

हिन्दी सेवक: $1,000 या इससे अधिक राशि दान करने वाले व्यक्ति या संस्था को हिन्दी सेवक के रूप में सम्मानित किया जायेगा। हिन्दी भवन में प्रतिस्थापित अनुदान कर्ताओं के सूची-पट्ट पर इनका नाम अन्य अनुदानकर्ताओं के साथ अंकित होगा।

यह आवश्यक नहीं कि आपको उपरोक्त वर्णित राशि ही अनुदान करनी है। आप अपनी क्षमतानुसार कोई भी राशि अनुदान कर सकते हैं। आपका प्रत्येक अनुदान चाहे वह लघु हो या बृहत्, इस महान कार्य के लिए बहुत बड़ा है। कृपया ह्रदय

हिंदी भवन परियोजना...

से इस महान यज्ञ में अपनी आहुति प्रदान करें। आर्थिक सहायता के साथ-साथ यदि आप अपनी सेवाएँ भी इस कार्य हेतु प्रदान करने का संकल्प करेंगे तो यह 'एक सोने में सुहागे' जैसा कार्य एक शुभ प्रयोजन हेतु होगा।

इस के अतिरिक्त, आप हिन्दी भवन के निर्माण में आर्थिक सहयोग अन्य माध्यम से भी कर सकते हैं। कृपया CapitalOne बैंक द्वारा जारी किए जाने वाले वीसा क्रेडिट-कार्ड के लिए नीचे दी गयी लिंक पर क्लिक करके आवेदन करें। आपका क्रेडिट कार्ड स्वीकृत होने के उपरान्त, आप द्वारा प्रथम खरीद इस क्रेडिट-कार्ड द्वारा करने के बाद, CapitalOne बैंक हिन्दी यू.एस.ए. को $50.00 का अनुदान देगा। इसके बाद भी जब भी आप इस क्रेडिट-कार्ड द्वारा कोई भी सामान क्रय करेंगे, CapitalOne बैंक हिन्दी यू.एस.ए. को आप द्वारा खर्च करी गयी राशि का १% से २% तक लाभांश देगा। हिन्दी भवन की सहायतार्थ यह एक बहुत अच्छा कार्यक्रम है जिसके अंतर्गत CapitalOne बैंक हमारी सहायता कर रहा है।

http://www.cardlabconnect.com/ConstructHindiBhavaninUSA

अनुदान हेतु अपने चेक कृपया HindiUSA के नाम से काट कर कृपया इस पते पर भेजें:

किसी प्रकार के कोई प्रश्न हों तो निस्संदेह हमसे दूरभाष अथवा विपत्र द्वारा संपर्क करें।

हमारा पता है:
दूरभाष: 1-877-HINDIUSA
विपत्र: hindibhavan@hindiusa.org
अनुदान चेक भेजने का पता:
Hindi USA
Hindi Bhavan Project
8 Roxy avenue
Edison, NJ 08820 (USA)

PROPOSED UPPER LEVEL LAYOUT*

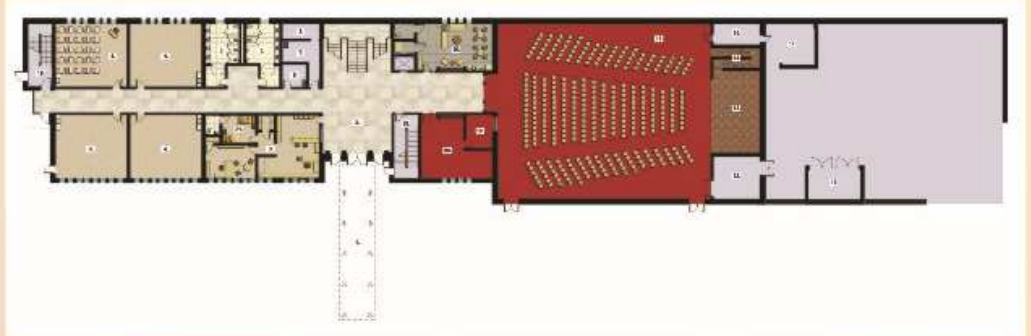

PROPOSED LOWER LEVEL LAYOUT*

Nextage®
M3 Realty

1910 Oak Tree Road
Edison, NJ 08820
Tel: 732-603-0700
Fax: 732-603-0794
www.NextageM3Realty.com

Looking to buy or sell?

Let us help you achieve your real estate goals.

Call us for a free Buyer/Seller Consultation.

Vidhya Ramakrishnan
REALTOR Associate
732-910-0029
vidhyanj@yahoo.com

Anubha Aggarwal
REALTOR Associate
732-910-6364
aggarwal_anubha@yahoo.com

In everything we do, we strive to create memorable relationships with our customers by providing the absolute best service.

Looking after your best interest is our # 1 priority.

Presentations about the new Nextage M3 Realty every Thursday at 11:30 AM at our office.
CONFIDENTIAL appointments with broker upon request.

Each office is independently owned and operated.

संस्कार और संस्कृति

देवेंद्र सिंह

किसी भी सुदृढ़ संस्कृति के पीछे उस संस्कृति में पलने वाले व्यक्तियों के संस्कारों का योगदान होता है। भारतीय संस्कृति की महानता के पीछे अनगिनत लोगों के संस्कारों की उर्वरक शक्ति समावेश है। परंतु अच्छे संस्कारों को उपजाने के लिए अच्छे कर्मों के बीज बोना अनिवार्य है। भारत का इतिहास कर्मठता का ज्वलंत उदाहरण है, जिसने श्रेष्ठ व्यक्तित्व वाले असंख्य कर्मयोगियों के त्याग, बलिदान एवं वीरतापूर्ण कर्मों के उदाहरण हमारे समक्ष रखे हैं। हमें अपनी संस्कृति को शक्तिशाली बनाने के लिए इन उदाहरणों से सीख लेकर अच्छे कर्मों की परंपरा जारी रखनी चाहिए, ताकि आने वाली पीढ़ी को भारतीय संस्कृति से शिक्षा व प्रेरणा मिलती रहे। कर्म सभी व्यक्तियों को करना पड़ता है, चाहे वे मन से करें अथवा अरुचि से। यदि रात में अच्छी नींद लेकर और सुबह स्फूर्ति से उठकर हम अपने दैनिक कर्म के लिए घर से निकलते हैं तो पूरी ऊर्जा और संतुलन से हम अपने काम को पूरा करते हैं। परंतु यदि अनिच्छा से उठकर बेमन हम अपना दिन प्रारंभ करते हैं तो सारा दिन थकान से भरा होता है, और कार्य भी उतना अच्छा संपन्न नहीं होता।

अच्छे संस्कार एवं संस्कृति का निर्माण करने के लिए आवश्यक है कि कर्म निस्स्वार्थ हो, और जन-कल्याण के लिए किया गया हो। हमारे शरीर के सभी अंदरूनी अंग अपना काम निस्स्वार्थ भाव से अविरल करते रहते हैं, क्योंकि यही उनका स्वभाव है। मनुष्य का स्वभाव और धर्म भी यही है, क्योंकि वह ईश्वर का अंश है, और ईश्वर हमेशा दूसरों के ही हित में कार्य करते हैं। तो प्रश्न यह उठता है कि जब मनुष्य ईश्वर का अंश है तो फिर वह स्वार्थी एवं धूर्त कैसे बन गया? इसका सबसे बड़ा कारण यह है कि मनुष्य ने स्वयं को प्रकृति से दूर रखकर अपने को ईश्वर से दूर कर लिया है, और इसलिए निस्स्वार्थ कार्य करने की प्रेरणा और उत्साह से वह वंचित रह जाता है। निस्स्वार्थ कार्य करने का एक छोटा सा उदाहरण हिन्दी यू.एस.ए. के कार्यकर्ताओं ने समाज के आगे प्रस्तुत किया है। हिन्दी भाषा के उत्थान के लिए कुछ वीर कार्यकर्ता सशक्त बीज बनकर और अच्छे संस्कार एवं संस्कृति के निर्माण का उद्देश्य लेकर न्यू जर्सी की 'भूमि' में प्रविष्ट हुए। इन्होंने अपने समय, अर्थ, एवं ऊर्जा का बलिदान करके एक कठिन कार्य को 10 वर्षों की कड़ी तपस्या और अविचलित प्रण की सहायता से समाज के लाभ के लिए सफलता की ऊँचाइयों पर स्थापित किया। जो बीज कोई विशेष योजना लेकर 'भूमि' में प्रविष्ट होते हैं, वही ईश्वर के आशीर्वाद से समाज के हित में कुछ उत्पन्न कर पाते हैं।

अच्छे एवं निस्स्वार्थ कार्य कभी भी व्यर्थ नहीं जाते। उसके 'रिटर्न' शेयर बाजार में होने वाले लाभ से कई गुना ज्यादा एवं स्थायी होते हैं। प्रकृति अपनी प्रकृति कभी नहीं बदलती। यदि हमें पूंजी चाहिए तो हमें पूंजी का दान करना पड़ेगा, यदि हमें दूसरों का आदर-सत्कार चाहिए तो हमें दूसरों का आदर करना पड़ेगा। यदि हमें अपने बच्चों को शिक्षित एवं सुसंस्कृत बनाना है तो सबसे पहले हमें दूसरों के बच्चों को शिक्षा एवं संस्कृति का ज्ञान बाँटना पड़ेगा। यही प्रकृति का नियम है। इस नियम के आधार पर यदि हम अपने संस्कारों की रक्षा कर सकें, और अपनी संस्कृति को अपने निस्स्वार्थ कर्मों से सींच सकें तो विश्व की कोई भी शक्ति हमें कभी भी गुलाम नहीं बना सकती।

संजय सोलंकी

योगाचार्य संजय जी का जीवन पिछले १२ वर्षों से योग साधक, होलिस्टिक स्वास्थ्य, योग शिक्षा, मूल्य शिक्षा, शांति व सामाजिक एकता को समर्पित है। दिल्ली के विभिन्न स्थानों पर योग की कक्षाओं व शिविरों का आयोजन करते हैं। दिल्ली में सर्वोदय योग (अष्टांग-योग प्रशिक्षण केन्द्र) का संचालन करते हैं व आत्मोदय चैरिटेबल ट्रस्ट के संस्थापक हैं।

योग दर्शन

जहाँ हमारा प्राचीन समाज, आश्रम व वर्ण-व्यवस्था के सुंदर तालमेल से युक्त सुगठित व सोद्देश्य जीवन जी रहा था, वहीं आज हम सभी ने 'विकासवाद' के नाम पर शरीर को दिन-रात धन-उपार्जन करने वाली मशीन बना डाला है। ग्लोबल वार्मिंग, प्रदूषण, विषैली जलवायु, असंतुलित खान-पान, समय-सारणी रहित जीवन-चर्या, अव्यवस्थित कार्य-पद्धति, और आधुनिक जीवन-शैली ने आज लगभग सम्पूर्ण विश्व को "तथाकथित-विकास" के नाम पर, सम्भवतः विनाश की तीव्र ढलान पर स्थापित कर दिया है। लेकिन कहा जाता है "यत्र अपायः भवति तत्र उपायः अपिभवति" अर्थात् हर समस्या का समाधान होता है और समाधान आज सम्पूर्ण विश्व जानता है वह है "योग"।

लेकिन वर्तमान हालातों, परिस्थितियों-पीड़ाओं तथा जीवन-शैली को मध्यनजर रखते हुए यह भी अनिवार्य है कि योग की साधना पूर्ण सावधानी, तकनीक और शास्त्रीय पद्धति से की जाए। और इसके लिए एक साधक, प्रशिक्षित व विशेषज्ञ "योग-गुरु" अत्यंत अपेक्षित है। क्योंकि आज विश्व स्वयं के द्वारा उत्पन्न ऐसी विनाशकारी समस्याओं के जाल में इतना फँस चुका है कि उसे हर 'सम्भव-शीघ्र -समाधान' की ललक रहती है। इस शीघ्रता में वह सावधानी, जानकारी, तकनीक व शास्त्रगत-पहलुओं पर ध्यान केन्द्रित नहीं कर पाता। अतः इन सभी समस्याओं का समाधान एक 'योग-गुरु' सरलतम् तरीके से दे सकता है। तो आइए! सर्वप्रथम जानें कि 'योग-गुरु' कौन हो सकता है? योग का सधा हुआ साधक अथवा गुरु इस प्रकार परिभाषित किया जा सकता है:- "प्राणियों को किंचित् भी बाधा या कष्ट पहुँचाए बिना अपनी शारीरिक, मानसिक और आत्मिक उन्नति करने वाला एवं अनवरत् सावधानी तथा चेतनापूर्वक कर्मशील साधक ही सच्चा 'योग-गुरु' है या सधा हुआ योग साधक है।" ऐसा सार्थक व्यक्ति ही आज भी समाज के हर आयु वर्ग, कार्य वर्ग या आधुनिक-जगत् के भी हर क्षेत्र को पूर्णरुपेण सही मार्गदर्शन दे सकता है। इसकी अत्यंत आवश्यकता भी है। योग दुःख-निवारक तथा रोग प्रतिरोधक है, इसलिए भी यह जरूरी है कि चाहे विद्यार्थी हो या सामाजिक, वह रोग या कष्ट-निवारण हेतु योग सीखता है या कोई विशेष उपलब्धि चाहता है या कोई विशेष उपलब्धि चाहता है या कोई सकारात्मक-प्रतिस्पर्धा का अनुगामी है, वह श्रेष्ठ योगी के सानिध्य में ही साधना करे। आइए जानते हैं कि एक 'योग-विशेषज्ञ', हर क्षेत्र में अपनी अनिवार्यता को कैसे सिद्ध कर सकता है। सर्वप्रथम पदार्पण करते हैं - कच्ची मिट्टी कहे जाने वाले हमारे भविष्य के कर्णधार, निर्मल बालकों के संसार में। जी हाँ! यह वह विशाल आयु वर्ग है जिन्हें हम योग की भाषा में 'ब्रह्मचारी' कह सकते हैं। लेकिन युग बदला, शैली बदली और विद्यार्थी तथा उसके जीवन का परिवेश भी बदल गया। यह आयु वर्ग अत्यंत गतिशील, नवीन ऊर्जा से युक्त, विकास की ओर अग्रसर, उद्वेग, चिंता व चिंतन रहित तथा उन्नमुक्त जीवन-चर्या वाला वर्ग है। लेकिन नियमाचार, मर्यादा और अनुभवों के अभाव में हमारे बालक सर्वाधिक व तीव्र गति से उच्छृंखलता, भटकाव तथा दिशाहीनता की ओर चले जाते हैं।

भारतीय जनजीवन: सभ्यता और संस्कृति के आईने में

रामेश्वर काम्बोज 'हिमांशु'

प्राय: सभ्यता और संस्कृतियों को कुछ लोग एक ही मान बैठते हैं। स्थूल रूप से विचार करें तो सभ्य वह है जो सभा में बैठने लायक हो, उसके तौर -तरीके जानता हो। यह तौर-तरीके विभिन्न समाज के अलग-अलग हो सकते हैं; उनका सभ्यता का पैमाना अलग हो सकता है। देशकाल की सीमाएँ सिकुड़ चुकी हैं। सभी देशों की परस्पर निर्भरता बढ़ी है। इसके कुछ अच्छे-बुरे परिणाम हमारे सामने हैं। संस्कृति का आधार हमारे संस्कार हैं, जिनको बनने में एक लम्बा समय लगा है, परिवर्तन और क्षरण में भी समय लगेगा। हम बाह्य रूप से चाहे जितने आधुनिक बन जाएँ, अपने संस्कारों की उपेक्षा नहीं कर सकते। वैदिक संस्कृति का विस्तार और प्रसार विभिन्न संस्कृतियों को प्रभावित करते हुए आगे बढ़ा है। कोई सभ्यता उसे न तो बदल पाई, न कुचल पाई। समान विचारों की संस्कृति ने उसे समृद्ध ज़रूर किया। भाषिक परम्परा ने इसको और प्रवाहमय, स्थायी, आत्मिक और जीवन-जगत् से जोड़ा। प्रकृति हमारे सामने थी, हमारी आन्तरिक संवेदना से जुड़ी थी। उसका मोहक रूप जितना आकर्षण पैदा करता रहा; भीषण रूप उतना ही भयाक्रान्त भी करता रहा। भोर और साँझ, सूरज, चाँद, तारे, हवा, बादल, समुद्र, धरती सब हमारे जीवन में थे। हमको कुछ न कुछ देते हुए, दूसरों को कुछ देने के लिए प्रेरित करते हुए। सब पूज्य। किसी पाखण्ड की तरह नहीं, हमारे अपनों की तरह, अपनत्व का अहसास दिलाते हुए, जीवन के अविभाज्य अंग की तरह। सुबह बिस्तर से उठें ,धरती पर पैर रखें; उस धरती पर जो माँ की तरह पालन करती है; तो मुख से क्षमा -भाव उच्चरित होता -

समुद्रवसने देवि ! पर्वतस्तनमण्डिते
विष्णुपत्नि नमस्तुभ्यं पादस्पर्श क्षमस्व मे।

[समुद्र रूपी वस्त्रों को धारण करने वाली, पर्वत रूपी स्तनों से सुशोभित, हे भगवान् विष्णु की पत्नी वसुधा, मैं तुम्हें नमस्कार करता हूँ। तुम मेरे पदस्पर्श को क्षमा करो!]

यह वह कृतज्ञता का भाव है, जो सन्तान का माता के प्रति होता है। यह संस्कार है, रोम-रोम में रमा हुआ। यह सभ्यता का बाहरी आवरण या दिखावा नहीं है। यह वह भाव है जो हमें विश्व की अन्य संस्कृतियों से अलग और विशिष्ट बनाता है। किसी सभ्यता की टाई या सूट पहनने से भी यह नहीं बदला।

भारत नदियों का देश रहा है। हमारे तीर्थ-स्थल किसी न किसी नदी से जुड़े रहे नदी भी तैरकर पार की जाती है, शायद इसीलिए तीर्थ कहा गया है। भारत के एक कोने का व्यक्ति कहीं हो, स्नान करते समय खुद को सारी नदियों के अपनत्व से जोड़ लेता है, जब वह कहीं भी स्नान करते हुए यह मन्त्र पढ़ता है-

गंगे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति।
नर्मदे, सिन्धु, कावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु ।।

[हे गंगा, यमुना, गोदावरी, सरस्वती, नर्मदा, सिन्धु और कावेरी, आप सभी इस जल में उपस्थित हों।]

इस अहसास की आत्मीयता संस्कार से जुड़ी है। इस जैसा औदात्य संसार में दुर्लभ ही है। नदियों में निरन्तर कचरा बहाकर किया जा रहा जल-प्रदूषण

भारतीय जनजीवन: सभ्यता और संस्कृति के आईने में...

उसी आत्मीयता के संस्कार का विलोपन है। सभ्यता की दौड़ कभी इस अहित को न देख पाती है और नसमझ पाती है।

रात्रि को शयन करने से पूर्व भी शुभ संकल्प की बात करना। मनोवैज्ञानिक रूप से सकारात्मक चिन्तन को बढ़ावा देना है साथ ही साथ तनाव रहित निद्रा का आंचल थामना भी, जो आज के तनाव भरे माहौल में असम्भव होता जा रहा है। यजुर्वेद का यह मन्त्र हमें जीवन-दृष्टि ही नहीं वरन् शुभ-चिन्तन के उस संकल्प का अभ्यास भी कराता है, जो सुखद जीवन के लिए आवश्यक है-

यज्जाग्रतो दूरमुदैति दैवं, तदु सुप्तस्य तथैवैति।
दूरंगमं ज्योतिषां ज्योतिरेकं, तन्मे मन:
शिवसंकल्पमस्तु।

[जो जाग्रत अवस्था में अधिक दूर तक जाता है, जो आत्मदृष्टा है, सुषुप्ति में भी लौट आता है; दूर जाने वाला वह जो सब सभी बाह्य इन्द्रियों का प्रकाशक है, वह मेरा मन शुभ संकल्पवाला हो।]

सबका कल्याण सोचना और करना हमारे संस्कारों का और चिन्तन का विशिष्ट हिस्सा है। हमारा कोई यज्ञ-अनुष्ठान मेरे लिए नहीं; अत: हर प्रार्थना और यज्ञ में कहा गया है-इदन्नमम (इदम् न मम) अर्थात् 'यह मेरे लिए नहीं है' इसका सीधा-सा तात्पर्य है-'सबके लिए' है। मन्दिर में जाकर केवल अपने लिए माँगना, केवल अपने कल्याण की कामना करना भोगवादी और स्वार्थपरता की निशानी हो सकती है, भारतीयता की नहीं। वेद के इन दो मन्त्रों को देखिए-

मधु वाता ऋतायते ,मधु क्षरन्ति सिन्धव: ।
माध्वीर्न: सन्त्वोषधी: ।।
मधुनक्तमुतोषसो मधुमत्यापार्थिवं रज: ।
मधु: द्यौरस्तु न: पिता ।।

यहाँ मैं के स्थान पर न (हमारे लिए) का प्रयोग किया गया है और कामना भी देखिए क्या की गई है? इस कामना के लिए आज विश्व का हर व्यक्ति आतुर है, चिन्तित है, लालायित है–'हमारे लिए वायु मन्द सुगन्ध हो, जैसे सिन्धु मधुरता की वर्षा करते हैं, वैसे ही हमारे लिए सभी औषधियाँ माधुर्य से परिपूर्ण हों।

हमारे लिए रात्रि मधुमती हो और उष:काल भी वैसे ही मधुर हो। पृथ्वी के रजकण भी मधुरता से ओतप्रोत हों, पालन करने वाली सूर्य की आभा वैसे ही सबके लिए मधुर हो।

आज के भयानक प्रदूषण के दौर में यह प्रार्थना कौन नहीं करेगा। यह था सांस्कृतिक वैभव, जिसे प्रकृति के शोषण की हमारी हवस निरन्तर विनाश की ओर धकेल रही है। आज हम सजग होकर इस प्रार्थना पर ध्यान दें तो विश्व सुखी हो जाए।

अब बात करते हैं अपने घर समाज की, जो हमारी संस्कृति का जीता-जागता आईना है। नारी के लिए मनु ने एक सूत्र में शाश्वत सत्य कहा था: 'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता' - जहाँ नारी का सम्मान होता है, वहाँ देवता निवास करते हैं। जहाँ नारी का सम्मान नहीं होता वहाँ की गति इतिहास - पुराण उठाकर देख लीजिए। चाहे सीता का अपमान हुआ हो चाहे दौपदी का या किसी और नारी का, वह विनाश का कारण बना। आज की कुत्सित सभ्यता आज़ादी के नाम पर नारी का जितना शोषण कर रही है, उतना किसी युग में नहीं हुआ होगा। आज ऐसे अति शिक्षित साथ ही घोर अवैज्ञानिक लोग भी यहाँ हैं, जो पुत्री होने का ठीकरा नारी पर ही फोड़ते हैं और यही नहीं, दूसरी बेटी होने पर इतना पगला जाते हैं कि उन्हें कुएँ में धकेलने के आपराधिक प्रयास से भी बाज नहीं आते। ये किसी गरीब या पिछड़े वर्ग के लोग नहीं, वरन् उच्च वर्ण

भारतीय जनजीवन: सभ्यता और संस्कृति के आईने में...

को कलंकित करने वाले लोग भी इसमें शामिल हैं। वेद का मन्त्र हमें सिखाता है-

मा भ्राता भ्रातरं द्विक्षन्मा स्वसारमुत स्वसा ।
सम्यञ्च सव्रता भूत्वा वाचं वदतु भद्रया ।।

भाई-भाई से द्वेष न करे, और न बहिन बहिन से। हम सब समान कर्म वाले होकर कल्याणकारी वाणी ही बोलें।

यह यहीं तक सीमित नहीं था। इससे भी आगे यह कामना की गई थी,"पुत्र पिता के अनुकूल कार्य करने वाला हो, माता के प्रति भी समान मन वाला हो। पत्नी पति के लिए सुखकर एवं मधुर वाणी ही बोले।" इसका सीधा-सा अर्थ है कि जब पत्नी मधुर वाणी बोल रही है तो पति कटु वाणी क्यों बोलेगा?

अनुव्रत: पितु: पुत्रो मात्रा भवतु सम्मना:।
जाया पत्ये मधुमतीं वाचं वदतु शान्तिवाम्।।

भारतीय संस्कृति में अनुचित एवं भेदभावपूर्ण मार्ग पर चलने की बात ही नहीं की गई है। यहाँ तो कहा गया है-

स्वस्ति पन्थामनुचरेम सूर्य्याचन्द्रमसाविव
पुनर्ददताघ्नता जानता संगमेमहि।

अर्थात् हम सूर्य और चन्द्रमा के समान कल्याणकारी मार्ग पर ही चलें। हम दान करने वाले (समाज को कुछ न कुछ अच्छा देने वाले) अहिंसक स्वभाव वाले विद्वानों की ही संगति करें। धनबल, जनबल और बाहुबल का दुरुपयोग करके संस्कृति को नष्ट करने वालों की संगति का सुझाव कभी नहीं दिया गया।

जब व्यक्ति की बुद्धि विकृत होती है, तब सभी विकार खुद चलकर आ जाते हैं। हमारी संस्कृति में जिस बुद्धि की कामना की गई है, वह है मेधा-' या धारणावती धी: सा मेधा' धारण करने योग्य जो हो वह बुद्धि ही मेधा कहलाती है। उसी मेधा को प्राप्त करने की कामना की है। घपले-घोटले करने वाली बुद्धि 'मेधा' नहीं होती। मेधा की कामना इस रूप में की गई है-

यां मेधां देवगणा: पितरश्चोपासते।
तया मामद्य मेधयाग्ने मेधाविनं कुरु स्वाहा।।

प्रकृति का सन्तुलन बिगड़ने पर जब भूकम्प और सुनामी आते हैं तो पूरा विश्व सिहर उठता है। भयंकर तूफान कहर बरपा देते हैं, बादल विनाशलीला मचा देते हैं, बिजली बहुतों का जीवन लील लेती है और चिलचिलाती धूप सब कुछ जला डालती है। वेद-मन्त्र में अनुस्यूत यह मधुर कल्याण कामना देखिए-

शन्नो वात: पवतां शन्नस्तपतु सूर्य्य:
शन्न कनिक्रदद्देव पर्जन्यो अभिवर्षतु ॥

हमारे लिए कल्याणकारी पवन संचरण करें, सूर्य हमें यथाकाम्य ताप प्रदान करे, शब्दायमान् विद्युतरूप अग्नि हमारे लिए कल्याणकारी हो, बादल हमारे लिए सुखद वर्षा करने वाले हों ।

यजुर्वेद में एक कामना सौ साल जीने की की है, वह भी कर्म में निमग्न होते हुए-

कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतंसमा:

यह कर्म ऐसा नहीं की जमकर लूटो- खाओ, बाकी दुनिया को भूख से मरने दो। वेद में तो कहा गया है कि सौ हाथों से कमाओ तथा हज़ार हाथों से वितरित करो। आज की आपाधापी के युग में भौतिकता इस प्रकार हावी हो गई है कि अरबों का घोटाला करने के लिए जुगाड़ करने से नहीं चूकते, भले ही एक बार बैठकर उठने की सामर्थ्य न हो।

रामचरित मानस में भरत जिस कर्म में विश्वास रखते हैं, आज अखण्ड पाठ करके भी हम उससे दूर भागते हैं-

सुग्रीवहिं प्रथम पहिराए।
भरत वसन निज हाथ बनाए।

एक हम हैं जो आज हाथ के काम को हीन समझकर, कर्मरत लोगों को भी हेय समझने की भूल

भारतीय जनजीवन: सभ्यता और संस्कृति के आईने में...

कर रहे हैं। राम जब गद्दी पर बैठकर कहते हैं कि यदि मैं कुछ भी नीति विरुद्ध कहूँ, तो निर्भय होकर मुझे उस काम से वर्जित कर दें-

जो अनीति कछु भाखौं भाई।
तो मोहि बरजेउ भय बिसराइ।।

कुर्सी के मद में अन्धे हुए सत्ताधारी क्या आज इतना साहस जुटा सकेंगे? कदापि नहीं।

आज यदि हम अपने सांस्कृतिक मूल्यों को बचाना चाहते हैं तो किसी अवतार की प्रतीक्षा न करें। खुद कुछ करने की सोचें। छल छद्म वाले कवच से बाहर निकलकर कुछ सार्थक करें। केवल शास्त्रों की दुहाई देने से कुछ होने वाला नहीं; हमें सन्मार्ग का अनुसरण करना ही पड़ेगा।

Brilliant Tutorials

Learn → Practice → Achieve

Personalized attention to every student

We Offer	**SAT/ACT/PSAT, Math, Science , Biology, Chemistry, Physics, Language Arts, Social Study, Spanish, Hindi Music – Guitar & much more. (For Grade K to 12)**
Location	**10, Carriage way, Robbinsville, NJ 08691** **609 208 1219(Dr. Manishi) / 609 208 9336 (Sayali)** **learnbt@gmail.com**
Enrolling Now	♦ Customized curriculum ♦ Focus on students learning ability, skills and understanding ♦ Help in preparing for school quiz, homework, test and NJ ASK ♦ Periodic assessment and monthly report ♦ Improving school grades on every level ♦ Safe, fun, interesting, interactive environment ♦ Parent – Teacher email communication ♦ Team of highly qualified, experienced & enthusiastic tutors

भारतीय संस्कृति

मेरी कोनराड, हिन्दी यू.एस.ए. की एक समर्पित कार्यकर्ता हैं। एडिसन हिन्दी पाठशाला की वयस्क-कक्षा में हिन्दी सीखकर, संस्था के कार्यों से प्रभावित होकर आप एडिसन हिंदी पाठशाला की एक सक्रिय कार्यकर्ता बन गयीं। कर्मभूमि के प्रत्येक अंक में मेरी ने लेख लिखा है। एडिसन हिन्दी पाठशाला में एक स्वयंसेविका के रूप में अपना कार्य अत्यंत दक्षता से करती हैं। सभी भारतीय त्योहारों को बहुत उत्साह एवं लगन से मनाती हैं तथा भारतीय पारंपरिक पोशाकें पहनने का इन्हें बहुत शौक है। हिन्दी यू.एस.ए. को मेरी पर गर्व है तथा नि:स्वार्थ सेवाओं के लिए संस्था इनकी आभारी है। प्रस्तुत लेख में मेरी ने भारतीय संस्कृति के बारे में अपने विचार व्यक्त किये हैं। (अनुवादक – राज मित्तल)

हिन्दी महोत्सव की दसवीं वर्षगाँठ पर हार्दिक शुभकामनायें। हम सभी अत्यंत उल्लास से इसे एक पर्व के रूप में मई २१-२२, २०११ को मना रहे हैं। हिन्दी यू.एस.ए. के समस्त विद्यार्थी, अभिभावक, अध्यापक एवं स्वयंसेवकों को विशेष धन्यवाद जिनके श्रम, निष्ठा एवं समर्पण से यह संस्था आज अपनी उत्कृष्टता पर पहुँच पाई है।

इस विशेष अवसर की स्मृतियों को चिरस्मरणीय रखने के प्रयास में, मैंने एक समूह-गान, "जय गणेश", एडिसन हिन्दी पाठशाला के विशिष्ठा स्तर की एक छात्रा, पर्णिका सेल्ली के साथ गाने का निश्चय किया है। पर्णिका के पिता, श्री चंदर सेल्ली जो कि एडिसन हिन्दी पाठशाला के अध्यापक भी हैं, इस गीत को सुचारू रूप से प्रस्तुत करने हेतु निर्देशन देने के साथ ही हमें इसका नियमित अभ्यास भी करवा रहे हैं। हमें आशा है कि इस सुन्दर गीत को हम मंच पर सुचारू रूप से प्रस्तुत करने में सफल होंगे।

हाल ही में मैंने विख्यात आध्यात्मिक लेखक श्री स्टीफेन नेप्प (Stephen Knapp) द्वारा वैदिक संस्कृति विषय पर लिखित उनकी बहुचर्चित पुस्तक "The Power of the Dharma" पढ़ी। यह मुख्यतः हिंदुत्व पर केन्द्रित है, परन्तु इसमें भारत के अन्य धर्मों की चर्चा के साथ-साथ ही यह भी बतलाया गया है कि कैसे इन सभी का मूल वैदिक संस्कृति से सम्बद्ध है। मुझे यह सभी जानकारी इस पुस्तक द्वारा मिलने पर अत्यधिक प्रसन्नता हुई।

सभी वैदिक ग्रन्थ संस्कृत भाषा में लिखे गए हैं। संस्कृत भाषा, हिन्दी की ही जननी है, क्योकि हिन्दी का प्रादुर्भाव संस्कृत से ही हुआ है। संस्कृत विश्व की सबसे प्राचीन एवं सुव्यवस्थित भाषा है। आयुर्वेद, स्वस्थ शरीर, मन एवं शुद्ध मनोवृत्ति की प्राप्ति हेतु, समग्र औषधियों का वैदिक पद्धति से कैसे निर्माण किया जाता है इसका पूर्ण ज्ञान हमें प्रदान करता है। आयुर्शास्त्र के सन्दर्भ ऋग्वेद में प्राप्त होते हैं। ऋग्वेद, भारत के प्राचीनतम ग्रंथों में

भारतीय संस्कृति

से हैं जिनकी रचना स्वयं ब्रह्मा जी ने की थी, ऐसी जग मान्यता है। आयुर्वेदिक औषधियों के निर्माण के मूल ७००० वर्षों से भी अधिक पुराने हैं। औषधि विज्ञान की आठ मुख्य रोग विषयक विशेषताएँ, मय शल्य तंत्र, (The eight major clinical specialties of medicine, including surgery) दर्शाता है कि प्राचीन भारत में आयुर्वेद कितनी विकसित थी।

भारत की जनता में 'कर्म के नियम' की एक चिर प्रचलित आस्था है जो कि युगों से चली आ रही है। इसके अनुसार, विभिन्न धर्मों में व्याप्त मान्यताओं के आधार पर, मनुष्य का मृत्युपरांत पुनर्जन्म होता है, इसके अनुसार मनुष्य द्वारा इस जन्म में किये गए अच्छे-बुरे कार्य ही उसके अगले जन्म में उसके जीवन के सुख-दुख का निर्धारण करते हैं।

भारत सांस्कृतिक दृष्टि से विज्ञान, गणित, औषधि के साथ ही कला, नृत्य एवं पाक-विज्ञान में अति सम्पन्न एवं विकसित देश है। यह संस्कृति, संस्कारों एवं परम्पराओं का अथाह सागर है। इन सभी का ज्ञान अर्जित करने हेतु मैं सन् २०१४ में भारत यात्रा करुँगी तथा इन सभी का प्रत्यक्ष आनंद उठाऊँगी।

सुब्रमनियन परिवार (ऑरेलिया, रिया, क्रिस्टी, अनंत) की ओर से हिन्दी यू.एस.ए. को दसवें महोत्सव के उपलक्ष पर कोटिश शुभकमनाएँ

महाभारत प्रश्नावली–२

सुधा अग्रवाल

आपने पिछले अंक में प्रश्नावली के माध्यम से महाभारत में कुंती एवं गान्धारी के विवाह तक की कथा की जानकारी प्राप्त की। हम सभी महाभारत को बहुत गहराई से नहीं जानते हैं। मेरी इच्छा है कि मैं प्रश्नावली द्वारा महाभारत की कथा सरल अध्ययन में लिखूँ एवं हम सभी को महाभारत के विषय में जानकारी हो।

प्रश्न १: राजा पाण्डु को किस ऋषि ने श्राप दिया था और क्यों दिया था?

(क) - किन्दप ऋषि ने श्राप दिया था क्योंकि वह अपनी पत्नी के साथ मृग के रूप में आनन्दित थे। राजा पाण्डु उन्हें पहचान न सके और मृग समझ कर बाण चला दिया। जिससे ऋषि एवं उनकी पत्नी घायल हो गए और श्राप दिया कि जबभी पाण्डु अपनी पत्नी को स्पर्श करेंगे तो उनकी मृत्यु हो जाएगी।

(ख) - द्रोणाचार्य ने श्राप किया था क्योंकि वह बाणों का दुरुपयोग कर रहे थे।

(ग) - कृपाचार्य ने श्राप दिया था क्योंकि वह ऋषि की स्त्री का अनादर कर रहे थे।

प्रश्न २: राजा पाण्डु ने सन्यास क्यों लिया था?

(क) - भीष्म पितामह चाहते थे कि राजा पाण्डव सन्यास लें।

(ख) - किन्दप ऋषि के श्राप से दुखी होकर सन्यास लिया था क्योंकि वह अपनी पत्नी कुंती एवं माधवी को स्पर्श करना नहीं चाहते थे।

(ग) - पाण्डव की दोनों पत्नियाँ चाहती थीं कि राजा पाण्डु सन्यास लें।

प्रश्न ३: राजा पाण्डु को श्राप था कि वे पत्नी को स्पर्श नहीं करेंगे। कुंती एवं माद्री ने किस प्रकार बच्चों को जन्म दिया था?

(क) - दुर्वासा ऋषि ने कुंती को आशीर्वाद एवं मंत्र दिया था कि तुम जिस भी देवता का आवाहन करोगी वह आयेंगे और तुम्हारी इच्छानुसार फल देंगे।

(ख) - कुंती को जन्म से शक्ति प्राप्त थी कि जब चाहे किसी भी देवता से वरदान प्राप्त कर सकती है।

महाभारत प्रश्नावली–२

(ग) - कुंती के पिता ने कुंती को वरदान दिया था।

प्रश्न ४: कुंती को पहला पुत्र किस देवता के आवाहन से प्राप्त हुआ था?

(क) - धर्मराज का आवाहन किया पुत्र "युधिष्ठिर" को जन्म दिया।

(ख) - चन्द्रमा देवता का आवाहन - पुत्र भीम का जन्म हुआ।

(ग) - इन्द्र देवता का आवाहन - पुत्र नकुल का जन्म हुआ।

प्रश्न ५: कुंती के दूसरे पुत्र का जन्म किस देवता के आवाहन से हुआ था?

(क) - अग्नि देवता का आवाहन - पुत्र सहदेव का जन्म हुआ था।

(ख) - वायु देवता का आवाहन किया, भीमसेन का जन्म हुआ।

(ग) - मेघ देवता के आवाहन से पुत्र सहदेव का जन्म हुआ।

प्रश्न ६: कुंती के तीसरे पुत्र का नाम क्या था, और किस देवता का आवाहन किया था?

(क) - मंगल देवता के आवाहन से पुत्र वायु का जन्म हुआ था।

(ख) - युद्ध देवता के आवाहन से पुत्र दुशासन का जन्म हुआ था।

(ग) - देवराज इन्द्र देवता का आवाहन किया था, पुत्र अर्जुन का जन्म हुआ।

प्रश्न ७: कुंती को विवाह से पहले एक पुत्र की प्राप्ति हुई थी उसका नाम क्या था?

(क) - सूर्य देवता के आवाहन तथा आशीर्वाद से पुत्र कर्ण की प्राप्ति हुई।

(ख) - शनि देवता के आवाहन से विधुर की प्राप्ति हुई थी।

(ग) - विष्णु देवता के आवाहन से सोम नामक पुत्र की प्राप्ति हुई।

प्रश्न ८: कर्ण अपने जन्म के समय क्या पहने हुए थे व उनका नाम कर्ण क्यों पड़ा?

(क) - कर्ण का जन्म कवच एवं कुण्डल पहने हुए हुआ था इसीलिए कर्ण नाम से पुकारे गए।

महाभारत प्रश्नावली–२

(ख) - जन्म से बोलने लगे थे इसीलिए कर्ण नाम पड़ा।

(ग) - जन्म से चलने लगे थे इसीलिए कर्ण नाम पड़ा।

प्रश्न ९: पाण्डु की दूसरी पत्नी "माद्री" ने किस देवता का आवाहन किया जिससे माद्री को दो बेटों की प्राप्ति हुई?

(क) - विरांग कुमारों का आवाहन किया और दो पुत्र नल और नील हुए।

(ख) - अश्विनी कुमारों का आवाहन किया, उनसे नकुल एवं सहदेव की प्राप्ति हुई।

(ग) - चिरांगन कुमारों का आवाहन किया जिनसे पुत्र सहदेव हुए।

प्रश्न १०: दुर्योधन कितने वर्षों तक अपनी माता गान्धारी के गर्भ में रहा?

(क) - एक वर्ष

(ख) - दो वर्ष

(ग) - ९ महीने

प्रश्न ११: कुंती के कौन से बेटे व गान्धारी के कौन से बेटे का जन्म एक ही दिन एवं एक ही समय पर हुआ?

(क) - भीम सेन एवं दुर्योधन

(ख) - अर्जुन एवं दुशासन

(ग) - दुर्योधन एवं नकुल

प्रश्न १२: गान्धारी के दूसरे पुत्र का क्या नाम था?

(क) - जन्माधू

(ख) - दुशासन

(ग) - भीमसेन

प्रश्न १३: पाण्डु की मृत्यु के बाद कुंती एवं माद्री अपने बच्चों को लेकर कहाँ गई थीं?

महाभारत प्रश्नावली–२

(क) - हस्तिनापुर

(ख) - गंगानगर

(ग) - मथुरा

प्रश्न १४: पाण्डव एवं कौरव को अस्त्र-शस्त्र विद्या किसने सिखायी थी?

(क) - द्रोणाचार्य

(ख) - एकलव्य

(ग) - कृपाचार्य

प्रश्न १५: द्रोणाचार्य किसके पुत्र थे, और किस स्थान पर उनका जन्म हुआ था?

(क) - कृपाचार्य के पुत्र - जन्म मथुरा में हुआ था।

(ख) - महर्षि भरद्वाज के पुत्र - जन्म का स्थान गंगाद्वार

(ग) - शांतनु के पुत्र - जन्म स्थान हस्तिनापुर

प्रश्न १६: द्रोणाचार्य ने किससे अस्त्र-शस्त्र की शिक्षा प्राप्ति की थी?

(क) - अग्निवेश्य जी से शिक्षा प्राप्ति की थी।

(ख) - अग्निदेवता से शिक्षा प्राप्ति की थी।

(ग) - विश्वरूपा से शिक्षा प्राप्ति की थी।

प्रश्न १७: द्रोणाचार्या की पत्नी का नाम क्या था?

(क) - अम्बिका

(ख) - कृपी

(ग) - गान्धारी

प्रश्न १८: द्रोणाचार्य के बेटे का क्या नाम था?

महाभारत प्रश्नावली–२

(क) - अश्वत्थामा

(ख) - दुशासन

(ग) - अर्जुन

प्रश्न १९: द्रोणाचार्य को अस्त्र-शस्त्र किस ऋषि मुनि ने दिये थे?

(क) - महेन्द्रांचल में जाकर परशुराम जी से अस्त्रों-शस्त्रों को प्राप्त किया।

(ख) - अगस्त मुनि से अस्त्र-शस्त्र प्राप्त किए।

(ग) - विकल्प मुनि से अस्त्र-शस्त्र प्राप्त किए।

प्रश्न २०: द्रोणाचार्य जी ने अपने प्रिय मित्र द्रुपद के पास जाकर मित्रता का हाथ बढ़ाया, परंतु द्रुपद ने मित्रता करने से मना क्यों किया?

(क) - द्रोणाचार्य एक गरीब ब्राह्मण थे, वह क्षत्रिय नहीं थे।

(ख) - द्रोणाचार्य एक राजा नहीं थे।

(ग) - द्रोणाचार्य शक्तिशाली नहीं थे।

प्रश्न २१: कृपाचार्य किसके पुत्र थे?

(क) - गौतम ऋषि के पौत्र व ऋषि शरद्वान के पुत्र थे।

(ख) - भरद्वाज के पुत्र थे।

(ग) - विधुर के पुत्र थे।

प्रश्न २२: कृपाचार्य की एक बहन थी, उनका क्या नाम था?

(क) - कृपी

(ख) - अम्बिका

(ग) - कुंती

महाभारत प्रश्नावली–२

प्रश्न २३: द्रोणाचार्य को कौरवों एवं पाण्डवों में कौन सबसे प्रिय था?

(क) - दुर्योधन

(ख) - अर्जुन

(ग) - भीमसेन

प्रश्न २४: एकलव्य किसके पुत्र थे?

(क) - निषादपति हिरण्यधनु के पुत्र थे।

(ख) - निषाद राज कौशिक के पुत्र थे।

(ग) - कृपाचार्य के पुत्र थे।

प्रश्न २५: एकलव्य को धनुर्विद्या सिखाने से द्रोणाचार्य जी ने क्यों मना कर दिया?

(क) - एकलव्य क्षत्रिय नहीं थे, वे निषाद जाति के थे, इसीलिए धनुर्विद्या सिखाने से द्रोणाचार्य जी ने मना कर दिया?

(ख) - एकलव्य के पिता से द्रोणाचार्य जी की शत्रुता थी।

(ग) - एकलव्य को कौरव, पाण्डव पसन्द नहीं करते थे।

Rosenthal Sambonet USA, Ltd.

WHOLESALERS FOR FLATWARE, HOLLOWWARE, PORCELAIN, CHINAWARE AND CRYSTAL WARE

ASK FOR ALL RESTAURANT SUPPLIES

Phone: 201-804-8000 Fax: 201-804-0765

Visit us at : www.sambonet.it Email: info@sambonet.com

संयुक्त परिवार - खोता हुआ अस्तित्व

माणक काबरा

माणक काबरा जी पाँच वर्षों से एडिसन पाठशाला के संचालक हैं। माणक जी हिंदी यू.एस.ए. के सभी कार्यक्रमों में उपस्थित होकर सक्रिय रूप से विशेष योगदान देते हैं। इन्हें हिंदी साहित्य एवम् कविताओं में रुचि है, और ये रामचरित्र मानस का नियमित रूप से पठन और अध्ययन करते रहते हैं। माणक जी स्वभाव से अत्यधिक शांत एवम् गंभीर हैं, और एक अच्छे कार्यकर्ता के सभी गुण इनमें देखे जा सकते हैं।

भारतीय संस्कृति में संयुक्त परिवार में रहना बहुत प्रचलित है। आज भी भारत के कई भागों में लोग संयुक्त परिवार में रहते हैं। पाश्चात्य देश इस प्रथा को देख कर और इसके विषय में सुनकर अचंभित हुए बिना नहीं रहते। लेकिन यह भी सत्य है कि पाश्चात्य विचारधारा और असहिष्णुता ने इसे बिखरा दिया है, और संयुक्त परिवार का प्रचलन अपना अस्तित्व खोता जा रहा है। पहले जहाँ लोग "हमारा परिवार" की बात करते थे, वहीं आज के समय में "मेरा परिवार" की बात होती है।

संयुक्त परिवार में रहने का एक विशेष ही आनंद है। जब तक परिवार संयुक्त रहता है, परिवार का प्रत्येक सदस्य एक अनुशासन में बंधा रहता है। परिवार के किसी भी सदस्य को अप्रिय काम करने से पहले बहुत सोचना समझना पड़ता है, क्योंकि उस पर परिवार की मर्यादा का अंकुश रहता है। यह अंकुश हटने के बाद वह बिना लगाम के घोड़े की भाँति हो जाता है। संयुक्त परिवार में रहने से बड़ों का आदर करना, परिजनों को सम्मान देना इत्यादि सिखाना नहीं पड़ता, यह परिवार के दूसरे सदस्यों को देख अपने आप ही आ जाता है।

संभवतः आज की तेजी से भागती हुई दैनिक दिनचर्या भी एक कारण है संयुक्त परिवार के खोते हुए अस्तित्व का। संयुक्त परिवार नियम और अनुशासन पर चल सकता है जिसमें एक मुखिया का होना आवश्यक है। मुखिया वो जो सभी को एक सूत्र में बाँधकर रख सके और बदले में किसी प्रकार की अपेक्षा किसी से भी ना रखे। लेकिन आज छोटा भाई बड़े भाई से राम बनने की अपेक्षा रखता है, किन्तु स्वयं भरत बनने को तैयार नहीं। इसी प्रकार बड़ा भाई छोटे भाई से अपेक्षा करता है कि वह भरत बने लेकिन स्वयं राम बनने को तैयार नहीं। बहू चाहती है कि सास उसे बेटी की भाँति स्नेह दे, लेकिन स्वयं सास को माँ जैसा आदर नहीं देती। यह परस्पर विरोधाभास ही समस्त पारिवारिक - कलह का मूल कारण होता है। स्वार्थ भावना का त्याग कर एक दूसरे की भावनाओं का आदर करने मात्र से ही बहुत से संयुक्त परिवार टूटने से बच सकते हैं। संयुक्त परिवार की नींव, त्याग व समर्पण से ही मजबूत होती है। इसमें भी सबसे अहम् भूमिका परिवार प्रधान की होती है।

आज जिस प्रकार दुनिया छोटी होती जा रही है, उसी प्रकार संयुक्त परिवार का अस्तित्व लुप्त होता जा रहा है। आज सभी को स्वतंत्रता चाहिए, कोई किसी का हस्तक्षेप नहीं चाहता। लोगों को लगता है कि संयुक्त परिवार में रहने से उनकी

संयुक्त परिवार...

उन्नति में बाधा आएगी, लेकिन बहुत से अनुसंधानों का दावा है कि भारतीयों का आज दुनिया में समृद्धशाली होने के पीछे उनका संयुक्त परिवार से जुड़ा होना है।

संयुक्त परिवार का होना भारतीय संस्कृति का एक बहुत ही मजबूत स्तम्भ है। हमें इस स्तम्भ को कमजोर नहीं होने देना चाहिए। हम यदि पीछे मुड़कर देखते हैं, तो पाते हैं कि आज हमारे में अच्छे संस्कारों का प्रवाह माता-पिता की अच्छी सीख के साथ-साथ नाना-नानी, दादा-दादी के सानिध्य का ही परिणाम है। एकल परिवार की प्रथा को अपनाते हुए क्या हम इस सुख से अपनी आने वाली पीढ़ी को वंचित नहीं कर रहे? क्या एकल परिवार का निर्णय सही है? क्या हमें संयुक्त परिवार की ओर मुड़ने पर एक बार विचार नहीं करना चाहिए?

पुस्तक

- पुस्तकों का मूल्य रत्नों से भी अधिक है, क्योंकि रत्न चमक-दमक दिखाते हैं जबकि पुस्तकें अंतःकरण को उज्ज्वल करती है। - *मोहन दास कर्मचन्द गाँधी*
- पुस्तक प्रेमी सबसे अधिक धनी और सुखी होते हैं। - *बनारसी दास चतुर्वेदी*
- मैं नरक में भी अच्छी पुस्तकों का स्वागत करूँगा, क्योंकि उनमें वह शक्ति है कि जहाँ वे होंगी, वहीं स्वर्ग बन जाएगा। - *लोकमान्य तिलक*
- पुस्तकों से विहीन घर खिड़कियों से विहीन भवन के समान है। - *होरेस मन*
- पुस्तकें विचारों के युद्ध में अस्त्र का काम करती हैं। - *जॉर्ज बर्नार्ड शॉ*
- पुस्तक से रहित कमरा आत्मा से रहित शरीर के समान है। - *सिसरो*
- जो पुस्तकें हमें अधिक विचारने को बाध्य करती हैं, वे ही हमारी सबसे बड़ी सहायक हैं। - *ओडोर पार्कर*

एक महान आत्मा : महात्मा बुद्ध

श्वेता सीकरी

सुश्री श्वेता सीकरी एडिसन, न्यू-जर्सी में रहती हैं तथा भारत में हरियाणा प्रान्त की रहने वाली हैं। उनके दो बच्चे हैं। बड़ा बेटा ७ वर्ष का है तथा एडिसन हिंदी पाठशाला का विद्यार्थी भी है। श्वेता जी, मर्क फारमेसुएटीकल, औषध निर्माण करने वाले बहुराष्ट्रीय संस्थान में कंप्यूटर विश्लेषक के पद पर कार्यरत हैं। कार्य में व्यस्त होने के उपरांत भी लेखन कार्यों में काफी रूचि रखती हैं। कर्मभूमि के पूर्वांक में भी इनकी एक सुन्दर कहानी प्रकाशित हुई थी| महात्मा बुद्ध की कथा श्वेता जी ने बालसुलभ सुन्दर एवं सरल शब्दों में कही है। आशा है पाठकों को इस रोचक कथा से महात्मा बुद्ध के बारे में जानकारी प्राप्त होगी।

महात्मा बुद्ध का जन्म नेपाल के लुम्बिनी नमक शहर में हुआ था। उनके पिता राजा सुशोधन कपिलवस्तु के राजा थे। उनकी माता का नाम रानी महामाया था। महात्मा बुद्ध के बचपन का नाम सिद्धार्थ गौतम था। ऐसा माना जाता है कि जब सिद्धार्थ अपनी माता की कोख में आये, उस समय रानी महामाया को ऐसा सपना आया कि छः बड़े दाँतों वाला हाथी उनके शरीर के बाएँ भाग में घुस गया है। शक्य परंपरा के अनुसार रानी महामाया ने शिशु को जन्म अपने पिता के यहाँ दिया। सूत्रों के हिसाब से जन्म देने के बाद रानी महामाया का देहांत हो गया।

शिशु के जन्म के बाद दूर-दूर से ऋषि आये और सभी ने यही बताया कि शिशु कोई महान राजा या महान व्यक्ति बनेगा।

सिद्धार्थ का पालन पोषण उनकी मौसी महा पजापति ने किया। सिद्धार्थ के पिता राजा सुशोधन अपने पुत्र को धार्मिक शिक्षा एवं मानव चिंताओं से दूर रखते थे। वे यह नहीं चाहते थे कि गौतम के जीवन में इनमें से किसी की भी छाया पड़े। जब गौतम १६ वर्ष के हुए तभी उनका विवाह यशोधरा नामक कन्या से करवा दिया गया। गौतम और यशोधरा का एक पुत्र हुआ जिसका नाम राहुल रखा गया।

एक बार सिद्धार्थ अपनी प्रजा से मिलने अपने राज्य से बाहर निकले। उस समय उनकी आयु २९ वर्ष की थी। सिद्धार्थ के पिता कभी नहीं चाहते थे कि सिद्धार्थ को मानव परेशानियों का आभास हो, वे नहीं चाहते थे कि सिद्धार्थ को वृद्धावस्था या मृत्यु सम्बन्धित बातें पता हों। परन्तु उस दिन सिद्धार्थ जब अपने राज्य से बाहर निकले तो उन्होंने एक वृद्ध व्यक्ति को देखा। उन्होंने अपने सारथि छना से पूछा कि इस व्यक्ति को क्या हुआ है? उनके सारथि ने उन्हें बताया कि समय के साथ हर मनुष्य वृद्ध होता है। तब राजकुमार सिद्धार्थ को और जानने की इच्छा हुई और वे और आगे निकल पड़े। थोड़ी दूर जाने पर उन्हें रोगी और मृत व्यक्ति दिखे। यह सब देख कर उन्हें बहुत दुःख हुआ और वे इन सब अवस्थाओं से निकलने का मार्ग सोचने लगे।

एक रात जब सब सो रहे थे तो सिद्धार्थ गौतम अपने सारथि के साथ अपना घर, अपनी बीवी एवं पुत्र को छोड़ कर सन्यासी बनने के लिए चले गए। सबसे पहले गौतम राजगृह में गए और अपने सन्यासी जीवन का प्रारंभ भिक्षा माँग कर किया। राजगृह छोड़ने के बाद उन्होंने दो ज्ञानी शिक्षकों से ज्ञान प्राप्त किया। किन्तु गौतम को कहीं भी संतोष नहीं मिला।

सिद्धार्थ के साथ पाँच और सन्यासी साथ हो लिए। सिद्धार्थ और उनके पाँच साथी ज्ञान की खोज में इधर-उधर जाने लगे। उन्होंने सांसारिक वस्तुओं और भोजन का भी त्याग कर दिया। बहुत दिन भूखे रहने के कारण गौतम बहुत निर्बल हो गए थे। यह

एक महान आत्मा : महात्मा बुद्ध

देख कर एक नन्हीं कन्या ने उन्हें खीर खाने के लिए दी। उस नन्हीं कन्या को उनके अन्दर एक महान आत्मा के दर्शन हुए। उस दिन के बाद से सत्य की खोज में भटक रहे गौतम एक पीपल पेड़ के नीचे बैठ गए और वचन लिया कि जब तक वे सत्य नहीं जान लेंगे वहाँ से नहीं उठेंगे। वह पीपल वृक्ष बोधी वृक्ष के नाम से बोध गया, भारत में मशहूर है। उनके साथियों को लगा कि सिद्धार्थ अपनी खोज से भटक गए हैं और अनुशासनहीन हो गए हैं। ४९ दिन की तपस्या के बाद गौतम अपनी तपस्या से उठे और कहा कि उन्हें सत्य का ज्ञान हो गया है। उस समय उनकी आयु ३५ वर्ष की थी। उस दिन के बाद से उन्हें बुद्ध की उपाधि प्राप्त हुई। बुद्ध का अर्थ सत्य को जानना होता है। बौद्ध धर्म में उन्हें शक्यमुनी बुद्ध के नाम से भी जाना जाता है।

बौद्ध धर्म के अनुसार महात्मा बुद्ध को दुखों का कारण और उनसे बाहर निकलने का मार्ग पता चल गया था। महात्मा बुद्ध के अनुसार किसी का भी निर्वाण संभव है। निर्वाण का अर्थ मन की शान्ति है जो कि लालच, मोह, काम, क्रोध से दूर है। निर्वाण का अर्थ संसार से मुक्ति भी हो सकती है।

८० वर्ष की आयु में गौतम बुद्ध ने अपने मानव जीवन का त्याग करने का ऐलान किया। महात्मा बुद्ध ने अपनी अंतिम भिक्षा एक लुहार से ग्रहण की और उसे खाने के बाद बहुत बीमार हो गए। उन्होंने लुहार को सन्देश पहुँचाया कि उसकी भिक्षा के कारण उनकी ऐसी हालत नहीं हुई, अपितु उसने बुद्ध को अंतिम भोजन दिया। कुछ दिन के बाद महात्मा बुद्ध यह संसार छोड़ गए।

हमें भी महात्मा बुद्ध से सीख कर लालच, काम, क्रोध, मोक्ष का त्याग करना चाहिए। आजकल के युग में हम छोटी-छोटी वस्तुओं के पीछे भाग कर अपना समय गँवाते हैं। यही समय यदि हम अपने आप को जानने में लगायें तो हमें इस जीवन का कुछ अर्थ जान पाएँ।

हिन्दी यू.एस.ए. की आत्मकथा

मैं हिन्दी यू.एस.ए. हूँ, अभी मेरी आयु केवल १० वर्ष है। आयु के अनुसार मैं एक कोमल किशोरी हूँ, किंतु समय और आवश्यकता ने मुझसे कुछ ऐसे बड़े-बड़े काम करवा दिए जो अमेरिका की युवा और प्रौढ़ संस्थाएँ भी नहीं कर पाईं। यही कारण है कि कभी-कभी लोग मुझे वयस्क समझने लगते हैं। मैं उनकी बात का बुरा नहीं मानती, बल्कि मुझे स्वयं पर गर्व होता है।

आइए मैं आपको अपने जन्म से लेकर अब तक की कहानी सुनाती हूँ, मेरा जन्म न्यूजर्सी में २००१ में एक ऐसे दंपत्ति के यहाँ हुआ था जो हिन्दी और भारतीय संस्कृति का बहुत आदर करते थे। उन्हें अपने दोनों बच्चों के भविष्य की भी चिंता थी। वे उनके लिए हर जगह हिन्दी कक्षाएँ ढूँढा करते थे, परंतु वे इतने भाग्यशाली नहीं थे जितने आप हैं। और जब निरंतर दो वर्षों तक उन्हें कोई हिन्दी पाठशाला तथा पुस्तकें नहीं मिलीं तो उन्होंने भारत से पुस्तकें लाकर अपने बच्चों को पढ़ाना आरम्भ कर दिया। फिर उन्होंने २-३ वर्ष तक मंदिर के बाल-विहार में हिन्दी पढ़ाने का भरसक प्रयत्न किया, परंतु आशातीत सफलता नहीं मिली।

यह सोचकर कि यदि उन्होंने केवल अपने बच्चों को हिन्दी सिखा दी तो वे बोलेंगे किसके साथ? उन्होंने अपने समान विचार रखने वाले कुछ मित्रों की सहायता से एक संस्था प्रारम्भ की जिसका नाम 'हिन्दी एन. जे.' था। जी हाँ, आप बिल्कुल ठीक समझे ये मेरे बचपन का नाम था।

मैं जब केवल ६ माह की थी तभी मेरे आँगन में प्रथम हिन्दी महोत्सव की ढोलक बजने लगी। उस समय तो मेरे पास ज्यादा पाठशालाएँ भी नहीं थीं, लेकिन पहला हिन्दी महोत्सव बहुत धूम-धाम से मनाया गया। महोत्सव २ बजे प्रारम्भ होकर रात को १२ बजे तक चला। कवि सम्मेलन में हास्य कवि हुल्लड़ मुरादाबादी ने दर्शकों का बहुत मनोरंजन किया। प्रथम हिन्दी महोत्सव के बाद हिन्दी के क्षेत्र में एक बड़ी हलचल आई और इस हलचल के परिणाम स्वरूप कुछ नई पाठशालाएँ भी खुल गईं। चारों ओर 'हिन्दी एन. जे.'' की वाह-वाह होने लगी। मैं भी अपनी प्रशंसा सुनकर बहुत प्रसन्न होती थी, लेकिन मैं जानती थी कि मुझे अपने को स्वस्थ और हृष्ट-पुष्ट रखने के लिए अभी बहुत व्यायाम करना है। दूसरा और तीसरा वर्ष भी मेरे लिए नए प्रशंसक और स्वयंसेवक लेकर आया। दूसरे वर्ष हिन्दी महोत्सव के मुख्य अतिथि श्री नितिश भारद्वाज जी तथा स्वामी रामकमल दास वेदांती जी महाराज थे। तृतीय हिन्दी महोत्सव की शान थीं, सुश्री किरण बेदी जी। किरण जी ने बच्चों को गीता की शिक्षा अपनाने तथा अपने जीवन में अनुशासन को महत्व देने पर

हिन्दी यू.एस.ए. की आत्मकथा

जोर दिया। मैं भी बच्ची थी, मैंने भी किरण जी की बात को अपने जीवन में उतारने की ठान ली।

अब मेरी आयु तीन वर्ष की हो चुकी थी, मेरे आँगन में ७ पाठशालाएँ प्रारम्भ हो चुकी थीं किंतु स्वयंसेवकों की अस्थिरता बनी हुई थी। अनुशासनबद्ध कठिन परिश्रम, कार्य के प्रति समर्पण आदि कुछ ऐसे रोड़े थे जो स्वयंसेवकों को रास नहीं आ रहे थे, परंतु मेरे आंगन में कार्यकर्ताओं की कभी कमी नहीं हुई।

मैं चतुर्थ वर्ष की ओर अपने कदम बढ़ा चुकी थी। अब मेरी चाल में बहुत आत्मविश्वास आ गया था। मेरी कुछ पाठशालाएँ अब न्यू जर्सी के बाहर भी प्रारंभ हो गई थीं। कुछ शुभचिंतकों ने इस समय को मेरे पुनः नामकरण के लिए उचित समझा और मुझे एक नया नाम मिल गया 'हिन्दी यू.एस.ए.'। यह नाम मुझे पहले नाम से अधिक अच्छा और व्यापक लगा। मैं अब अनुभव करने लगी थी कि मेरा आँगन अब केवल न्यूजर्सी तक सीमित न होकर पूरे यू.एस.ए. और कैनेडा तक विस्तार पा गया है। अपने नए नाम के साथ उपहार में मुझे अनेक नई जिम्मेदारियाँ भी मिली थीं जिन्हें मैंने सहर्ष स्वीकार किया। लोग मुझसे अब बड़ी-बड़ी आशाएँ करने लगे थे।

पाँचवें वर्ष में मेरे जीवन में एक ऐसी घटना घटी जो मेरी आज तक की प्रगति का आधार बनी। इस आधारशिला का नाम था "एडिसन हिन्दी पाठशाला"। इस पाठशाला के खुलने से मेरी प्रगति की अनेक राहें खुल गईं। एडिसन पाठशाला खुलने से मैं कुछ लड़खड़ायी किंतु मेरे स्वयंसेवकों ने अपने कठिन परिश्रम और चातुर्य द्वारा मुझे सम्भाल लिया। मैं ३०० बच्चों की पाठशाला के लिए तैयार नहीं थी। पल भर के लिए मुझे लगा कि मेरे पास पर्याप्त शिक्षक, स्वयंसेवक तथा व्यवस्थापक नहीं हैं, शिक्षण सामग्री भी कुछ कम और कमज़ोर प्रतीत हुई परंतु सबके मिले-जुले प्रयासों ने मुझे संभाला और मैंने अपने आप को आने वाले समय के लिए तैयार करना प्रारम्भ कर दिया। मैंने नया पाठ्यक्रम, अभ्यास पुस्तकें, तथा नई परीक्षा पद्धति को आरंभ किया, और अपना नाम और सौंदर्य प्रदान किया। महोत्सव में बच्चों की अनेक प्रतियोगिताएँ बढ़ा दीं। कविता पाठ की लोकप्रियता को ध्यान में रखते हुए उसे एक अलग रूप और समय दे दिया जिससे उसका विस्तार हो सके। आज कविता पाठ प्रतियोगिता अपनी चरम सीमा पर है।

छठवाँ वर्ष मेरे लिए बहुत ही महत्वपूर्ण था क्योंकि एडिसन की ख्याति का असर आस-पास के नगरों पर भी पड़ा था और न्यूजर्सी में इस वर्ष ३ नई बड़ी पाठशालाएँ प्रारम्भ हुई थीं। साउथ ब्रंस्विक हिन्दी पाठशाला, फ्रेंकलिन हिन्दी पाठशाला तथा वुडब्रिज

हिन्दी यू.एस.ए. की आत्मकथा

हिन्दी पाठशाला। प्लेन्सबोरो पाठशाला का भी स्थान तथा संचालन परिवर्तन उसे एक विस्तृत रूप देता दृष्टिगोचर होने लगा था। अब मेरे पास बहुत काम था। अब तक मेरा नाम बहुत बड़ा हो चुका था, अतः मेरी जिम्मेदारी और बढ़ गई थी। जहाँ मैं एक ओर सीखने वाले विद्यार्थियों की बढ़ती हुई संख्या से खुशी के मारे फूली नहीं समाती थी, वहीं वितरण व्यवस्था, अभिभावकों की शिकायतें मुझे जाने-अनजाने झकझोड़ती रहती थीं। इसे उन्नति की प्रक्रिया का एक अभिन्न अंग मानकर मैं सदैव उसका आनन्द लेती रहती थी।

सातवें वर्ष में पिस्कैटवे, जर्सी सिटी तथा न्यूजर्सी के बाहर मेरीलैंड, फ्लोरिडा, मिनिसोटा, कैनेडा आदि में अनेक पाठशालाएँ प्रारम्भ हुईं। अब मैं पूरी तरह अपने पैरों पर मजबूती से खड़ी थी। अब मेरे पास लगभग १५० प्रशिक्षित शिक्षक-शिक्षिकाएँ तथा हिन्दी यू.एस.ए. प्रकाशन की २० से अधिक पुस्तकें थीं। अब मुझे परेशान करने वाले मेरी शक्ति के प्रभाव और कार्य करने की क्षमता से डरने लगे थे। अब मुझे कोई परेशान नहीं करता था। अब मेरे शत्रु भी मेरे प्रशंसक बन चुके थे। अब मेरे आँगन में वही कुर्सियाँ दिखायी देती थीं जिस पर बैठने वाले सदा ही कमर कस कर काम करने के लिए तत्पर रहते थे।

पिछले आठ वर्षों में महोत्सव प्रतिवर्ष सफलता की सीढ़ियाँ चढ़ता रहा। इसके आँगन में बाबा सत्यनारायण मौर्य की 'भारत माता की आरती"' तथा सर्वश्रेष्ठ हास्य कलाकार राजू श्रीवास्तव के चुलबुले चुटकुले गूँजते रहे। प्रतिवर्ष वीररस तथा हास्यरस के कवि श्री गजेन्द्र सोलंकी जी, राजेश चेतन जी, स्वर्गीय ओम व्यास जी, स्वर्गीय ओम प्रकाश आदित्य जी, उच्च कोटि के व्यंग्यकार श्री अशोक चक्रधर जी, श्री सुनील जोगी जी, श्री महेन्द्र अजनबी जी समय-समय पर आकर महोत्सवों को सफल दर सफल बनाते रहे। इस समय तक पढ़ने वाले विद्यार्थियों की संख्या २००० तक पहुँच चुकी थी। महोत्सव में विद्यार्थियों की संख्या १५०० तक होने लगी थी। यही कारण था कि सातवें वर्ष में मुझे महोत्सव को २ दिवसीय करना पड़ा।

षष्ठम् हिन्दी महोत्सव में मुझे योग गुरु स्वामी रामदेव जी के चरणस्पर्श करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। उसके पूर्व चतुर्थ हिन्दी महोत्सव में दीदी माँ ऋतम्भरा जी के दर्शन पाकर मैं कृत-कृत हो गयी थी। इन सभी के आशीर्वाद और मार्गदर्शन के कारण मुझे सदा ही नई-नई प्रेरणाएँ मिलती रहीं। मेरे आँगन में पढ़े और बड़े हुए चंद चुने हुए विद्यार्थियों की "अविस्मरणीय भारत यात्रा" भी ऐसी प्रेरणा तथा मित्रों के सहयोग का एक उदाहरण है। मैं जब भी अपने बच्चों की प्रतियोगिताओं की झलकियाँ देखती हूँ तो अनेक मोती मेरे आगे बिखर जाते हैं। शब्द

हिन्दी यू.एस.ए. की आत्मकथा

अंताक्षरी, शब्द ज्ञान प्रतियोगिता, प्रश्नोत्तरी, व्याकरण प्रश्नोत्तरी, वर्तनी प्रतियोगिता, सामूहिक भजन, देशभक्ति तथा लोकगीतों की प्रतियोगिताएँ, नृत्य तथा नाटक प्रतियोगिताएँ आदि। इन प्रतियोगिताओं को याद करते समय मुझे न केवल अपने विद्यार्थियों पर गर्व होता है अपितु उनके शिक्षकों के ज्ञान कौशल, प्रस्तुति तथा कठिन परिश्रम पर भी मेरा सीना गर्व से फूल जाता है।

इन्हीं यादों में मस्त मैं नवम् वर्ष की ओर पहुँच गई। इस वर्ष भी दो नए विद्यालय चैस्टर फील्ड और सेयरविल में खुले तथा न्यूजर्सी के बाहर भी अनेक विद्यालय खुले। इस वर्ष की सबसे बड़ी उपलब्धि यह रही कि मेरे कार्यकर्ताओं ने मेरी आवश्यकताओं को समझा और मेरे लिए एक घर बनाकर मुझे सदा के लिए अमेरिका में बसाने का विचार किया। दसवाँ वर्ष प्रारम्भ होते-होते उन्होंने मेरे इस नए घर 'हिन्दी भवन'" को बनाने की घोषणा भी कर दी। मैं जानती हूँ कि इस काम के लिए बहुत बड़ी धन राशि (लगभग ५ मिलियन डॉलर) की आवश्यकता है। किंतु मुझे अपने स्वयंसेवकों, मित्रों, अभिभावकों तथा शिक्षकों पर इतना दृढ़ विश्वास है कि मुझे एक न एक दिन ये लोग एक दृढ़ धरातल, मजबूत दीवारें तथा सभी आपदाओं से बचाने वाली छत अवश्य ही प्रदान करेंगे। मेरे जो बच्चे आज खुले आँगन में खेलते और पढ़ते हैं फिर वे एक दिन भवन की छाया में निर्भय होकर पढ़ेंगे। इस सपने को साकार करने का पहला कदम उठ चुका है, और आगे बढ़ते हुए कदम मुझे दसवाँ वर्ष पूर्ण होने की सूचना दे रहे हैं। आज जब मैं अपना दसवाँ जन्मदिन मना रही हूँ, मेरे पास ३६ पाठशालाएँ, ३,५०० विद्यार्थी तथा २५० शिक्षक, शिक्षिकाएँ तथा कार्यकर्ता हैं। अपने इतने बड़े परिवार पर मुझे बहुत गर्व है, और मैं उन सभी की बहुत आभारी हूँ जिन्होंने मुझे समाज में, देश में इतना सम्मान और प्रतिष्ठा दिलवायी है। मैं उन सभी सिपाहियों को प्रणाम करती हूँ जो मेरी इन दस वर्षों की यात्रा में कभी न कभी, कहीं न कहीं, किसी न किसी रूप में मेरे साथ थे। आज उन सबके मिले-जुले प्रयासों का परिणाम है वर्तमान 'हिन्दी यू.एस.ए.' अर्थात् मैं।

संस्था सफल हो इसके पीछे,
होते सेवकों के त्याग महान।
हिन्दी यू.एस.ए को संवारा जिसने,
उनको हमारा शत्-शत् प्रणाम॥

मेरी संस्था का मुख्य द्वार सदा ही हिन्दी प्रेमियों के लिए खुला था, खुला है और सदैव खुला रहेगा। आप चाहे किसी भी प्रांत, जाति, धर्म या देश के हों,

हिन्दी यू.एस.ए. की आत्मकथा

यदि आप मुझसे जुड़ना चाहते हैं तो आपका मैं सदा ही हृदय से स्वागत करूँगी। मेरे आँगन में जो भी आया है हिन्दी की सेवा कर उसने अपने जीवन में परिपूर्णता का अनुभव किया है। आप भी आएँ और अपने मित्रों को भी लाएँ। मेरे आँगन के सौहार्दपूर्ण वातावरण में आपको भारत की मिट्टी की सुगन्ध का अनुभव होगा।

मेरे हिन्दी के अभियान से, सब लोगों का नाता।

पर छोटा-बड़ा कोई नहीं है, कार्य प्रभु कराता॥

मेरा दूरभाष नम्बर है - 1-877-HINDI USA तथा विपत्र है - hindiusa@hindiusa.org

आप मेरे जीवन की झलकियाँ चित्रों के माध्यम से आगे देख सकते हैं।

विचार

- अच्छा या बुरा कुछ नहीं है, केवल विचार ही किसी वस्तु को अच्छा या बुरा बनाते हैं। - शेक्सपियर
- समय कैसा है, मित्र कौन-कौन हैं, देश कैसा है, क्या आमदनी है, क्या खर्च है, मैं कौन हूँ, मेरी शक्ति कितनी है? इन बातों पर मनुष्य को बार-बार विचार करना चाहिए। - चाणक्य नीति
- जहाँ विचार नहीं, वहाँ कार्य नहीं। अतः मस्तिष्क को उच्च विचारों से, उच्च आदर्शों से भर दो। उन्हें दिन -रात अपने सामने रखो और तब उसमें से महान कार्य निष्पन्न होगा। - स्वामी विवेकानन्द
- संसार में न कोई तुम्हारा मित्र है, न शत्रु है। तुम्हारे अपने विचार ही शत्रु और मित्र बनाने के लिए उत्तरदायी हैं।
- प्रतिभाशाली और पवित्र हृदय वाले व्यक्ति जिन विचारों को संसार में फैलाते हैं, उनसे संसार में परिवर्तन आता है। - इमर्सन
- मनुष्य अपने विचारों की उपज मात्र है, वह जो सोचता है, वैसा ही हो जाता है। - गाँधी
- हमारे विचार ही हमारी मुख्य प्रेरणा शक्ति होते हैं। - स्वामी विवेकानन्द

Award Winning Grand
13th Dushahra Celebration
DUSHAHRA USA
"VICTORY OF GOOD OVER EVIL"
Indo-American Festival, NJ
तेरहवां दशहरा उत्सव
Presented by Indo-American Festivals, Inc.
(Tax Exempt 501 (C) (3) A Not for Profit NJ Corporation)
in cooperation with SANKAT MOCHAN HANUMAN MANDIR USA
Sunday, October 9, 2011
11:00 AM - 9:00 PM
Rain-date: Sunday, October 16, 2011
Lake Papaianni Park,
Edison, NJ
Brought to you by
"Victory of Good Over Evil"
SONY
ENTERTAINMENT
TELEVISION ASIA
Grand Media Sponsor
WATCH the burning of the 25 ft effigies
Imported from India Ravan, Kumbhkaran and Meghnaad
Art by:
Baba Satya Narayan Mourya
Dazzling Ram Leela by Divya Jain Creations Dance Academy
Cultural Program, Karaoke Singing & Fashion Show by Juhi Jain
INTRODUCING DULHAN EXPO, Property Expo, Designer Oaktree Mall
RIDES FOR CHILDREN • WATCH SPECTACULAR FIREWORKS
Food Bazar, Jewelry Mandi, Fine Dress & Saree Mandi
Crafts Fair • Balloons, Popcorn & Candy
Astrology, Mehendi • Health Camp: FREE Health Screening
For more information call Mangal Gupta 732-234-6682
For Further Information and Directions: Please visit www.Dushahra.com or email info@dushahra.com
Any information regarding this event is subject to change without prior notice
Supported by Shri Sankat Mochan, Hanuman Mandir, NJ VIP Club, FIA-NY, ICS. of NJ
दशहरे मेले में हिंदी यू.एस.ए के बूथ पर अवश्य पधारिए

हिंदी यू.एस.ए. के प्रमुख कार्यकर्ता

देवेंद्र सिंह

रचिता सिंह

राज मित्तल

अर्चना कुमार

माणक काबरा

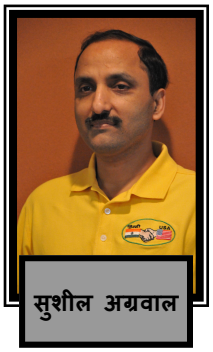
सुशील अग्रवाल

शिव अग्रवाल

उमेश महाजन

सुनिता गुलाटी

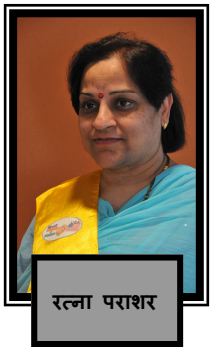
रत्ना पराशर

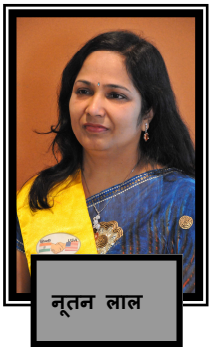
नूतन लाल

गोपाल चतुर्वेदी

मैनो मुर्मु

सविता नायक

पंकज जैन

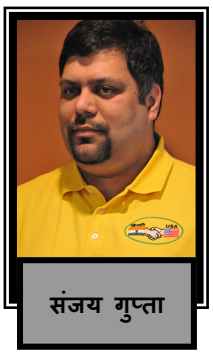
संजय गुप्ता

गुलशान मिर्ग

राज बंसल

क्षिप्रा सूद

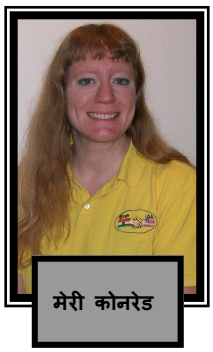
मेरी कोनरेड

शिल्पा महाजन

सुमन मित्तल

वंदना अग्रवाल

सुमन दाहिया

प्रतीक जैन

राजेश पटेल

मीना राठी

दीपक लाल

दलवीर राजपूत

अद्वैत तारे

हिंदीUSA परिवार

हिन्दी यू.एस.ए. की पाठशालाओं के संचालक

प्रथम हिंदी महोत्सव

जून १, २००२

प्रथम हिंदी महोत्सव में कुछ हिंदी पाठशालाओं के साथ-साथ संगीत तथा नृत्य विद्यालयों ने भी सक्रिय रूप से भाग लिया। शास्त्रीय नृत्य, शास्त्रीय संगीत, लोक नृत्य, कव्वाली, नाटक, प्रश्नावली प्रतियोगिता (विषय - भारत) तथा कविता पाठ प्रतियोगिता जैसी विभिन्नताओं को अपने आप में समेटे हुए कार्यक्रमों ने हिंदी प्रेमियों का दिल जीत लिया। सुप्रसिद्ध हास्य कवि हुल्लड़ मुरादाबादी जी तथा वीर रस के कवि आलोक भट्टाचार्य जी ने कार्यक्रम में चार चाँद लगा दिए।

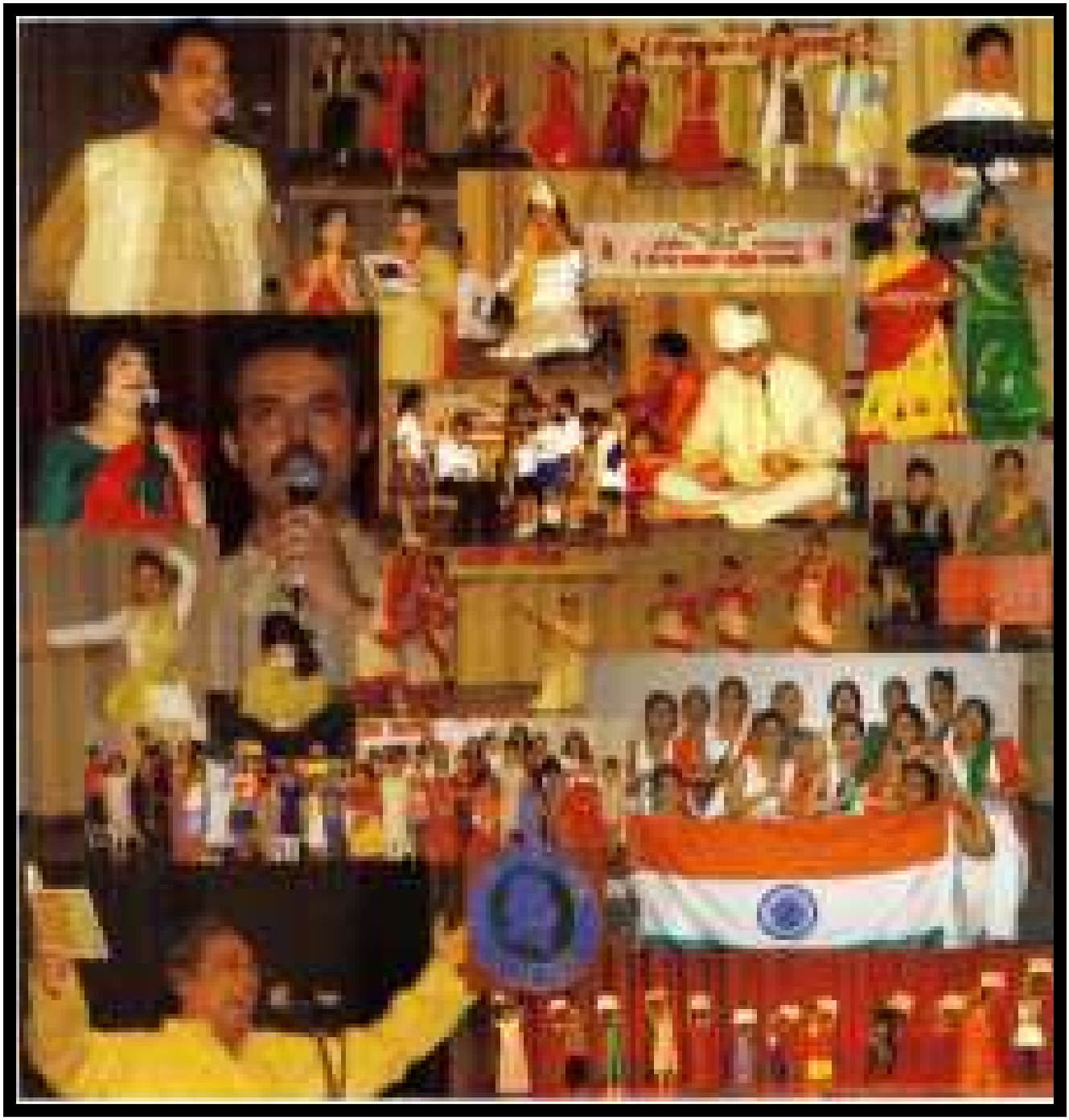

द्वितीय हिंदी महोत्सव

मई १७, २००३

इस महोत्सव का आकर्षण रहे महाभारत सीरियल में श्री कृष्ण की भूमिका निभाने वाले नितिश भारद्वाज जी। बच्चों ने उनके लिए महाभारत प्रश्नावली प्रस्तुत की, जिसे देखकर सभी दंग रह गए। इस प्रश्नावली का संचालन 9 वर्ष की आयु वाले विद्यार्थी पार्थ सिंह परिहार ने किया, जो बहुत ही प्रभावशाली रहा। बच्चों ने नृत्य, नाटक, कविता पाठ प्रतियोगिता, सामूहिक गीत प्रतियोगिता के साथ-साथ नितिश जी का साक्षात्कार भी लिया। बाबा सत्यनारायण मौर्य जी की "भारत माँ की आरती" ने श्रोताओं को देशभक्ति से सराबोर कर दिया, तथा रामकमलदास वेदांती जी महाराज के भजनों ने दर्शकों को भक्ति गंगा में स्नान कराया।

तृतीय हिंदी महोत्सव

जून ९, २००४

तृतीय हिंदी महोत्सव में सुश्री किरण बेदी जी ने हिंदी यू.एस.ए. आथित्य को सहर्ष स्वीकार किया। इसके अतिरिक्त सुविख्यात व्यंग्यकार, श्री अशोक चक्रधर जी का चक्र तथा बाबा मौर्य की तूलिका ऐसे घूमें कि दर्शक कुर्सियों से बंधे रह गए। इस वर्ष लगभग २५० बच्चों ने विभिन्न रंगारंग प्रतियोगिताओं में भाग लिया, जिसमें 'शब्दावली' प्रतियोगिता कार्यक्रम का विशेष आकर्षण रही।

चतुर्थ हिंदी महोत्सव

जून २५, २००५

इस वर्ष लगभग ३०० बच्चों ने नृत्य, वेशभूषा प्रतियोगिता, सामूहिक गीत प्रतियोगिता, तथा 'शब्द अंताक्षरी' प्रतियोगिता में भाग लिया। इस कार्यक्रम में वात्सल्यग्राम की कल्पना को साकार करने वाली दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा जी ने अपनी ओजपूर्ण वक्तव्य से सबको रोमांचित कर दिया। उन्होंने हिंदी के नन्हें विद्यार्थियों को 'तुलसी के पौधे' की संज्ञा दी। इस वर्ष का कवि सम्मेलन भी अत्यधिक सराहनीय रहा, जिसमें वीर रस के युवा कवि श्री गजेंद्र सोलंकी, बाबा सत्यनारायण मौर्य, तथा हास्य के प्रसिद्ध हस्ताक्षर स्वर्गीय ऊँ व्यास जी ने अपनी रचनाओं से दर्शकों को झकझोड़ दिया।

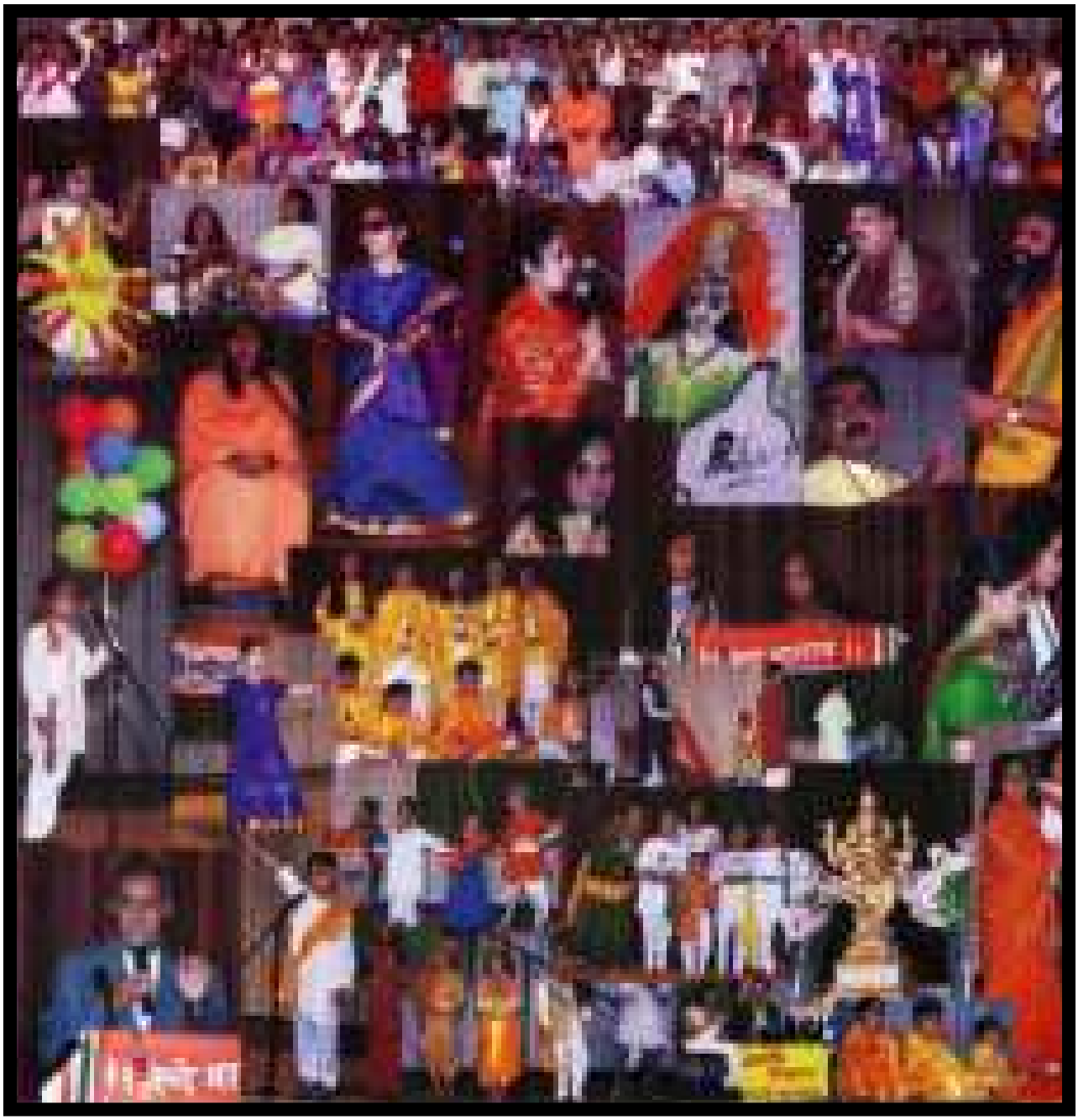

पंचम हिंदी महोत्सव

मई २०, २००६

यह महोत्सव दूरदर्शन के प्रसिद्ध हास्य कलाकार श्री राजू श्रीवास्तव के नाम रहा। इसके अतिरिक्त श्री राजेश चेतन जी और बाबा मौर्य ने कार्यक्रम में वीर रस के रंग भरे। इस वर्ष कहावतों पर आधारित नाटक प्रतियोगिता तथा वेशभूषा प्रतियोगिता बहुत सफल रहीं। हास्य नाटक 'अंधेर नगरी चौपट राजा' को दर्शकों ने बहुत सराहा।

षष्ठम् हिंदी महोत्सव

जुलाई ७, २००७

यह महोत्सव हमारे लिए योग गुरु स्वामी रामदेव जी का आशीर्वाद बन कर आया। हिन्दी यू.एस.ए. के कार्यों से प्रभावित होकर बाबा रामदेव जी ने हमें २ घंटे का समय दिया, तथा अपार जन मानस को हिन्दी महोत्सव से जोड़ा।

इस वर्ष कवि सम्मेलन में उच्च कोटि के व्यंगकार माणिक वर्मा जी, जनता की विशेष मांग पर गजेन्द्र सोलंकी जी, तथा बाबा सत्यनारायण मौर्य जी पधारे। इस वर्ष बच्चों की संख्या लगभग ५०० तक पहुँच गई थी, तथा हिन्दी यू.एस.ए. की १० से अधिक पाठशालाएँ खुल चुकी थीं।

सप्तम हिंदी महोत्सव

जून १४-१५, २००८

यह महोत्सव हिन्दी यू.एस.ए. में एक बड़ा परिवर्तन लेकर आया। इस वर्ष से महोत्सव द्विदिवसीय होने लगा। अब तक बच्चों की संख्या लगभग १,००० तक पहुँच गई थी। इस वर्ष अनेक सामूहिक प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया।

विभिन्न प्रांतों के लोकनृत्य तथा "मात्राओं की लड़ाई" नाटक विशेष सराहनीय रहे। इस वर्ष कवि सम्मेलन में प्रसिद्ध वरिष्ठ हास्य कवि स्वर्गीय ओम प्रकाश आदित्य जी, श्री राजेश चेतन जी, तथा बाबा सत्यनारायण पधारे। यह महोत्सव भी हर महोत्सव की तरह एक अविस्मर्णीय महोत्सव रहा।

अष्ठम् हिंदी महोत्सव

मई १६-१७, २००९

अष्ठम् हिन्दी महोत्सव में १,२०० विद्यार्थियों ने पूरे हर्षोल्लास के साथ भाग लिया। अभिनय गीत प्रतियोगिता, सामूहिक भजन तथा देशभक्ति गीत प्रतियोगिता, नाटक प्रतियोगिता, सामूहिक नृत्य प्रतियोगिता, वर्तनी ज्ञान प्रतियोगिता, तथा सबसे बढ़-चढ़ कर 'व्याकरण ज्ञान प्रतियोगिता' ने दर्शकों को मंत्र-मुग्ध कर दिया। नाटक 'भारत के क्रांतिकारी' तथा नृत्य नाटिका 'आयो रे राम आयो रे' अत्यधिक सराहनीय रहे।

महोत्सव के दूसरे दिन भारत भ्रमण में भाग लेने वाले सभी विद्यार्थियों को सम्मानित किया गया, तथा वरिष्ठ स्तर के विद्यार्थियों को हिन्दी यू.एस.ए. स्नातक की उपाधियाँ प्रदान की गईं। तत्पश्चात् भारत के प्रसिद्ध कवियों श्री गजेन्द्र सोलंकी जी, श्री सुनील जोगी जी, तथा श्री महेन्द्र अजनबी जी ने इस महोत्सव को एक अमिट याद बना दिया।

नवम् हिंदी महोत्सव

मई १-२, २०१०

नवम् वर्ष आते-आते हिन्दी यू.एस.ए. विश्व की सबसे बड़ी संस्था बन चुकी थी, और हिन्दी महोत्सव विश्व सबसे बड़ा हिन्दी कार्यक्रम जो १२-१२ घंटे दो दिन तक चलता है, वह भी एक ऐसे देश में जहाँ की राष्ट्रभाषा अंग्रेजी है। इस वर्ष लगभग १,३५० बच्चों ने विभिन्न प्रतियोगिताओं में बढ़-चढ़कर भाग लिया। नाटक प्रतियोगिता सबसे श्रेष्ठ रही जिसमें 'बच्चों के मुख से हिन्दी', 'स्वतंत्रता एक झलकी', 'भारत के स्वाभिमान', तथा 'हिन्दी हड़िप्पा' आदि नाटकों का लेखन, पटकथा तथा प्रस्तुति अत्यधिक उच्च कोटि के थे।

महोत्सव का दूसरा दिन कविता-पाठ प्रतियोगिता के नाम रहा, जिसमें सारे विद्यालयों से चुने हुए ८ स्तरों के लगभग १०० सर्वश्रेष्ठ प्रतियोगियों ने भाग लिया। इसी दिन वरिष्ठ स्तर के विद्यार्थियों का दीक्षांत समारोह भी हुआ, जिसमें उन्होंने जीवन भर हिन्दी की सेवा करने की शपथ ली। साथ ही उच्च स्तर के विद्यार्थियों के लिए 'हिन्दी ज्ञान प्रतियोगिता' का आयोजन भी इसी दिन किया गया।

इस वर्ष हमारे अतिथि कवि थे वीर रस के वरिष्ठ कवि श्री बलवीर सिंह करुण, डॉ कुमार विश्वास, तथा हरियाणा के जगबीर राठी जी।

दशम् हिंदी महोत्सव

मई २१-२२, २०११

आज दशम् हिन्दी महोत्सव आपके सामने है। पिछले १० वर्षों में इसका जो रूप निखरकर सारी दुनिया के सामने आया है उसके पीछे अनगिनत लोगों की मेहनत, लगन, इच्छाशक्ति, तथा भाषा प्रेम है। इन दस वर्षों की सबसे बड़ी उपलब्धि यह है कि हम अमेरिका में जन्मी प्रवासी पीढ़ी के हृदय में हिन्दी भाषा का दीपक जलाने में सफल हुए हैं। ऐसा अनुमान है कि आज यहाँ लगभग १७ हिन्दी पाठशालाओं ने भाग लिया, तथा लगभग २,००० बच्चों ने रंगारंग कार्यक्रम प्रस्तुत किए। हिन्दी महोत्सव के कार्यक्रमों की विशेषता यह रहती है कि विदेशी धरती पर होते हुए भी इसमें अंग्रेजी बॉलीवुड संस्कृति की झलक नजर नहीं आती। सभी प्रतियोगिताएँ तथा प्रस्तुतियाँ बच्चों को भारत देश, भारतीय संस्कृति और संस्कारों से जोड़ने वाली होती हैं।

इस वर्ष की सबसे बड़ी उपलब्धि है "हिन्दी भवन निर्माण" की घोषणा। हिन्दी यू.एस.ए. एक ऐसी संस्था है जिसके कार्यकर्ता बिना किसी पद संज्ञा के वर्ष में ३६५ दिन काम करते हैं, और यही बात इस संस्था को दूसरी संस्थाओं से अलग करती है। अत्यधिक व्यस्त होते हुए भी हिन्दी यू.एस.ए. के कार्यकर्ताओं ने हिन्दी भवन के लिए पाँच मिलियन डॉलर जमा करने का व्रत लिया है। समाज के प्रति इन्होंने तो अपना कर्तव्य सामर्थ्य से ज्यादा निभाया है, अब आपकी बारी है। आप अधिक से अधिक दान देकर इनके लक्ष्य प्राप्ति में भागीदार बनिए, और आगे आने वाली पीढ़ियों को अनुपम उपहार दीजिए। यही दशम् हिन्दी महोत्सव की सबसे बड़ी सफलता होगी।

हनुमान चालीसा भावार्थ: गतांक से आगे

व्याख्याकार: स्वामी डॉ. रामकमल दास वेदांती जी महाराज

संकलन: अर्चना कुमार

चौपाई

कंचन वरन विराज सुबेसा। कानन कुंडल कुंचित केसा॥ ४ ॥

हाथ वज्र औ ध्वजा विराजे। काँधे मूंज जनेऊ साजै॥ ५ ॥

अर्थ - यहाँ श्री हनुमान जी के ध्यान का वर्णन किया है। उपासना के अनुसार पृथक्-पृथक् ध्यान का निर्देश दिया गया है। जिसके शरीर की कान्ति सुमेरू पर्वत के समान तेजस्वी है, अपने भक्तों के लिए जिसने सुन्दर रूप धारण कर रखा है, जिसके कानों में कुंडल हैं, घुंघराले बाल हैं, जिसके हाथ में विजय-सूचक ध्वजा और व्रज का चिन्ह है जो अपने भक्तों की सदा रक्षा करते हुए विजय कराते हैं। और जिन्होंने काँधे पर मूँज का जनेऊ धारण किया हुआ है।

भावार्थ - यह हनुमान जी का "सौम्यरूप" है राम जी ने नैमिशारण्य में भूमि का दान दिया था। कलियुग के आदि में दुष्ट बुद्धि राजा ने वह भूमि छीन ली। सब ब्राह्मण, जो लगभग सत्तर थे, अपने परिवारों को छोड़कर, हनुमान जी की खोज में रामेश्वर तक पहुँच गए। वहाँ वे निराहार रहने लगे। परीक्षा में उतीर्ण देखकर हनुमान जी ने ब्राह्मणों से कहा - "तुम्हारी भूमि तुम्हें वापिस ले देंगे।" सब ब्राह्मणों ने कहा - "हम आपके दर्शन के लिए आए हैं। कृपया हमें वह सुन्दर 'सौम्यरूप' दिखाइए जो आपने जानकी जी को दिखाया था।" भक्तवत्सल ही तो ठहरे। कहने लगे - "कलियुग में वैसा रूप दुर्लभ है, फिर भी मेरी खोज में आए हो तो मैं वैसा ही रूप दिखाऊँगा।" गीता में कहा है - "दिव्यं ददामि ते चक्षु।" इसी प्रकार हनुमान जी ने ब्राह्मणों को दिव्य नेत्र दिए और अपने महान सुन्दर स्वरूप का दर्शन कराया। यह तुलसी के हनुमान हैं॥ ४-५ ॥

भावार्थ - आधुनिक युग में ईश्वर की दिव्य लीला को न समझकर लोग शंका करते हैं। उनके लिए तुलसीदास जी ने समाधान किया है। "वायुपुत्र" का अर्थ तो पहले दे चुके हैं, अब "संकर सुवन" की बात

हनुमान चालीसा भावार्थ: गतांक से आगे

चौपाई

संकर सुवन केसरी नन्दन।

तेज प्रताप महा जग वन्दन॥ ६ ॥

है। सृष्टि के आदि में ब्रह्मा की आज्ञा पाकर शिवजी ने ग्यारह रूद्र उत्पन्न किए। शिव पुराण में कहा है कि श्रीराम जी ने अवतार लेने से पहले कहा था कि "रावण को मारने में आप क्या मेरी सहायता करेंगे?" शिवजी ने कहा कि मैं अपने ग्यारहवें पुत्र को आज्ञा देता हूँ कि वह जन्म लेकर आपकी सेवा में अग्रगण्य रहे। वह अंजनी का पुत्र होगा। शिवजी ने अपने ग्यारवें (पुत्र) रुद्र को आज्ञा दी कि वह राम सेवा के लिए जन्म ले। ऐसे ही जामवन्त ब्रह्मा के पुत्र हैं। अर्थात् अपने शरीर से एक जीव को अर्पण करना कि जाओ, तुम यह कार्य करो। ब्रह्मा ने सब देवताओं, ऋषियों और मुनियों को आज्ञा दी कि सब जाओ और राम सेवा के लिए वानर रूप धारण कर इंतजार करो।' तुलसीदास जी ने पवन के साथ सुत शब्द लगाया है, अंजनी के साथ 'नन्दन' और शिव के साथ 'सुवन' लिखा है। पवन का आशीर्वाद, शिवजी की आज्ञा से सुवन होना और केसरी से वानराकृति को धारण करना, क्योंकि ब्रह्माजी की आज्ञा थी इसलिए वानर रूप धारण किया।

"केसरी" - एक राक्षस कलाप ग्राम में ऋषियों को सताता था। केसरी ने उसको मारकर ऋषियों को बचा लिया, ऋषियों ने केसरी को आशीर्वाद दिया कि तुमको ऐसा पुत्र प्राप्त होगा जो सारे संसार में प्रसिद्ध होगा। बलशाली होगा, ज्ञान, बुद्धि, बल में परिपूर्ण होते हुए भी राम जी का अनन्य भक्त होगा। इसीलिए यहाँ पर 'केसरी' नन्दन कहा गया है।

अंजनी दहेज में बहुत सी वस्तुएँ लाई थीं उससे केसरी को प्रसन्नता नहीं हुई क्योंकि ऋषियों ने जो पुत्र प्राप्ति का आशीर्वाद दिया था वह उसकी प्रतीक्षा में था। पति की उदासीनता को देख, उसी समय, अंजना ने कहा - "मैं अपने दहेज में एक महान दुर्लभ वस्तु भी लाई हूँ वह पुत्र का वरदान है जो पिताजी को शिवजी ने मुझे दिया था।" यह सुनकर केसरी को बड़ी प्रसन्नता हुई। अंजना कहने लगी कि ऐसे महापुरुष की माँ बनने के लिए तेज की

हनुमान चालीसा भावार्थ: गतांक से आगे

आवश्यकता है इसीलिए मैं तप करना चाहती हूँ। केसरी ने कहा कि मैं तुम्हारी पूर्ण सहायता करूँगा। ऐसा कह कर वे दोनों सुमेरु पर्वत से किष्किन्धा आ गए। मतंग ऋषि के आश्रम पर एक हजार वर्ष और वेंकटेश्वर पर्वत पर एक सौ वर्ष, ऐसे ग्यारह सौ वर्ष तप किया। केसरी ने सभी आवश्यकताएँ पूरी कीं। इन ग्यारह सौ वर्षों की तपस्या के फलस्वरूप हनुमान जी को 'केसरी' नन्दन कहा गया है। केसरी के पाँच पुत्र और थे परंतु वे केसरी को प्रसन्न करने वाले नहीं थे। श्रीशंकर, पवन और केसरी तीनों को आदर देने की शक्ति केवल हनुमान जी में ही है।

"तेज प्रताप" - जो अपने महान तेज और प्रताप के कारण सम्पूर्ण जगत में वन्दनीय है।

इन्द्र के द्वारा मूर्छित होने पर सब देवताओं ने हनुमान जी को वर दिये थे। सूर्य ने भी वरदान दिया था कि इस बानर को मैं पढ़ाऊँगा। पाँच वर्ष की अवस्था में हनुमान जी सूर्य देव के पास पहुँचे। नमस्कार करके कहा कि मुझे पढ़ाओ। हनुमान जी को तुच्छ समझकर सूर्य ने टाल-मटोल की। कहा- "मेरा तेज असहनीय है, पीठ के पीछे विद्या पढ़ी नहीं जाती है, सन्मुख होने से भस्म हो जाओगे, मेरे रथ में बैठने का कोई प्रबन्ध नहीं है, (अर्थात् गुरु के बराबर बैठने से विद्या प्राप्ति नहीं होती है), यदि तुम दौड़ने का दावा करो तो पीठ दिखाकर दौड़ोगे, तो भी विद्या नहीं पढ़ी जाएगी, क्योंकि गुरु को पीठ नहीं दिखानी चाहिए।" हनुमान जी ने उत्तर दिया - " आपका वेग मेरे एक कदम के बराबर है, मैं पीछे-पीछे पैर रखकर आपके सन्मुख रहूँगा। इसीलिए पीठ दिखाने का कोई सवाल ही नहीं है! मेरा उर्ध्व स्वाँस भी नहीं चलेगा। अब रह गया आपका 'तेज' उसे मैं हरण कर लूँगा। मेरे तेज से आप प्रकाशित रहोगे। इसकी चिंता भी आपको नहीं करनी पड़ेगी।

"प्रताप"–'प्र' अर्थात् उत्कृष्ट और 'ताप' अर्थात् प्रभावित करना। जिसकी बुद्धि औश्र बल के प्रताप से देव, असुर, गन्धर्व और किन्नर इत्यादि प्रभावित हो चुके हैं, अतः उन्हें 'प्रताप' से सम्बोधित किया गया है। इस प्रकार हनुमान जी जग वन्दनीय माने गए हैं। ॥ ६ ॥

दशम् हिंदी महोत्सव की शुभकामनाएँ
राजेश, चित्रा, वेध

माता-पिता का कर्ज़

माणक काबरा

भूलना सब कुछ मगर, माँ बाप को मत भूलना,
कर्जा बहुत माँ बाप का, इस बात को मत भूलना।
जन्मे जब वो हर्षित हुए, इस बात को मत भूलना,
भूलना सब कुछ मगर, माँ बाप को मत भूलना।

जन्मे जब थाली बजाकर, सभी कुटुंब-मोहल्ले को बुलाया,
घर-घर जा मिठाई बाँटी, इस बात को मत भूलाना,
भूलना सब कुछ मगर, माँ बाप को मत भूलना।

उँगली पकड़ चलना सिखाया, उस बात को मत भूलना,
कंधे बिठाकर दुनिया दिखाई, उस वक्त को मत भूलना,
भूलना सब कुछ मगर, माँ बाप को मत भूलना।

जब हुए पढ़ने के लायक, गुरु बन संस्कार दिए,
हर उन संस्कारों को, आजन्म तक मत भूलना,
भूलना सब कुछ मगर, माँ बाप को मत भूलना।

आज जब उनको जरुरत, साथ मत तुम छोड़ना
बनना है सहारा उनका, इस बात को मत भूलना
भूलना सब कुछ मगर, माँ बाप को मत भूलना।

अग्नि

रश्मि सुधीर

रश्मि सुधीर जी, जब से एडिसन पाठशाला आरंभ हुई तब से पढ़ा रही हैं। वे मध्यमा-१ स्तर की संचालिका भी हैं। रश्मि जी बच्चों को पढ़ाने के लिए रोचक एवं प्रभावी साधनों का प्रयोग करतीं हैं। उन्हें पिछले तीन वर्षों के ग्रीष्मावकाश में अमरीकी स्कूल और कॉलेज में हिंदी पढ़ाने का सौभाग्य भी मिला है। वे शिल्प-कला में भी निपुण हैं और 'कर्मभूमि' के लिए लेख लिखती रहती हैं। उन्हें हिंदी भाषा से विशेष प्रेम है और वे हिंदी यू.एस.ए. के सभी मुख्य कार्यक्रमों में हमेशा अपना योगदान देती रही हैं।

भारतीय संस्कृति में अनादि काल से अग्नि का अत्यंत महत्व रहा है। अग्नि देवता को सबसे महत्वपूर्ण, प्रभावशाली और सर्वप्रिय देवताओं में से एक माना जाता है। ब्रह्मांड में अग्नि का साकार रूप सूर्य है जो ज्ञान, प्रसन्नता और मन के उजाले का प्रतीक है। ऋग्वेदों में अग्नि देवता को इतना ऊँचा स्थान दिया गया है कि लगभग २०० स्त्रोतों में अग्नि देवता को संबोधित किया गया है। ऋग्वेद की दस पुस्तकों में से आठ में अग्नि देवता की प्रशंसा लिखी हुई है। प्राचीन समय से ही सभी यज्ञ, हवन, पूजा, वैदिक रीतियों केंद्र अग्नि ही रहा है। और इस सन्दर्भ में उन्हें एक उच्च पुरोहित का सम्मान दिया गया है। अग्नि के बिना होम-यज्ञ आदि अधूरे हैं। वेदों में अग्नि देवता का बहुत बढ़ा-चढ़ा कर वर्णन किया गया है, यहाँ तक कि उन्हें परमेश्वर और सृष्टिकर्ता भी माना गया है। अग्नि को इस लोक और परलोक, यानी कि हमारे और देवताओं के बीच का एक माध्यम या सन्देशवाहक भी माना गया है। वेदों के समय में यही विश्वास किया जाता था कि जो भी पूजा, यज्ञ, हवन, इच्छा, बलि अग्नि को स्वीकार होती थी वही देवताओं तक पहुँच पाती थी। यही नहीं, देवताओं के आशीर्वाद को पृथ्वी तक पहुँचाने का श्रेय भी अग्नि को जाता है। अग्नि में इतना तेज और बल होता है कि वह सत्य और असत्य की सही पहचान कर सकती है। इसका अस्तित्व अत्यधिक पावन माना जाता है। भारतीय संस्कृति में अग्नि देवता का साक्षी रूप बहुत महत्वपूर्ण है और इस बात से 'अग्नि-परीक्षा' जैसी प्रथाएँ जुड़ीं हुईं हैं। रामायण में भगवान राम द्वारा सीता जी की 'अग्नि-परीक्षा' करवाना तो सबको ज्ञात ही है। श्री राम और सुग्रीव ने अपनी मित्रता का प्रण भी अग्नि के तीन चक्कर लगाकर सुदृढ़ किया था।

आज भी पारंपरिक हिंदू-विवाह में वर-वधू पवित्र अग्नि को साक्षी मानकर उसके सात फेरे लेते हैं और आजीवन दाम्पत्य-धर्म निभाने का संकल्प लेते हैं। प्राचीन-काल से लेकर आधुनिक-काल तक किसी न किसी, छोटे-बड़े रूप में अग्नि हम सबके

अग्नि

जीवन का अभिन्न अंग बनी हुई है। ये सभी प्रथाएँ इसी विश्वास से उत्पन्न हुईं हैं कि अग्नि को पञ्चतत्वों में शुभतम और शुद्धतम तत्व माना जाता है। शरीर-रुपी पंचमहाभूत तत्वों में अग्नि प्रधान है। प्राचीन भारत की आयुर्वेद चिकित्सा-प्रथा के अनुसार अग्नि-देव हम प्राणियों के भीतर एक जैविक-ऊर्जा के रूप में पाचन, रस आदि प्रक्रियाओं को चलाने में मदद करते हैं। जब भोजन हमारे पेट में पहुँचता है तो अग्नि उसे पचाने के लिए ऊर्जा उत्पन्न करती है। यहाँ इन्हें 'जठराग्नि' का नाम दिया गया है। भारतीय संस्कृति में शरीर को एक हवन-कुंड का रूप दिया गया है जिसमें भोजन की आहुति पड़ने पर ऊर्जा की उत्पत्ति होती है। अग्नि ही एक ऐसा देवता है जिसे हम देख सकते हैं और वह भी पास से। पंचतत्वों में अग्नि सबसे अधिक प्रबल तत्व माना जाता है। इसमें प्रकाश और ऊर्जा दोनों ही होते हैं। वेदों के समय से ही इसकी अद्भुत शक्तिओं के कारण इसे पूजा जाता है। अद्भुत इसलिए कि इससे कई चीजें उत्पन्न भी होतीं हैं और यह कई चीजें आत्मसात करने की क्षमता भी रखती है, संसार के हित के लिए सब बुराइयों को अपने भीतर लेकर उनका नाश करती है। संसार में ऐसी कोई भी चीज नहीं है जो आग में नहीं जलती। जब भी कोई पदार्थ आग में जलता है तो उसके अणु परमाणुओं में विच्छेद/ विग्रह हो कर आस-पास के वातावरण में फैलकर उसे शुद्ध कर देते हैं। यज्ञ-हवन की अग्नि में चढ़ाने के लिए घी को सबसे अधिक उचित माना जाता है इसलिए भगवान की पूजा के लिए भी घी शुभ माना जाता है। हमारी भारतीय-संस्कृति का यह कहना है कि घी, अन्न, हवन-सामग्री जैसे पदार्थ अग्नि में भस्म होकर संसार को कई गुना अधिक लाभ पहुँचाते हैं। यह एक प्राकृतिक-क्रिया है जिसमें प्रकृति से प्राप्त वस्तुएँ वापस प्रकृति को ही लौट जातीं हैं और उसके नियम को बनाए रखने में मदद करतीं हैं। यही कारण है कि सूखा, अकाल आदि विपदाओं के समय वर्षा, अन्न की मनोकामना करते हुए अग्नि-कुंड में घी की आहुति दी जाती है। अग्नि की शक्ति अथवा सौर-ऊर्जा से ही पृथ्वी पर जीवन का संचरण होता है।

भारतीय-परंपरा के अनुसार अग्नि के दस रूप होते हैं:

१) साधारण आग

२) आकाश में चमकने वाली बिजली

३) सूर्य की ऊर्जा

४) पेट की पाचनकारक अग्नि (जठराग्नि)

५) विनाशकारी अग्नि (दावाग्नि), यह अग्नि पूरे संसार को भस्म कर सकती है और इससे संपूर्ण सृष्टि का अंत हो सकता है।

६) यज्ञ के लिए लकड़ी से पैदा की गयी आग

७) विद्यार्थियों के उपनयन-संस्कार पर दी जाने वाली ज्योति

८) गृहस्थी में काम आने वाली आग

अग्नि

९) दक्षिण दिशा में हमारे पूर्वजों की आत्मा की शांति हेतु रखी जाने वाली लौ

१०) दाह-संस्कार में जलाई जाने वाली अग्नि

भारतीय संस्कृति में अग्नि देवता को उचित सम्मान देने के लिए प्रयोजन के अनुसार अग्नि का मुख एक निश्चित दिशा की ओर रखा जाता है। जैसे, पूर्व दिशा देवी-देवताओं के सम्मान के लिए, दक्षिण दिशा पूर्वजों की आत्मा की शांति-पूजन आदि के लिए और पश्चिम दिशा घर-गृहस्थी के चूल्हे-चौके के लिए शुभ मानी जाती है।

अग्नि देवता अपने सभी उपासकों को समान रूप से देखते हैं और बदले में सभी उन्हें समान रूप से पूजते हैं। अग्नि का वास धनी-निर्धन, सभी के घरों में होता है। उसकी दृष्टि में कोई छोटा-बड़ा नहीं।

भारतीय संस्कृति में ऐसा माना जाता है कि संसार में जो कुछ नश्वर है वह अग्नि में समर्पित होकर अमरत्व को प्राप्त हो जाता है। अग्नि में वह शक्ति है जो मनुष्य के सभी दुष्कर्मों और पापों को जलाकर अंतिम गति देती है।

इस लेख को लिखने की प्रेरणा मुझे अपनी माँ से मिली जो हर सुबह रसोई में चूल्हा जला कर अग्नि देवता को पहले प्रणाम करतीं हैं तभी बाकी काम शुरू करतीं हैं। मुझे भी उनके इस नियम का पालन करना अच्छा लगता है।

One Stop Shop for All Your Needs of Natural Stones

ELEGANT

Granite & Marble Inc.

GRANITE
MARBLE
LIMESTONE
SLATE
ONYX

Custom Counter Tops • Vanity Tops • Tiles • Slabs

IN HOUSE FABRICATION • INSTALLATION • CUSTOM SIZES

Residential & Commercial

Shishir K. Agrawal B. Tech (Min), FCC

832 Ridgewood Avenue Bldg. # 3
North Brunswick, NJ 08902

Tel.: 732.247.2488
Fax: 732.247.2499

PERFECT SMILES DENTISTRY

101 S White Horse Pike / Rte. 30
Lindenwold, NJ 08021

- Modern Computerized Dental office for **Adults & Children**
- Provide **Comprehensive Dental Care** to Patients of All Ages
- Use Digital X-Ray Technology
- **Bi-Lingual** Staff (Spanish, Hindi)
- Most Insurances Accepted Including **HORIZION NJ HEALTH & AMERICHOICE State Insurance**
- Payment Plans Available Thru Care Credit
- Offer **Discounted Packages** for Adults & Children With No Insurance
- Immediate Appointments Available
- Emergency Appointments Available Daily
- **Evenings And Weekend Hours** Available

WALK-INS WELCOME
CALL FOR APPOINTMENT
856-566-7466

Our Bi-lingual (English/Spanish/Hindi) Administrative Staff Can Assist you in Making your Appointment
Mon. – Weds. (9am-5:30pm) Thurs. (10am-7pm) & Fri. (9am-4:30pm)

CONVIENTENTLY LOCATED ON THE CORNER OF EAST ELM AVE ACROSS FROM RICHIE'S TAVERN & WATER ICE FACTORY.

Consulte el reverso para Inglés

मोहनजोदड़ो व हड़प्पा

एक प्राचीन किन्तु विकसित सभ्यता

श्रीमती ऋचा खरे

"सिन्धु घाटी तथा प्राचीन भारत के दो प्रमुख नगर मोहनजोदड़ो व हड़प्पा"

इन शहरों की पुन: खोज १९२२ में "श्री राखल दास बंद्योपाध्याय", जो कि पुरातत्त्व विभाग के अफसर थे, ने की थी। १९३० के दौरान "सर जॉन मार्शल" के नेतृत्व में इसकी दोबारा खुदाई हुई। आज भी उनकी कार, यहाँ के अजायब घर में सुरक्षित रखी हुई है। शहर के अवशेषों को "यूनेस्को विश्व विरासत स्थल" नामित किया गया है।

मोहनजोदड़ो एक सिन्धी भाषा का शब्द है। इसके कई अर्थ हो सकते हैं। इसे "मोहन का गढ़" या "मृतकों का टीला" भी जाना जाता है। वहीं हड़प्पा का नाम हड़प्पा क्यों हुआ, इसका कारण अभी तक भी सामने नहीं आया है, परन्तु यह एक पंजाबी शब्द है। लगभग ६०० ई.पू. के आस-पास कुछ खानाबदोश समूहों ने सिन्धु घाटी के पश्चिमी पहाड़ी इलाके में बसना शुरु किया और धीरे-धीरे वहाँ "जौ" की खेती करना शुरु किया, जिसमें हंसिए व दराती का प्रयोग भी करते थे। इनके घर छोटी-छोटी व कच्ची ईंटों से बने होते थे। ५००० ई.पू. (B.C.) के बाद मौसम में बदलाव आने लगा। वर्षा अधिक होने से फसल अच्छी होने लगी। ४००० ई.पू. के बाद पशुपालन व व्यापार में वृद्धि हुई। इस समय से ही यहाँ मोती व शंख का व्यापार मध्य एशिया व खैबर के दर्रे से होने लगा। तभी तांबा व अन्य धातुओं का प्रयोग शुरु हुआ। २६०० ई.पू. के आस-पास ही यह सभ्यताएँ पनपने लगीं जो कि सिन्ध घाटी के आस-पास बसी 'मेसोपोटामिया व इजिप्ट' की भाँति ही विशाल थीं। २३०० ई.पू. तक ये पूर्णतः पनप चुके थे और मेसोपोटामिया से इनका व्यपार भी बढ़ने लगा था। हिमालय के निचले भाग से लेकर दक्षिण के मालवन तक इसका विस्तार हो रहा था। सत्तर से भी अधिक शहर बने, जिसमें से कुछ पुराने शहरों पर ही बने थे। ये शहर हिमालय के निचले भाग से लेकर दक्षिण मालवन तक फैले थे।

क्या ये पुरानी सभ्यताएँ विकसित थीं?

इन्हीं शहरों में एक था "मोहनजोदड़ो" जो कि सिन्ध नदी से २५० मील दूर अरब सागर के उत्तर में बसा था, और दूसरी तरफ हड़प्पा जो कि उत्तर में उपनदी से ३५० मील की दूरी पर बसा था। इन शहरों की आबादी ३५-४० हजार थी। यहाँ शिल्प निर्माण में मानक (standard) पकी हुई ईंटों का प्रयोग होता था। इन शहरों का निर्माण बड़े ही योजनाबद्द रुप से किया गया था। सड़कें विस्तृत व खुली हुआ करती थीं। शहर में बड़े बाजार थे जिनमें दुकानें, एक कतार में हुआ करती थीं। साधारणत: घरों में दो से तीन मंजिलें हुआ करती थीं, जिनमें ऊपरी मंजिल पर पहुँचने के लिये सीढ़ियाँ घर के अंदर से होकर जाती थीं। घरों में व पूरे शहर में पानी के निकास की उचित व्यवस्था होती थी, जो कि पश्चिम एशिया से बेहतर थी। कुछ घर काफी बड़े

मोहनजोदड़ो व हड़प्पा

व भव्य थे जिनमें बड़े-बड़े आँगन व बरामदे हुआ करते थे। नहाने के लिये बड़े कुण्ड होते थे जिनके पास चबूतरा हुआ करता था। मोहनजोदड़ो की एक इमारत के कुण्ड की भूमितल के नीचे भट्टि पाई गई जहाँ श्रृंगारगृह भी थे। ये इमारतें, यह बतलाती हैं कि उस समय कुण्ड में पानी गरम रखने के लिये ये भट्टियाँ बनाई गई थीं, जो कि आज के "हाट टब" या "हीटेड पूल" की तरह ही थी।

शहर दो भागों में विभाजित था, एक "किला" या "गढ़", राजा तथा उसके दरबारियों के लिये, और दूसरा निचला हिस्सा आम जनता के लिये। मोहनजोदड़ो व हड़प्पा में माप व वजन की परिष्कृत प्रणाली, अंकगणित व दशमलव का प्रयोग भी होता था। यहाँ अधिकांशत: कविता रेखाचित्र में बनाये जाते थे। मूर्तिका या लघु मूर्ति बड़ी ही संवेदनशीलता से बनाई जाती थी। जहाँ गेहूँ, चावल, राई, तिल व कपास की खेती की जाती थी तो पशु-पालन भी आम था, इसमें बिल्ली, कुत्ता, ऊँट, भेड़, सूअर, बकरी, भैंस, हाथी और मुर्गी हुआ करती थीं।

पुरातत्वविदों ने लेख या "लिपि" होने का कोई ठोस सबूत मिलने की पुष्टि नहीं की है। उनका मानना है कि कब्र के पास संक्षेप में लिखे लेख या लिपि को सबूत नहीं माना जा सकता है। परन्तु सोचने वाली बात यह है कि जहाँ अंकगणित, दशमलव, माप का प्रयोग होता था वहाँ लेख या लिपि का ना होना असंभव सा है।

कई बार यह भी कहा गया कि हड़प्पा में वैदिक धर्म था। खुदाई में मिले अवशेष (अग्नि संस्कार, वेदी व अग्निहोत्र का स्थान) वैदिक संस्कृति की तरफ संकेत करते हैं।

क्यों लुप्त हो गये "मोहनजोदड़ो" व "हड़प्पा"?

पुरातत्वविदों का मानना है कि मोहनजोदड़ो सात बार नष्ट होकर फिर बसाया गया, जिसकी वजह बाढ़ को माना जाता है। १८०० से १७०० ई.पू. में सिन्ध घाटी पर बसी यह सभ्यता नष्ट होती चली गई। अभी तक इसका ठोस कारण पता नहीं चला है, पर यह कहा जाता है कि सिन्धु नदी में पानी का स्तर बढ़ने और बाढ़ की वजह से यह शहर नष्ट होते चले गये। फसल की पैदावार कम होने से लोगों ने दूसरी जगहों पर ठिकाना ढूँढना शुरु कर दिया। धीरे-धीरे दूसरी जगहों के लोगों ने आकर यहाँ बसना शुरु कर दिया और मोहनजोदड़ो व हड़प्पा की सभ्यता लुप्त होती चली गई।

एक पुरातत्त्ववेत्ता (archaeologist) के अनुसार उन्हें मोहनजोदड़ो की खुदाई में मिले कंकाल रेडियोधर्मी पाये गये। खुदाई में ४४ बिखरे हुए कंकाल मिले जिन्हें देखकर प्रतीत होता है मानो अचानक हुए किसी धमाके की वजह से भाग न पाए हों। एक और बात देखी गई कि यह सारे कंकाल चपटे थे। दूसरी तरफ एक पिता, माँ व बच्चे का कंकाल मिला जो कि चपटे से थे और इन्होंने एक दूसरे के हाथ पकड़े हुए थे। यह सब किसी विस्फोट की तरफ संकेत करते हैं। इस रहस्यमय विस्फोट के अधिकेन्द्र (Epic -center) की चौड़ाई १५० फीट होगी। इस अधिकेन्द्र में बारीक-बारीक कणों को देखा गया तथा वस्तुएँ पिघली हुई पाई गईं। यह सब इस ओर इशारा करता है कि उस समय की वैज्ञानिक तकनीक काफी विकसित थी, पर इस बात की ठोस पुष्टि नहीं हुई है। १९८० के बाद इन पर कुछ विशेष खोज नहीं हुई है, जिस कारण कई और रहस्यों का खुलासा नहीं

मोहनजोदड़ो व हड़प्पा

हुआ है।

आज का "मोहनजोदड़ो" व "हड़प्पा"

१९४७ में भारत-पाकिस्तान विभाजन के बाद अब "मोहनजोदड़ो" पाकिस्तान के" लड़काना" जिले का हिस्सा है। १९९८ की गणना के अनुसार उस समय वहाँ की आबादी १,९२७,०६६ थी। "हड़प्पा" भी अब पाकिस्तान के उत्तर-पूर्व में "सहिबाल" जिले का हिस्सा है। यहाँ की आबादी लगभग १५००० है। आज भी यहाँ ब्रिटिश प्रशासन के दौरान बना ट्रेन स्टेशन है। यह एक छोटी सी जगह है जो अधिक विकसित नहीं है।

हड़प्पा से मिली मिट्टी की मूर्तियों का एक समूह

अनुलेख - यह लेख बहुत सारे शोध का संक्षिप्त संस्करण है। यदि इसमें कोई त्रुटि है तो कृपया क्षमा करें।

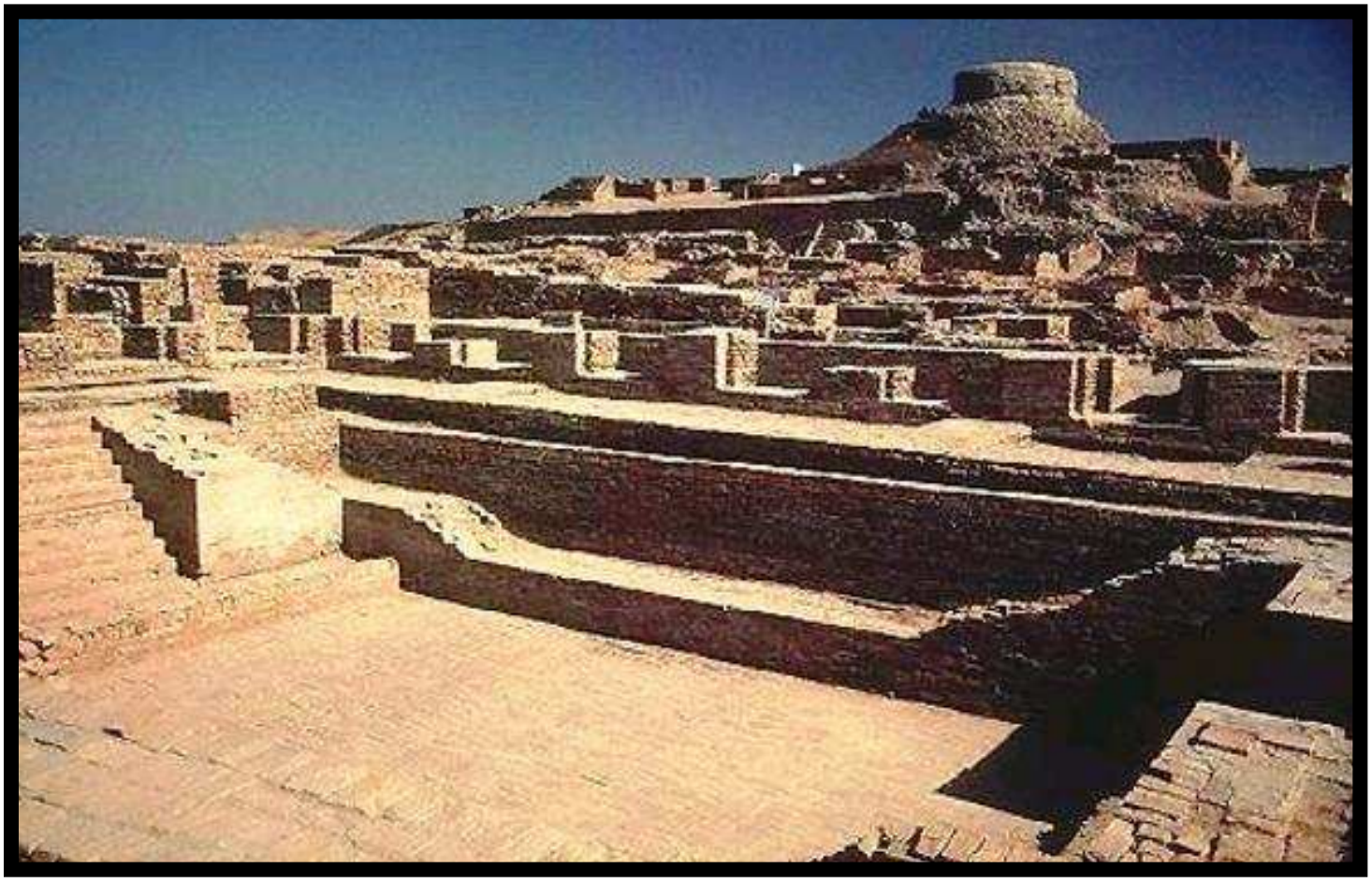

मोहन जोदड़ो के पुरातात्विक अवशेष

प्राचीन गुरुकुल आधारित ग्रीष्म कालीन शिविर

रत्ना पाराशर

प्राचीन काल से ही भारतीय संस्कृति में छोटी आयु में ही बच्चों को शिक्षा के लिए गुरुकुलों में भेजने की प्रथा रही है। प्राचीन काल में बाल्यावस्था में जात-पांत का भेदभाव किए बिना बच्चों को गुरुकुल भेजा जाता था जहाँ वे विद्या अर्जन के साथ-साथ विभिन्न कलाओं का ज्ञान प्राप्त करते थे। गुरुकुल का जीवन अत्यंत ही कठिन होता था जहाँ पर शिष्यों को एक कठिन दिनचर्या का पालन करना होता था।

कुछ वर्ष पूर्व मुझे ज्ञात हुआ कि कुछ संस्थाएँ भारतीय परिवेश में ग्रीष्म कालीन शिविर बच्चों के लिए लगता है। मैंने भी अपने बच्चों को अपनी संस्कृति से जोड़ने का एक प्रयास किया व उनका एक ग्रीष्म कालीन शिविर में पंजीकरण करवाया। शुरु में मुझे अत्यंत ही जिज्ञासा एवं कोतूहल था क्योंकि मुझे इस प्रकार के शिविर का कोई पूर्वानुभव नहीं था और बच्चे भी छोटे थे। पंजीकरण पश्चात् शिविर के संचालकों ने शिविर की गतिविधियों का विवरण हमें भेजा।

शिविर के प्रथम दिन ऐसा ही प्रतीत हुआ कि पुरातन गुरुकुल की परंपरा का आज के परिवेश में समागम की कोशिश की गई है। इस एक सप्ताह लम्बे शिविर में बच्चों को निर्धारित समय पर उठा दिया जाता है। प्रतिदिन प्रातःकाल यौगिक क्रियाओं से शुरु होता है। जलपान के पश्चात् बच्चे विभिन्न कक्षाओं में भेज दिए जाते थे। विभिन्न कलाओं का ज्ञान अर्जित करने के लिए, उदाहरण के लिए चित्र बनाना, लकड़ी पर गुदाई, कपड़े रंगना इत्यादि। छोटे बच्चों को परंपराओं से जोड़ता कथा समय का भी एक खंड होता है।

दोपहर के भोजन पश्चात् बच्चों को विश्राम दिया जाता है जिसमें वे शाम के सांस्कृतिक कार्यक्रम का अभ्यास करते हैं। विश्राम पश्चात् बच्चों को अपनी भारतीय क्रीड़ाओं जैसे कि कबड्डी, खो-खो, तैराकी इत्यादि में व्यस्त रखा जाता है। पूरे दिन में यह समय ऐसा होता है जिसमें बच्चे सबसे ज्यादा उत्साहित रहते हैं।

शाम के जलपान के बाद बच्चों के स्नान करने का समय होता है। स्नान पश्चात् बच्चे अपने भारतीय परिधानों में संध्या आरती करते हैं। आरती पश्चात् शाम का भोजन और भोजन पश्चात् सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन होता है। तत्पश्चात् सब अपने-अपने निर्धारित स्थान पर सोने चले जाते हैं।

भारत में प्राचीन काल में ऐसे कई विश्वविद्यालय जो गुरुकुल की शिक्षा विद्यार्थियों को देते थे| उनमें मुख्यतः तक्षशिला, नालंदा, उज्जैन थे। मुगलों के आगमन पश्चात् वे समाप्त हो गए। शिविरों में जाने से बच्चे बहुत ही आत्मनिर्भर बनते हैं। उनमें अपने लिए सम्मान एवं दूसरे के लिए सौहार्द की भावना पनपती है। ऐसे तो न्यूजर्सी में बहुत सी संस्थाएँ अपने शिविर आयोजित करती हैं। उपरोक्त शिविर अगस्त के महीने में विश्व हिन्दू परिषद द्वारा संचालित होता है।

भाषा और संस्कृति

सविता नायक

सविता जी ने हिन्दी में M.A. किया है। ये विश्व भाषा हिन्दी की प्रमाणित शिक्षिका (certified teacher) हैं और इन्होंने न्यू यॉर्क विश्वविद्यालय से 'स्टारटॉक शिक्षक प्रशिक्षण' भी पाया है। ये पिछले तीन वर्षों से 'हिन्दी यू.एस.ए' में बच्चों को हिन्दी पढ़ा रहीं हैं और वहाँ से इनको प्रथ्मा-2 स्तर की संचालिका और कर्मभूमि पत्रिका में शुद्धिकरण कार्य में योगदान का भी अनुभव है। ये ACTFL से OPI 'टेस्टर सर्टिफिकेशन' कर रहीं हैं। इन्होंने स्टारटॉक के कई कार्यक्रमों में स्कूल एवं कॉलेज के छात्रों को पढ़ाया है। इनको न्यू यॉर्क के सिटी कॉलेज में पढ़ाने का भी अनुभव है।

किसी भी देश की संस्कृति की झलक वहाँ रहने वाले लोगों की भाषा, उनके रहन-सहन, आचार-विचार, खान-पान और परिधान में झलकती है। परिवर्तन जीवन का नियम है। अतः कुछ बदलाव तो यदा-कदा देखने को मिलेंगे ही! उत्सुक मानव मन नई-नई बातें जानना चाहता है, कुछ रोचक या नया करना, कहना या सुनना चाहता है। अब भारत हो या अमेरिका, आये दिन कुछ न कुछ नया, अनोखा या अद्भुत तो विश्व भर के समाचारों में बहुत बार देखने सुनने को मिलता ही है। ऐसे में जब अमेरिका में रहने वाले भारतीय भारत जाकर वहाँ से वापिस आते हैं तो उनकी हर बार की यात्रा के बाद यह अवश्य सुनने को मिलता है कि "भारत में तो बहुत तेज़ी से सब बदल रहा है! वहाँ लोगों की वेशभूषा और आचार -विचार में परिवर्तन आता जा रहा है! वहाँ बच्चे 'बैले' सीख रहे हैं और यहाँ अमेरिका में भारतीय बच्चे शास्त्रीय नृत्य एवं संगीत सीख रहे हैं?!' जी हाँ, ऐसा हो तो रहा है। भारत में कुछ लोग सोचते हैं कि आजकल के प्रतिस्पर्धा वाले युग में मन वांछित कार्यसिद्धि या उज्ज्वल भविष्य के लिए उनको आधुनिक युग में पश्चिम के साथ कदम से कदम मिला कर चलना चाहिए। सभ्यता और संस्कृति के बारे में तो बचपन से देखते-सुनते आ रहे हैं?!...तो अब उस सब के लिए चेष्टा करना चाहते हैं जो नया है। और यहाँ अमेरिका में रहने वाले हम भारतीयों को यह चिंता रहती है कि कहीं हमारे बच्चे अपनी धरोहर, अपनी संस्कृति को भूल न जाएँ इसलिए हम चेष्टा करते हैं कि हमारे बच्चे अपनी राष्ट्र भाषा सीखें, शास्त्रीय नृत्य एवं संगीत सीखें, ख़ास अवसरों पर परंपरागत परिधान पहनें!

भारत में रहने वाले और यहाँ पर रहने वाले हम सभी शायद अपनी-अपनी जगह पर सही हैं। एक बार किसी को पंजाबी में यह कहते सुना था कि "जग दी पसंद दा पाना, अपनी पसंद दा खाना" यानि कि जो सबको भाये वैसा पहनना चाहिए, और जो स्वयं की रुचि का हो वैसा भोजन करना चाहिए! अपनी रुचि का भोजन करना आत्म संतुष्टि की बात है और इस पर कोई आपत्ति नहीं करता और अगर सभ्य पोशाक पहनी जाए, जिसमें नग्नता नहीं है, तो वह चाहे पश्चिमी ढंग की हो या परंपरागत ढंग की, अच्छी लगती है और उस पर भी कोई आपत्ति नहीं करता। नृत्य और संगीत की कोई भाषा नहीं होती, यह सबके मन को भाता है इसलिए हर तरह के और हर देश-प्रदेश के संगीत, वाद्य यंत्र और सरगम की सराहना की जाती है।

भाषा और संस्कृति एक दूसरे के पूरक हैं और

भाषा और संस्कृति

इनका आपस में अटूट संम्बंध है। इसी बात के अंतर्गत अब अगर हम भाषा की बात करें तो सभी सर्व सम्मति से मानेंगे कि अपनी मातृभाषा का ज्ञान सभी को होना चाहिए। जब कोई भारतीय कोई कारण बताकर यह कहता है कि 'मुझे (इस कारण से...) हिंदी नहीं आती' तो बात समझ में आती है, लेकिन जब कोई बिना कारण के यही बात कहकर कंधे उचका देता है तो बहुत आश्चर्य होता है। अंग्रेजी भाषा का हम सब पर ऐसा प्रभाव है कि अधिकतर लोग अंग्रेज़ी बोलने-समझने वालों को अधिक ज्ञानी मानते हैं। इस प्रभाव के कारण कुछ लोग जो हिंदी बोलते भी हैं वे हिंदी बोलते वक्त उसमें अंग्रेज़ी शब्दों का भरपूर प्रयोग करते हैं। आप जान नहीं पायेंगे कि आप हिंदी सुन रहे हैं या अंग्रेज़ी! ऐसी हिंदी भाषा को 'यह हिंगलिश है' ऐसा तर्क देकर लोग गर्व से बोलते हैं, लिखते हैं। बहुत कम पत्रिकाएँ और समाचारपत्र ऐसे हैं जोकि गर्व से कह सकें कि वे हिंदी में लिखते हैं। इसमें किसी एक का नहीं, हम सभी का कुछ न कुछ दोष है।

सार्वभौमिक शब्दों का अल्प प्रयोग तो समझ में आता है और उचित भी लगता है लेकिन बिना अंग्रेज़ी के एक वाक्य भी न बोल पाना तो उचित नहीं लगता। लेकिन जाने-अनजाने हम निरंतर ऐसा करते है! "आज मेरा 'मूड' ठीक नहीं है," "आजकल इतनी 'पोल्यूशन' है कि 'बरीदिंग' करना मुश्किल हो गया है," "हमारे घर 'गेस्ट' आ रहे हैं इसलिए 'मार्किट' से कुछ 'स्नैक' लेने जाना है," "मैं 'आउट ऑफ सिटी' था, आज ही 'अराइव' किया" "मेरे बेटे का 'बर्थडे' है, उसके 'फ्रेंडज़' के लिए 'गुडी बैग' लेने जाना है" .... हैं न जाने पहचाने वाक्य! मुझे आश्चर्य तो तब हुआ जब मैंने पिछले दिनों एक महिला को अंग्रेज़ी वाक्य में हिंदी शब्द का प्रयोग करते सुना। हुआ यूं कि एक महिला जो कपड़े धोने का पाउडर न लेकर उसे द्रव रूप में लेना चाहती थीं, वो अपने पति से कह रहीं थीं "आई डोंट वांट दिस पाउडर डिटर्जेंट बिकाज़ वेन आई पुट पाउडर इट स्टिक्स टू 'कपड़ा'! मुझे लगता है कि बोलने वाला स्वयं यह नहीं जान पाता कि वह कितना हास्यास्पद लग रहा है। क्यों न हम अंग्रेज़ी बोलते वक्त अंग्रेज़ी शब्दों का प्रयोग करें और हिंदी बोलते वक्त अधिकतर हिंदी शब्दों के प्रयोग की चेष्टा करें!

विश्व भर में सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषाओं में आज हिंदी बहुत आगे आ चुकी है। इतना तो सर्वविदित है कि हिंदी यू.एस.ए. एवं ऐसी कुछ और संस्थाओं, विद्यालयों, विश्वविद्यालयों, मंदिरों इत्यादि कई स्थानों पर हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए कक्षाएँ चलाई जा रहीं हैं। राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी हिंदी के शासकीय, सामान्य एवं

भाषा और संस्कृति

सार्वजनिक उपयोग को समझ कर इसके प्रचार-प्रसार के लिए बहुत कार्य हो रहा है। पिछले २-३ वर्षों से हिंदी एवं कुछ अन्य भाषाओं जैसे उर्दू, चीनी, अरबी, फारसी, स्वाहिली, तुर्की इत्यादि के प्रचार एवं प्रसार की आवश्यकता को समझते हुए अमेरिका में 'स्टारटॉक' के अंतर्गत संघीय सरकार से वित्त पोषित कई कार्यक्रम हो रहे हैं।

यह मेरा सौभाग्य है कि 'स्टारटॉक' के ऐसे ही कार्यक्रम की वजह से मुझे २००८ में हुए न्यू यॉर्क विश्वविद्यालय के प्रथम वर्ग में हिंदी का 'शिक्षक प्रशिक्षण' पाने का अवसर मिला। इस प्रशिक्षण के कुछ महीनों के बाद मैंने हिंदी यू.एस.ए. के बारे में जाना और मुझे इस संस्था के नि:स्वार्थ, परिश्रमी स्वयंसेवकों के साथ मिलकर कार्य करके हिंदी के साथ जुड़े रहने का अवसर मिला। उसके पश्चात् हमने 'स्टारटॉक' के सौजन्य से गर्मी की छुट्टियों में बच्चों को हिंदी पढ़ाने का दस दिवसीय कार्यक्रम किया और तत्पश्चात् मुझे शिकागो सम्मेलन में भाग लेने का अवसर मिला। सम्मेलन में विभिन्न स्तरों पर आधारित पाठ्यक्रम, लक्षित भाषा का शत-प्रतिशत उपयोग, सभी धारणाओं व कार्यप्रणालियों को ध्यान में रखते हुए अपनी धरोहर को बनाये रखने का प्रयास करना, अनुदेशात्मक नीतियाँ, मूल्यांकन, कार्यक्रम की सफलता के लिए शोध करना, संचालन, शिक्षकों की उन्नति व उनके नेतृत्व के गुणों के विकास के लिए प्रयास इत्यादि महत्वपूर्ण विषयों पर चर्चाएँ हुईं जिससे बहुत कुछ सीखने को मिला। वहाँ मैंने एक चीनी भाषी को हिंदी बोलते सुना और पूछने पर पता चला कि वह विश्वविद्यालय में हिंदी पढ़ाती हैं।

पिछले दिनों मेरी हिंदी कक्षा के एक छात्र ने जोकि सिक्किम से है मुझे बताया कि 'कॉलेज आते वक्त कुछ लोगों को हिंदी में बातें करते सुना, मुझे सब समझ आ रहा था, मुझे बहुत अच्छा लगा और मैं खुश हो गया कि अब मेरे लिए हिंदी समझना आसान है!' कुछ दिन पहले एक सज्जन ने जोकि श्रीलंका से हैं, पूछा कि 'क्या गैर भारतीय बच्चे आपकी हिंदी कक्षा में हिंदी पढ़ने आ सकते हैं?' मैंने बताया कि ज़रूर आ सकते हैं! आज हिंदी यू.एस.ए. के विभिन्न विद्यालयों में साढ़े तीन हज़ार से अधिक विद्यार्थी शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं। यह अपने आप में एक बहुत बड़ी बात है।

कविवर भारतेंदु जी के शब्दों में...

निज भाषा उन्नति अहै सब उन्नति को मूल।
बिन निज भाषा ज्ञान के मिटे न हिय को सूल॥

आज जब हर कोई हिंदी भाषा के महत्व को समझ रहा है तो क्यों न हम सब भी इसके प्रचार-प्रसार में अपना भरपूर योगदान दें। अपने बच्चों को हिंदी सिखाएँ या हिंदी सीखने भेजें, अपना कुछ समय निकालकर स्वयंसेवक बनें और हिंदी के प्रचार-प्रसार के इस कार्य में अपना योगदान दें।

भारतीय पारंपरिक चित्रकला

प्रतिभा प्रवीण राजू (पिस्काटवे हिंदी पाठशाला)

भारत की यह चित्रकला आरम्भ हुई दक्षिण भारत के कर्नाटक राज्य मैसूर नाम के शहर में। इसलिए यह मैसूर चित्रकला भी कही जाती है। मैसूर चित्रकला विद्यालय की स्थापना, राजा ओडायर ने सन १५७८-१६१७ ऐ.डी. में की थी। मैसूर राजमहल के कलाकार क्षी.सुब्रमन्य राजु और कई कलाकारों के चित्र मैसूर राजमहल में हैं। क्षी.सुब्रमंन्य राजू और इनके पुत्र क्षी. कृष्णानंद राजू का मैसूर चित्रकला में बड़ा योगदान रहा है। यह चित्रकला आज भी कर्नाटक के कई चित्रकला विद्यालयों में सिखाई जाती है।

इस चित्रकला का विषय धार्मिक और पौराणिक भारतीय कहानियों पर आधारित होता है। बारीक रेखाएँ, और चमकीले रंगों का विचारशील उपयोग और चमकदार सोना मैसूर चित्रों को आकर्षक बनाता है।

यह चित्रकला कलाकार के परिवार में एक से दूसरी पीढ़ी को सिखायी जाती है। मैसूर चित्रकला कॉलेज शिक्षा में भी एक महत्वपूर्ण पाठ्यक्रम है। इन चित्रों में शुद्ध सोने का प्रयोग किया जाता है। सोने को एक पतले कागज़ के रूप में बनाया जाता है। इसे बहुत नाजुकता से चित्रों पर उपयोग किया जाता है। मैं पिछले दस वर्षों से इस प्रकार के चित्र बना रही हूँ। यह कला मैंने अपने पिताजी क्षी. कृष्णानंद राजु से और कर्नाटक चित्रकला परीषत कालेज़ में बी.फ़्.ए की पढ़ाई में सीखी है। यह चित्रकला करने में मुझे बहुत आनन्द आता है। इस प्रकार हम अपनी संस्कृति से जुड़े रहते हैं।

मैं हिन्दी यू.एस.ए. को धन्यवाद देना चाहूँगी क्योंकि इस माध्यम से मैं यह चित्रकला आपके साथ बाँट रही हूँ।

चित्र १- इस चित्र में भगवती दुर्गा दानव महिषासुर का वध कर रही हैं।

चित्र २- इस चित्र में भगवान राम, सीता, लक्ष्मण और हनुमान का चित्रण है।

गोरक्षा

सुशील अग्रवाल

हम बचपन से सीखते आ रहे हैं, "गाय हमारी माता है।" भारत में प्राथमिक स्तर पर ही गाय पर प्रस्ताव लिखने के लिए पहली पंक्ति यही लिखी जाती थी। सम्पूर्ण भारत में सभी हिन्दू, गाय को माँ का दर्जा देते हैं। हमारे संस्कार ही हैं जिनके कारण हम केवल जन्म देने वाली माँ के लिए ही "मदर्स डे" नहीं मनाते बल्कि हम तो और माँओं को भी पूजते हैं, जैसे: हम नदियों को माँ कहते हैं, तीन देवियों, तथा दुर्गा को माँ के रूप में पूजा जाता है। इन सब में गऊ माता सर्वोपरि है।

पूजनीय गो माता हमारी ऐसी माँ है जिसकी तुलना न कोई देवी-देवता कर सकता है और न ही कोई तीर्थ। गो माता को चराने के लिए तो स्वयं भगवान श्री कृष्ण नंगे पाँव जंगल-जंगल घूमते रहे। श्री कृष्ण तो स्वयं भी "गोपाल" नाम से प्रचलित हुए। गोपाल अर्थात् गो की पालना करने वाला। भगवान कृष्ण ने तो जैसे गौ रक्षा के लिए ही गोकुल में अवतार लिया हो। गो माता के रोम-रोम में देवी-देवताओं का एवं समस्त तीर्थों का वास है। भविष्य पुराण में लिखा है, गो माता के पृष्ठदेश में ब्रह्म का वास है, गले में विष्णु का, मुख में रुद्र का, मध्य में समस्त देवताओं और रोमकूपों में महर्षिगण, पूँछ में अन्नत नाग, खूरों में समस्त पर्वत, गौमूत्र में गंगादि नदियाँ, गौमय में लक्ष्मी और नेत्रों में सूर्य-चन्द्र हैं।

जैसे कि हमारे धर्म में पितरों के पूजन की प्रथा है, कहा जाता है यदि तन-मन से गौभक्ति व गोसेवा की जाए तो पितरों को प्रसन्न करने के लिए यह सबसे बढ़ा यज्ञ होगा।

गो माता से प्राप्त अमृतमय दूध व उससे बना घी वैज्ञानिक रूप से भी सर्वश्रेष्ठ माना जाता है। आयुर्वेद में गोमूत्र का भी महत्त्व बताया गया है। आज भी भारत के गाँवों में गाय के गोबर से फर्श को लीपा जाता है। किसी भी अन्य जानवर का विसर्जन इस प्रकार प्रयोग में नहीं लाया जाता। गाय के गोबर से बनी गोबर गैस तो भारत में बहुत ही प्रचलित है। गाँवों में वर्षों पहले भी और आज भी गाय के गोबर से उपले बनाकर उनसे चूल्हा जलाया जाता है, जो सभी ग्रामवासियों के लिए सरलता से उपलब्ध हो जाता है।

आज के इस अर्थ युग में भारत में सामाजिक एवं धार्मिक क्षेत्र में समर्पित भाव से कार्य करने वाले

गोरक्षा

लोगों की कमी नहीं है। ये भारत के सनातनी संस्कार ही हैं, जिनके रहते भारतीय आज भी गो माता को पूजते हैं।

बहुत दुःख होता है देखकर कि सम्पूर्ण भारत में सभी हिन्दू, गाय को माँ का दर्जा देते हैं। गो माता की जय बोलते हैं, उसकी देखरेख तथा सेवा करके उसके दूध का सेवन करते हैं परन्तु अंत में जब उसकी मृत्यु होती है, तो उसके शरीर को खुले मैदान में पशु-पक्षियों के हवाले कर देते हैं जो अत्यंत निदंनीय है।

इन भावनाओं से प्रेरित होकर मेरे पिताजी श्री उमाशंकर अग्रवाल जी ने अपनी पालतू गाय "मीना" की मृत्यु पर विधि-विधान से अंतिम कार्य (भूमि के अंदर समर्पित) कर परिवार के सदस्य की तरह कन्याभोज, ब्राह्मण भोज और तेरहवाँ इत्यादि संपन्न किया। साथ ही उसकी समाधि स्थल पर एक सुन्दर गाय के मंदिर का निर्माण किया, जिसमें यथाशीघ्र गाय की मूर्ति की स्थापना शेष है। मेरे पिताजी की इच्छा है कि भारत जैसे देश में गाय को राष्ट्रीय पशु घोषित किया जाए। उन्होंने अपनी भावना को राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, मुख्यमंत्री इत्यादि सहित अनेक जनप्रतिनिधियों को भी पत्र लिखे। साथ ही आमजन से अपील की, कि अपनी पालतू गाय माता के देहान्त पर उसे भूमि में अवश्य समाधिस्थ करें। परन्तु खुलें में गाय के शरीर को न फेकें।

आज हम सभी यह प्रण लें कि जिस प्रकार हम सब भारतीय गाय को बचपन से माता की भाँति पूजते आए हैं, उसी प्रकार हम यह संस्कार आने वाली पीढ़ी को धरोहर के रूप में दें। भारत में प्लास्टिक की थैलियों का प्रयोग न करने के अभियान का सहयोग करें। गोरक्षा के लिए अपनी सामर्थ्य के अनुसार योगदान दें।

दिसम्बर २००८: हिंदी यू.एस.ए. के विद्यार्थियों को, भारत यात्रा के दौरान, गौ माता की महिमा समझाते हुए बाबा सत्य नारायण मौर्य जी।

जिज्ञासा

प्राची सिंह परिहार

प्राची सिंह परिहार हिन्दी यू.एस.ए. की भूतपूर्व छात्रा एवं युवा कार्यकर्ता हैं। ये हिन्दी यू.एस. से पहले हिन्दी महोत्सव से जुड़ी हुई हैं, और सबसे पहली स्नातकों में से एक हैं। इनमें नेतृत्व की असीम क्षमता है, और हिन्दी यू.एस.ए. के सभी कार्यक्रमों में बढ़-चढ़ कर भाग लेती हैं। ये प्रिंस्टन विश्वविद्यालय में द्वितीय वर्ष की मेधावी छात्रा हैं, और गणित तथा भौतिक शास्त्र इनके प्रिय विषय हैं।

आज जब कर्मभूमि के लिए यह लेख लिखने बैठी तो मुझे अपना बालपन याद आ गया। मेरा जन्म अमेरिका में ही हुआ था, और मैं भी यहीं की अमेरिकन इंडियन संस्कृति में पली-बढ़ी। आज मैं विश्वविद्यालय की छात्रा हूँ तथा "'हिन्दू सत्संग'" की अध्यक्षा हूँ। मैंने अनुभव किया है कि मेरे साथ के बहुत से हिंदू बच्चों को छोटी-छोटी बातों का अर्थ नहीं मालूम, जिसका परिणाम यह है कि वे भारतीय संस्कृति को अपनाने में शर्माते हैं। मैं इनमें से बहुत सारी बातों को जानती हूँ, और इसका श्रेय मेरे माता-पिता तथा बाल-विहार को जाता है।

मैं जब छोटी थी तो हमेशा ही मेरे मन में कुछ प्रश्न उठते थे। शायद आज वही प्रश्न आपके बच्चों के मन में भी उठते हों, परंतु कभी-कभी वे शर्मीले या लापरवाह होने के कारण आपसे पूछते न हों, और ये प्रश्न जीवन भर प्रश्न बनकर ही उनके मन में रह जाएँ। कभी-कभी माता-पिता को भी उत्तर मालूम नहीं होते और वे बच्चों को संतुष्ट नहीं कर पाते। मैं यहाँ पर कुछ सामन्य प्रश्न जो मुझे याद आ रहे हैं, लिख रही हूँ, शायद आपके काम आएँ।

हम नमस्ते क्यों करते हैं?

"नमस्ते" द्वारा हम अपने से बड़ों और बराबर वालों को अभिवादन करते हैं। संस्कृत में नमः + ते का अर्थ है मैं तुम्हें नमन करता हूँ, प्रणाम करता हूँ और हृदय से तुमसे मिलता हूँ। इसका एक अर्थ और है।

'ना मा' अर्थात् मैं नहीं हूँ। यह आध्यात्मिक अर्थ है जो अतिथि या आगंतुक को अपने से ऊँचा स्थान देता है, तथा स्वयं के अहंकार को नष्ट करता है।

हम नमस्ते करते समय अपने हाथ की हथेलियों को आपस में मिलाकर हृदय के सामने रखते हैं, तथा सिर को झुकाते हैं। यह इस बात का सूचक है कि हम अगले व्यक्ति से हृदय और मन मिलाने में विश्वास रखते हैं, तथा अपनी विनम्रता दिखाते हैं।

हम 'राम-राम'", 'जय श्री राम', 'जय श्री कृष्ण', 'राधे -राधे' या 'हरि ओम' आदि क्यों कहते हैं?

यह भी अभिवादन करने का एक ढंग है, और इसका अर्थ और भी गहरा है। हिंदू धर्म के अनुसार हम यह मानते हैं कि प्रत्येक जीव में आत्मा है, और आत्मा, परमात्मा का ही अंश है, रूप है। इसलिए हम दूसरे व्यक्ति के अंदर रहने वाले परमात्मा को उसी के नामों से प्रणाम करते हैं।

जब बच्चे नमस्ते का असली अर्थ जान जाते हैं तो नमस्ते केवल दिखावे की शारीरिक क्रिया न होकर सौहार्दपूर्ण वातावरण में आपसी प्रेम बढ़ाने का

जिज्ञासा

माध्यम बन जाता है। इसके अतिरिक्त अर्थहीन 'हाय' से अर्थपूर्ण 'नमस्ते' कितने गुना उच्च स्तर का अभिवादन है यह बच्चों को बताने की आवश्यकता नहीं पड़ती।

हम अपने माता-पिता तथा परिवार के बड़ों के 'चरणस्पर्श' क्यों करते हैं?

भारतीय संस्कृति में अपने से उम्र में बड़े परिवार जनों के, ज्ञान में बड़े गुरुजनों के, तथा गुणवान और आध्यात्मिक व्यक्तियों के चरण स्पर्श करने की परंपरा है। यह परंपरा दो पीढ़ियों की दूरियों को दूर करती है, और छोटों को बड़ों का आदर और मान करना सिखाती है। जब बड़े प्रेम-वश छोटों को आशीर्वाद देते हैं तो एक धनात्मक ऊर्जा उनके शरीर में प्रवाहित होती है, जो ऊपर से नीचे की ओर गतिमान होकर छोटों की शक्ति को बढ़ाती है।

हम टीका या बिंदी क्यों लगाते हैं?

पारम्परिक टीका, चंदन या कुमकुम का लगाया जाता है। जैसा कि हम सभी जानते हैं कि टीका हमेशा दोनों भौंहों के बीच आज्ञाचक्र के स्थान पर लगाया जाता है। सारे दिन के कार्यों का विचार हमारे मस्तिष्क से होता है, तथा परिणाम स्वरूप आज्ञाचक्र में विद्युत चुम्बकीय तरंगें उत्पन्न होती हैं, जो ढेर सारी ऊर्जा तथा उष्मा भी उत्पन्न करती हैं, जिससे सिर दर्द की समस्या हो सकती है। लेकिन चंदन और कुमकुम माथे को ठंडक प्रदान करते हैं। चिपकाने वाली मखमल की बिंदी केवल सुंदरता और अपनी पहचान के लिए है।

पुस्तकों, कॉपियों या कागज को पैर लगाना बुरा क्यों माना जाता है?

हिन्दुओं के लिए ज्ञान और विद्या का स्थान सर्वोच्च होता है। वे इसे पूज्यनीय तथा आदरणीय मानते हैं। यही कारण है कि हम न केवल पुस्तकों बल्कि ज्ञान से संबंधित किसी भी वस्तु को पैर नहीं लगाते, तथा नीचे धरती पर भी नहीं फेंकते।

किसी भी छोटे या बड़े व्यक्ति को पैर से छूना बुरा क्यों माना जाता है?

जैसा कि पहले बताया गया है कि मनुष्यों के शरीर में भगवान आत्मा के रूप में रहते हैं, और जब मानव शरीर भगवान का जीवित घर है तो इसे पैर कैसे लगा सकते हैं?

(पूजा से संबंधित बच्चों के प्रश्न अगले अंक में).....

दिशाओं का महत्त्व

श्रीमति मोती मेहरोत्रा

श्रीमति मोती मेहरोत्रा जी को बचपन से ही सत्संग व धार्मिक पुस्तकों के अध्ययन में विशेष रुचि रही है। आपने बचपन में ही गीता, उपनिषद् आदि की परीक्षाएँ उतीर्ण कर ली थीं। आपने स्वामी हरिहर जी महाराज से दीक्षा ली और अपने पति के साथ जिस देश में रहीं सत्संग के माध्यम से गुरु द्वारा दिए गए ज्ञान को लोगों में बाँटने लगीं। आपने भारतीय संस्कृति सम्बंधित पुस्तकें भी लिखी हैं।

भारतीय संस्कृति में दिशाओं पर विशेष ध्यान दिया जाता है। पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण इन दिशाओं की क्या विशेषता है? किसी मंदिर का द्वार पूर्व दिशा में ही क्यों रखा जाता है? ध्यान या चिंतन के समय हमारा चेहरा किस दिशा में होना चाहिये? हमें सबसे पहले यह जानना है कि दिशाओं का जीवन में महत्त्व है क्योंकि दिव्यता किसी भी ओर हो सकती है। हमारे लिए दिशाओं का भौतिक या बाह्य रूप उतना महत्त्वपूर्ण नहीं जितना उनका आध्यात्मिक या यौगिक अर्थ और अभिप्राय। हमारा मुख किस दिशा में है यह इस बात पर आधारित होता है कि हम कहाँ हैं और कहाँ जाना चाहते हैं। अतः हमें इस बात पर ध्यान देने की आवश्यकता है कि हम कहाँ हैं, हममें किन गुणों या विशेषताओं की कमी है और सबसे अधिक आवश्यकताएँ क्या हैं? भगवान ने हमें एक अद्भुत मन का विभाग दिया है जिसमें इस प्रकार के विचारों को जाग्रत करने की आवश्यकता है। इस अमूल्य उपहार का अपव्यय ना करें। आज हमारी शक्तियाँ उस गंदगी को साफ करने में खर्च हो जाती हैं जो हम फैलाते रहते हैं जबकि हमें उसे स्पष्ट दृष्टिकोण के विकास में और आध्यात्मिक पथ पर बढ़ते हुए जीवन के उद्देश्य की खोज में व्यय करना चाहिए।

पूर्व सूर्योदय की दिशा है। यह सौन्दर्यपूर्ण ऊषा के साथ प्रकाश, लालिमा और ऊष्मा भी लाती है। सूर्य जब हमें जगाता है तो जीवन और प्रकाश दोनों देता है। अतः जब हम पूर्व की ओर मुँह करके ध्यान में बैठते हैं तो हमें यही प्रार्थना करनी है कि ज्ञान की किरणें शरीर के एक-एक रोम में प्रवेश कर जाएँ। जब सूर्य की किरणों का किसी लेंस पर संगम होता है तो वह बड़ी सरलता से किसी कागज के टुकड़े को जलाकर उसमें छिद्र कर देता है। ठीक इसी प्रकार ज्ञान की किरणें एकाग्र मन के शक्तिशाली केंद्र पर प्रस्फुटित हो एक ऐसा छिद्र कर दें जिससे हम अपने अंदर झाँक कर देख सकें। अतः यदि ज्ञान और आंतरिक प्रबोधन चाहिए तो पूर्व दिशा मुँह करके बैठें।

उत्तर दिशा ध्रुव तारे की ओर निर्देश करती है। भौतिक जगत में वही एक वस्तु है जो बदलती नहीं है। अतः उत्तर दिशा हमारी स्थितप्रज्ञता का प्रतीक है। यदि जीवन में शांति और आनंद की

दिशाओं का महत्त्व...

प्राप्ति करनी है और अपने अभ्यास में स्थिरता और दृढ़ता लाना चाहते हैं तो ध्यान करते समय उत्तर दिशा में मुँह करके बैठें।

पश्चिम दिशा हमारे शरीर के पिछले भाग यानी पीठ की पहचान है। पिछले भाग में रीढ़ की हड्डी है जो पूरे शरीर को सहारा देकर सम्हालती है। यों कह सकते हैं कि पश्चिम सहारे का पर्यायवाची है। यदि उसे ग्रहण करने की, उसे सम्भालने और उसकी गति को रोके रहने की शक्ति की हमारे में कमी है तो पश्चिम ही हमारा दिशा निर्देश होना चाहिए। हमारे ऋषियों मुनियों द्वारा प्रदान की हुई जीवनी शक्ति जो हमारी धमनियों में रक्त प्रवाहित कर रही है। पश्चिम की ओर मुँह करने से वह हमें उसे आत्मसात् करके रोकने, स्थिर रखने और उसका विकास करने में सहायता करती है।

दक्षिण दिशा को सांसारिक विषयों के लिए शुभ या पवित्र दिशा नहीं माना गया है। यहाँ तक कि उसे मृत्यु के साथ जोड़ा गया है। इसे यमराज की दिशा कहा गया है। आध्यात्मिक क्षेत्र में दक्षिण का विशेष अभिप्राय या अर्थ है। यदि दक्षिण दिशा में बैठकर ध्यान करें तो अपने सबसे बड़े शत्रु अहंकार को मार सकते हैं या उसे जीत सकते हैं, अतः जिसमें साहस और शक्ति है उन्हें इसे चुनना चाहिए। दक्षिण को एक ऐसी दिशा समझा जाता है जो अन्य सभी दिशाओं का दिशा निर्देश करती है।

बृजेन्द्र श्रीवास्तव "उत्कर्ष"

शैक्षिक योग्यता: एम.ए., बी.एड., आई.जी.डी., पत्रकारिता एवं जनसंचार में स्नातकोत्तर डिप्लोमा।

साहित्य लेखन: श्रांगार और हास्य-व्यंग के युवा हस्ताक्षर। गीत, गजल, कविताएँ, हास्य-व्यंग और सम-सामयिक के विभिन्न राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित। राष्ट्रीय कवि सम्मेलनों एवं काव्य गोष्ठियों में कविता पाठ।

नया सबेरा

नए साल का, नया सबेरा,
जब, अम्बर से धरती पर उतरे,
तब शान्ति, प्रेम की पंखुरियाँ,
धरती के कण-कण पर बिखरें,

चिड़ियों के कलरव गान के संग,
मानवता की शुरू कहानी हो,
फिर न किसी का लहू बहे,
न किसी आँख में पानी हो,

शबनम की सतरंगी बूँदें,
बरसे घर-घर द्वार,
मिटे गरीबी, भुखमरी,
नफरत की दीवार,

ठण्डी-ठण्डी पवन खोल दे,
समरसता के द्वार,
सत्य, अहिंसा और प्रेम,
सीखे सारा संसार,

सूरज की ऊर्जामय किरणें,
अन्तरमन का तम हर ले,
नई सोच के नव प्रभात से,
घर-घर मंगल दीप जलें

बच्चे जिन्हें हम करते हैं, जान से भी ज्यादा प्यार

आइये उन्हें दें, अपनी मातृभाषा का उपहार

SANKAT MOCHAN HANUMAN MANDIR, USA

Old Bridge, New Jersey • Tax Exempt (501) (c) (3) Non-profit Organization

संकट कटै मिटै सब पीरा जो सुमिरै हनुमत बलबीरा

The only OBJECTIVE of this Sankat Mochan Hanuman Mandir USA is to HELP people in SANKAT and FULFILL their MANORATH.

The name ***Sankat Mochan*** was given by
Saint Tulsidas to Hanuman Ji as he helped *Shri Ram Ji* in his Sankat.

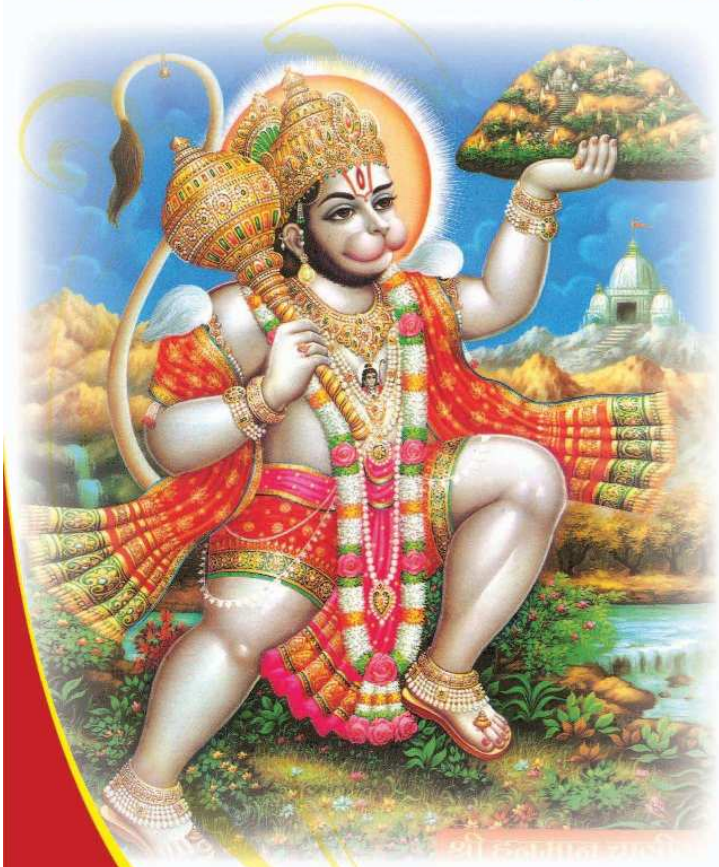

Be Part of Building the First Sankat Mochan Hanuman Mandir by

DONATING A BRICK-A-MONTH & SET YOUR NAME IN STONE.

For just $25 per month, you can be part of this Program.

For details visit
www.hanumantempleusa.org
or send email to
info@hanumantempleusa.org

Donate online at **www.HanumanTempleUsa.org**

Your generous donations are tax deductible.

For more information email info@hanumantempleusa.org
or call **Mangal Gupta 732 234 6682**

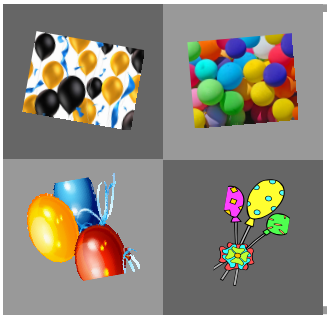

मेरा अनुभव

मेरा नाम अनुषा अग्रवाल है। मैं सातवीं कक्षा की छात्रा हूँ, और साउथ ब्रुन्सविक में रहती हूँ। मैं पिछले चार साल से हिन्दी सीख रही हूँ। मुझे लिखना, तैरना, और गाने सुनने का बहुत शौक है।

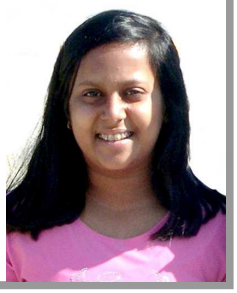

मेरा हिन्दी सीखने का अनुभव बहुत अच्छा रहा। मैं पिछले चार साल से हिन्दी USA संस्था में हिन्दी सीख रही हूँ। मैं हिन्दी USA की अध्यापिकाओं को बहुत धन्यवाद देना चाहती हूँ जिन्होंने मुझे बहुत संयम के साथ हिन्दी सिखाई। जिसके कारण मेरी हिन्दी के प्रति रुचि बढ़ी। हिन्दी सीखने का मुझे बहुत फायदा हुआ है। अब मैं हर सप्ताह फोन पर अपने नाना-नानी और दादा-दादी के साथ हिन्दी में बात करती हूँ। वे मुझे हिन्दी में बातें करते सुनकर बहुत खुश होते हैं। उन्हें ऐसा लगता है जैसे मेरा पालन-पोषण भारत में ही हो रहा है, और भारत के बाहर रहकर भी हम अपनी भारतीय-संस्कृति से जुड़े हुए हैं।

ज्योति काबरा एडिसन हिन्दी पाठशाला में मध्यमा एक की छात्रा है। ज्योति को भारतीय संस्कृति से जुड़ी बच्चों की कहानियाँ पढ़ने व सुनने का शौक है। संगीत एवं चित्रकारी में ज्योति की विशेष रुचि है।

होली आयी होली आयी, रंगों की बरसात लाई।
सब ने खाई रंगीन मिठाई, रंग बिरंगी होली आयी।

"मेरा प्रिय त्यौहार होली है क्योंकि होली रंगों का त्यौहार है" - ज्योति काबरा

कार्तिक चतुर्वेदी

दसवीं कक्षा का छात्र कार्तिक जैक्सनविल हिंदी पाठशाला में पिछले पाँच वर्षों से हिंदी सीख रहा है एवं विशिष्ठ स्तर का विद्यार्थी है।

मेरी उदयपुर - यात्रा

पिछले वर्ष गर्मियों की छुट्टियों में मैं अपने माता-पिता और बहन के साथ एक पारिवारिक समारोह के लिए भारत गया था। मेरी छुट्टियाँ समाप्त होने में कुछ ही दिन बचे थे। मैंने अपने नाना जी से भारत का कोई नया स्थान देखने की इच्छा व्यक्त की। उन्होंने ऐतिहासिक नगर उदयपुर जाने की सलाह दी। अगले दिन, हम लोग उदयपुर के लिए निकल पड़े। रास्ता बहुत सुन्दर था। हम लोगों ने रास्ते में बहुत से ऊँट, बंदर और बकरियाँ देखीं। उदयपुर पहुँच कर सबसे पहले हम महाराणा प्रताप स्मारक देखने गए। वहाँ वीर महाराणा प्रताप और उनके घोड़े चेतक की मूर्तियाँ हैं। महाराणा प्रताप की मूर्ति में उन की कमर पर दो तलवारें बंधी हुई थीं। यह देख कर मुझे आश्चर्य हुआ। हमारे मार्गदर्शक ने बताया कि महाराणा प्रताप हमेशा अपने साथ दो तलवारें इसलिये रखते थे जिससे यदि उन के सामने शत्रु निहत्था हो तो वे उसे अपनी एक तलवार दे दें और उसी के बाद उससे युद्ध करें। निहत्थे शत्रु पर वार नहीं करने का यह सिद्धांत मुझे बहुत न्यायोचित लगा।

उसके बाद हम सिटी पेलेस देखने गए। यह महल एक पहाड़ी पर बना है और इससे पूरे शहर का दृश्य दिखाई देता है। सोलहवीं शताब्दी में बना यह सुन्दर महल, महाराणा प्रताप के पूर्वज उदय सिंह ने बनवाया था और यह मेवाड़ घराने का निवास स्थान था। यहाँ अब एक संग्रहालय बना दिया गया है। संग्रहालय में हमने महाराणा प्रताप का कवच देखा जिसका भार चालीस किलो था। यह कवच उन्होंने हल्दीघाटी के युद्ध में पहना था। संग्रहालय में अनेकों चित्र हैं जो हल्दीघाटी के युद्ध की कहानी बताते हैं। वीर प्रताप इस युद्ध में मुग़ल सेना से बहुत बहादुरी से लड़े और चेतक उन्हें बचाते हुए शहीद हो गया। चेतक की स्वामिभक्ति ने मुझे बहुत प्रभावित किया।

उदयपुर की इस यात्रा से मैंने भारत के इतिहास और विशेष तौर पर वीर महाराणा प्रताप के बारे में बहुत सीखा। मैं उनके देशप्रेम और वीरता पर गर्व करता हूँ।

वसुंधरा दानी बारहवीं कक्षा की छात्रा हैं एवं इंदौर के सिका स्कूल में पढ़ती हैं। इस कविता के द्वारा वे भारतीय संस्कृति के मूल्य एवं उसके कुछ पहलुओं को दर्शाना चहती हैं। वे कर्मभूमि पत्रिका के संपादक मंडल की आभारी हैं।

धन्य-धन्य है हमारी भारतीय संस्कृति

भारतीय संस्कृति है सारे जग में महान
यही है हर भारतीय की सच्ची शान
सत्य, प्रेम और एकता से सजी है इसकी आकृति,
धन्य-धन्य है हमारी भारतीय संस्कृति॥

जब अंग्रेज मुग़ल आदि ने भारत में अपना कदम बढ़ाया
तब हमारी संस्कृति ने उन्हें भी है अपनाया
आपसी प्रेम की ऐसी है यह अनोठी माया
जहाँ कभी न होता कोई धर्म पराया
हर्ष उल्लास और उमंग की यह है सलोनी आकृति
धन्य धन्य है हमारी भारतीय संस्कृति॥

अतिथि, प्रकृति और पशुओं को भी भारत में है पूजा
ऐसा अनुपम देश नहीं सारे जग में कोई दूजा
ऐसी महान संस्कृति के नगमे सभी को मैं सुनती हूँ
मैं भारत में रहती हूँ यही सोच इतराती हूँ
भाईचारे और अहिंसा से गुथी है इसकी आकृति
धन्य धन्य है हमारी भारतीय संस्कृति॥

जय भारत, जय हिंद

रचिता सिंह

बच्चों, क्या तुम बता सकते हो?

१. "पंचतंत्र" नामक प्राचीन कथा ग्रंथ किसके द्वारा लिखा गया?

क) नारायण पंडित ख) कालिदास ग) विष्णु शर्मा घ) अश्वघोष

२. हनुमान चालीसा की रचना किसने की?

क) बाल्मिकी ख) गोस्वामी तुलसीदास ग) कालिदास घ) भारवि

३. "ओम जय जगदीश हरे" आरती किसने लिखी?

क) पंडित श्रद्धाराम ख) श्रद्धानन्द ग) शिवानन्द घ) विश्वामित्र

४. राष्ट्रीय गीत "वन्दे मातरम्" की रचना किसने की?

क) रवीन्द्र नाथ टैगोर ख) रामकृष्ण परमहंस ग) बंकिमचन्द्र चटर्जी घ) स्वामी विवेकानन्द

५. "हितोपदेश" ग्रंथ किसने लिखा?

क) विष्णु शर्मा ख) बाणभट्ट ग) नारायण पंडित घ) दंडी

६. इनमें से कौन से ऋषि यज्ञ रक्षा हेतु राजा दशरथ से राम-लक्ष्मण को माँगकर लाए थे?

क) वसिष्ठ ख) बाल्मिकी ग) विश्वामित्र घ) अत्रि

७. भगवान श्री कृष्ण के गुरु कौन थे?

क. वैशयापन ख) द्रोणाचार्य ख) बाल्मिकी घ) परशुराम

८. महाभारत कालीन नगर इन्द्रप्रस्थ को वर्तमान में क्या कहते हैं?

क) पानीपत ख) दिल्ली ग) सोनीपत घ) कुरुक्षेत्र

९. कौन सी नदी का जल सबसे पवित्र माना जाता है?

क) चर्मंवती ख) गंगा ग) ब्रह्मपुत्र घ) यमुना

१०. अयोध्या नगर किस नदी के तट पर स्थित है?

क) गंगा ख) सरयू ग) यमुना घ) नर्मदा

११. भगवान श्री कृष्ण किस पक्षी का पंख अपने मुकुट में धारण करते थे?

क) कोयल ख) तोता ग) मोर घ) मैना

१२. सरस्वती जी का वाहन कौन सा पक्षी है?

क) हंस ख) कबूतर ग) बाज घ) उल्लू

१३. इनमें से किसे हिन्दू लोग "माता" मानते हैं?

क) बकरी ख) गाय ग) गाय घ) भैंस

१४. भारत का सबसे बड़ा मेला कौन सा है?

क) नौचंदी ख) कुंभ ग) पुष्कर घ) सोनपुर

अब बड़ों की बारी है

क्या आप भारतीय सस्कृति की ये बातें जानते हैं?

१५. निम्नलिखित में से कौन सा ग्रंथ शंकराचार्य द्वारा रचित है?

क) भजगोविंदम ख) पंचीकरण ग) विवेक चूड़ामणि घ) चंडीशतक

१६. महाभारत ग्रंथ की रचना किस छंद में हुई है?

क) अनुष्टुप ख) रोला ग) भुजंगप्रयात घ) हरिगीतिका

१७. हमारे देश का "वंदेमातरम्" निम्नलिखित में से किस ग्रंथ में है?

क) गीतांजलि ख) आनन्दमठ ग) गोदान घ) संगीत रत्नाकर

१८. पहेलियों एवं मुकरियों के रचयिता इनमें कौन हैं?

क) रैदास ख) खुसरो ग) दादू दयाल घ) मूलकदास

१९. "शिव तांडव" स्त्रोत की रचना किसने की थी?

क) पाणिनी ख) रावण ग) जायसी घ) दंडी

२०. हिन्दी पंचांग के अनुसार नव संवत्सर का प्रारम्भ किस माह से होता है?

क) ज्येष्ठ ख) पौष ग) वैशाख घ) चैत्र

२१. प्राचीन भारतीय शिक्षा का प्रमुख केन्द्र तक्षशिला वर्तमान में किस देश में स्थित है?

क) चीन ख) पाकिस्तान ग) अफगानिस्तान घ) भूटान

२२. महाभारत कालीन नगर हस्तिनापुर को वर्तमान में क्या कहते हैं?

क) दिल्ली ख) मुरादाबाद ग) मेरठ घ) फरीदाबाद

२३. गीता के उपदेश में श्री कृष्ण ने स्वयं को वेदों में कौन सा वेद कहा है?

क) ऋगवेद ख) सामवेद ग) यजुर्वेद घ) अथर्ववेद

२४. मन को बाहरी विषयों से हटाकर उसे अंतर्मुखी करके किसी विषय को समझने के लिए बारंबार विचार करना - यह योग की क्रिया के किस अंग में आता है?

क) ध्यान ख) धारणा ग) प्रत्याहार घ) समाधि

१) ग. विष्णु शर्मा २) ख. गोस्वामी तुलसीदास ३) ग. शिवानन्द ४) ग. बंकिमचन्द्र चटर्जी ५) ग. नारायण पंडित ६) ग. विश्वामित्र ७) ग. संदीपन ८) ख. दिल्ली ९) ख. गंगा १०) ख. सरयू ११) ग. मोर १२) क. हंस १३) ख. गाय १४) ख. कुंभ १५) घ. चंडीशतक १६) क. अनुष्टुप १७) ख. आनन्दमठ १८) ख. खुसरो १९) ख. रावण २०) घ. चैत्र २१) ख. पाकिस्तान २२) ग. मेरठ २३) ख. सामवेद २४) ग. प्रत्याहार

पुरुषार्थ

- पुरुषार्थ किए बिना भाग्य का निर्माण नहीं हो सकता। - *बाल्मिकी*
- पुरुषार्थ मनुष्य करता है तो सहायता ईश्वर करता है। - *प्रेमचन्द*
- पुरुषार्थहीन मनुष्य जीते-जी ही मरा हुआ है। - *शंकराचार्य*
- पुरुषार्थ मेरे दाएँ हाथ में है और सफलता मेरे बाएँ हाथ में। - *अथर्ववेद*
- लक्ष्य पूरा करने के लिए अपनी समस्त शक्तियों द्वारा परिश्रम करना ही पुरुषार्थ है। - *अज्ञात*

पहेलियाँ

नीचे बने वर्ग में निम्नलिखित रंगों को ढूँढो (प्रथमा-१ स्तर के विद्यार्थियों के लिए)

नीला, लाल, काला, हरा, पीला, सफेद, बैंगनी, नारंगी, सुनहरा, स्लेटी, गुलाबी, भूरा

भू	स	पी	ला	बी	रा	सु
स्	फे	नी	गु	रा	बैं	ला
ना	द	रा	ला	बी	रा	टी
का	रं	स्	बी	ह	बी	स्
ला	भू	गी	न	ला	स्	ले
रा	ल	सु	बैं	ग	नी	टी
बैं	भू	रा	ला	ह	रा	ह

बूझो तो जानें!

नीचे लिखी पहेलियों को सुलझाओ (उच्च स्तर के विद्यार्थियों के लिए)

१. कच्ची हो तो रहे हरी
पकने पर हो जाए लाल
खाने वाला सी-सी करे
हो जाए पल में बेहाल

२. आदि कटे तो गीत सुनाऊँ
मध्य कटे तो संत बन जाऊँ
अंत कटे साथ बन जाता
संपूर्ण सबके मन भाता

३. नीले-नीले आसमान में,
काला पंछी उड़ता जाए
लेकिन मेरे प्यारे बच्चों
यह धरती की प्यास बुझाए

१. मिर्च २. साँप ३. बादल

निम्नलिखित शब्द पहेली में शहरों और नगरों के नाम ढूँढिए

लखनऊ, दारजिलिंग, डलहौज़ी, जालंधर, कालका, पुरी, ऊटी, गणेशपुरी, कानपुर, अमृतसर, जम्मू, दिल्ली, जमशेदपुर, सियालदा, कुफरी, भुज, नागपुर, आगरा, रामपुर, रानीखेत, हरीद्वार, बंगलौर, चंडीगढ़, मुंबई, भोपाल, मनाली, हावड़ा, पुणे

दा	ड	क	य	पू	र	जा	सि	का	न	पु	र
र	ल	ख	न	ऊ	म	लं	य	ल	अ	री	न
जि	हौ	मे	का	टी	क	ध	अ	का	मू	ब	ज
लिं	ज़ी	न	न	स	र	र	मृ	म	ज	दि	म
ग	णे	श	पु	री	ल	य	त	ण	म्मू	ल्ली	शे
सि	ब	स	र	न	आ	प	स	के	त	न	द
या	ह	भु	र	ना	ग	पु	र	ब	र	रा	पु
ल	कु	ज	थ	स	रा	नी	खे	त	क	म	र
दा	फ	झ	ला	हा	व	ड़ा	थ	दा	म	पु	णे
ह	री	द्वा	र	ल	नी	कु	बं	ग	लौ	र	ह
चं	डी	ग	ढ़	य	ङ	मुं	ब	ई	र	स	ग
ज	न	भो	पा	ल	ख	ग	म	ना	ली	म	घ

रचिता सिंह

हिंदी क्या है?

बच्चों, हिंदी भारत की राष्ट्रभाषा है। भारत में रहने वाला प्रत्येक व्यक्ति इसे अपने लाभ के लिए उपयोग तो करता है, परंतु हिंदी को वह सम्मान, प्यार, और आदर नहीं देता जो देना चाहिए। बच्चों, तुम सब बहुत अच्छे हो जो अमेरिका में रहकर हिंदी सीख रहे हो। आशा है तुम्हारे कारण हिंदी युगों-युगों तक जीवित रहेगी। यहाँ पर मैं एक बहुत सरल कविता तुम्हारे लिए लिख रही हूँ। इसे अवश्य याद करना।

भारत की शान है हिंदी
भारत की पहचान है हिंदी
कवियों की परिभाषा है हिंदी
लेखकों की भाषा है हिंदी
यू.पी. की तो आन है हिंदी
शिक्षकों का अरमान है हिंदी
गुरुओं का सहारा है हिंदी
शहीदों का आव्हान है हिंदी
सैनिकों का बलिदान है हिंदी
पूर्वजों का एहसास है हिंदी

बच्चों पर कुर्बान है हिंदी
दादी-नानी की जुबान है हिंदी
नेताओं की कमान है हिंदी
गायकों की बुनियाद है हिंदी
नृतकों की फरियाद है हिंदी
फिल्मों का माध्यम है हिंदी
माता का संस्कार है हिंदी
पिता का प्यार है हिंदी
हिंदी यू.एस.ए. की पूजा है हिंदी
कार्यकर्ताओं का भगवान है हिंदी

नव वर्ष तुम्हारा अभिनंदन है

रचिता सिंह

बच्चों तुमने अक्सर चाइनीज् न्यू इयर, जूइश न्यू इयर आदि के बारे में सुना होगा। यहाँ तक कि तुमने इसे अपने स्कूल के कैलेंडर पर भी देखा होगा। चाइनीज् न्यू इयर की परेड को तुमने शायद टी.वी. पर भी देखा होगा। क्या तुम्हारे मन में कभी यह प्रश्न नहीं उठा कि भारतीय न्यू इयर कब आता है? होता है भी या नहीं? यदि होता है तो हम इसे क्यों नहीं मनाते या कैसे मनाते हैं? आदि-आदि।

बच्चों, हिंदू कैलेंडर विश्व के सबसे पुरातन कैलेंडरों में से एक है। हमारे सभी हिंदू त्यौहार जैसे होली, दीपावली, रक्षाबंधन, दशहरा, मकर संक्रांति, करवा चौथ आदि इसी कैलेंडर की तिथियों के आधार पर मनाए जाते हैं। ये तिथियाँ चंद्रमा की गणना पर आधारित होती हैं। अन्य हिंदू संम्प्रदाय जैसे जैन, सिक्ख, और बौद्ध भी इसी कैलेंडर को मानते हैं।

इस कैलेंडर में अनेक संवत् हैं, जैसे शक् संवत्, विक्रम संवत्, कल्प संवत्, सृष्टि संवत् आदि। इनमें से शक और विक्रम संवत् सबसे अधिक प्रचलित है। संवत् का अर्थ उसी तरह होता है जैसे अंग्रेजी कैलेंडर में हम ईसा पूर्व या ईसा बाद लिखते हैं। जैसे शक और हूण जातियों पर विजय पर्व का दिन 'शक संवत्' का शुभारंभ करता है, वहीं विक्रम संवत् का नाम परमवीर तथा बुद्धिमान राजा विक्रमादित्य के नाम से जाना जाता है।

अभी विक्रम संवत् 2068 चल रहा है। विक्रम संवत् के अनुसार प्रतिवर्ष चैत्र माह के गुड़ी पड़वा के दिन (इस वर्ष अप्रेल 4 को) हमारा नया वर्ष प्रारंभ होता है। अलग-अलग प्रांतों में इसे अलग-अलग तरह से मनाया जाता है। इसे बैठकी (घट स्थापना, ज्वारे बोना), नवरात्रि प्रारंभ का दिन गुड़ी पड़वा, चेटी चंद, (सिंधियों के गुरु का जन्मदिन) आदि अनेक उत्सवों का नाम दिया जा सकता है।

यह दिन हमारे लिए जीवन के शुभारंभ की सूचना लेकर आता है। वृक्षों पर नन्हीं कोपलें, नए पुष्प, नई त्वचा, तथा नए वर्ष और नए मौसम को हम देख सकते हैं। कहते हैं इसी ब्रह्मा जी ने सृष्टि का निर्माण प्रारंभ किया था। इसी दिन भगवान रामचंद्र जी का राज्याभिषेक हुआ था, तथा इसी दिन शक और हूण जाति पर शालिवाहन ने विजय पाई थी।

भारतीय लोग इस नए वर्ष को पूजा करके, उपवास रख कर, तथा अपने घरों को मिश्री, नीम की पत्ती, रांगोली और आम के पत्तों से सजाते हैं। इसी दिन ज्वारे (गेहूँ की बाली) बोए जाते हैं, जिन्हें रामनवमी के दिन विसर्जित किया जाता है। कहते हैं चैत्र के ये नौ दिन (नवरात्रि) बहुत ही पवित्र होते हैं। इस समय पूजा, प्रार्थना, यज्ञ तथा साधना आदि करने से सफलता आसानी से मिलती है। ऐसा माना जाता है कि इस समय दैवीय शक्तियाँ धरती के पास आ जाती हैं।

तो बच्चों अब तुम अपने घरों में लगे हिंदू कैलेंडर या हिंदी यू.एस.ए. कैलेंडर को देखोगे तो तुम्हें ये सब बातें और अच्छे से समझ आएँगी। अब तुम अपने दोस्तों को तथा अपने स्कूल बोर्ड वालों को भी पहले से बताकर इसे अपने स्कूल कैलेंडर में भी छपवा सकते हो।

उषा भिसे

उषा भिसे जी पिछले ४ वर्षों से हिंदी यू.एस.ए से जुड़ी हुई हैं और एडिसन पाठशाला में कनिष्ठ-२ स्तर को पढ़ती हैं। इनकी साहित्य में बहुत रूचि है। कविताएँ और लेख लिखना इनको बहुत अच्छा लगता है।

संदेश

आओ बच्चो तुम्हें सुनाऊँ, सरल सुन्दर मुराद यही
समझो पहले बात सही, तुम हो हिन्दुस्तानी ॥
मानव का है स्वभाव अपना, सीखना जग की रीति
पर मत भूलना अपनी जाति, अपने धर्म की रूढ़ि ॥
आये हो तुम इतनी दूरी, छोड़ कर अपनी मातृभूमि
मत सोचो यह देखादेखी, मन से करो पढ़ाई॥
पढ़ो लिखो बोली यहाँ की, मानाओ खुशियाँ त्यौहारों की
मौज मनाओ हैलोवीन की, क्रिसमस के शुभ दिनों की
पर याद रखना अपनी दिवाली, रंग-बिरंगी होली की
राम कृष्ण की सुनो कहानी, आखिर तुम हिन्दुस्तानी
गुज़ारिश है यह छोटी सी, सच अपनाओ छोड़ो बुराई
रखना शान संस्कृति की, नेकी और रिवाजों की
चाहे रहो देश परदेश, मत भूलो यह संदेश
संस्कृति के तुम हो रक्षक, नयी पीढ़ी के तुम्हीं हो दीक्षक

रश्मि देवाडिगा चैरी हिल पाठशाला के विशिष्ठ स्तर की मेधावी छात्रा हैं। इनकी उम्र १२ वर्ष की है, और ये सातवीं कक्षा में पढ़ती हैं। इनका प्रिय विषय गणित एवं विज्ञान है, और इन्हें चित्रकारी और भरतनाट्यम नृत्य करना बहुत पसंद है। रश्मि हिन्दी कक्षा में सदैव प्रथम आती हैं, और महोत्सव की कविता पाठ और अन्य प्रतियोगिताओं में पुरुस्कार जीत चुकी हैं।

मेरी सोच बदल गई

मुझे हिन्दी सीखने से जो लाभ हुआ है, मैं वह आप लोगों के साथ बाँटना चाहती हूँ। जब मैं सात साल की थी, तब मेरे माता-पिता ने मुझे चैरी हिल हिन्दी पाठशाला में प्रवेश दिलवाया था। मैं मन में सोच रही थी, हम यहाँ यू.एस. में रहते हैं और हमारे स्कूलों में हिन्दी की जरूरत नहीं है तो मैं हिन्दी सीखने का परिश्रम क्यों करूँ? अब पाँच साल हिन्दी पाठशाला जाकर हिन्दी सीखने के बाद, मेरी सोच बदल गई है। अब मैं हिन्दी पढ़, लिख और बोल सकती हूँ। मैं अपने भारत की धार्मिक पुस्तकें तथा कहानियाँ पढ़ सकती हूँ जिससे हमें अच्छाई और बुराई को समझने का ज्ञान मिलता है। इन पुस्तकों को पढ़ने से मार्गदर्शन मिलता है कि हमारे जीवन का लक्ष्य क्या है और हम किस प्रकार से समाज कल्याण कर सकते हैं।

इस तरह की शिक्षा हमें कोई और पुस्तक में नहीं मिलेगी। मुझे हिन्दी पुस्तक पढ़ने में आनंद मिलता है। पहले जब मेरी माताजी किसी बात कैलिए, जैसे स्लीपओवर पार्टी जाने कैलिए, मना करतीं, तो मैं बहुत दुखी होती थी। अब मैं अपनी संस्कृति और परंपरा जानती हूँ। यह ज्ञान मुझे हिन्दी सीखने से ही मिला है। मैं अपने शिक्षक और शिक्षिका की सदा कृतज्ञ रहूँगी क्योंकि उन्होंने मुझे यू.एस. में हिन्दी सीखने का अवसर दिया। अब मैं गर्व से कह सकती हूँ कि मैं भारतीय हूँ। मैं सभी बच्चों से यही कहूँगी कि वे हिन्दी अवश्य सीखें। मैं अगले वर्ष से चैरी हिल हिन्दी पाठशाला में स्वंयसेविका का काम भी करूँगी।

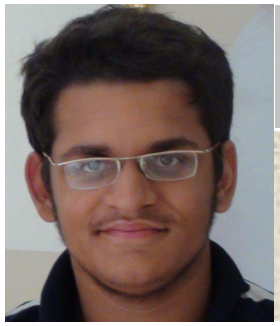

माता-पिता

आदित्य नौवीं कक्षा के मेधावी छात्र हैं। हिन्दी यू.एस.ए. की एडिसन पाठशाला से विशिष्ठा की कक्षा उतीर्ण की है। एडिसन हाई स्कूल में भी हिन्दी ऑनर के छात्र हैं। आदित्य हिन्दी यू.एस.ए. के होनहार युवा कार्यकर्ताओं में से एक हैं। आदित्य को नेट सर्फिंग में बहुत रुचि है। हिन्दी फिल्मी संगीत की कक्षाओं में जाते हैं व भारतीय संस्कृति के प्रति अत्यधिक आदर है।

जब मेरी माँ ने मुझे कहा कि इस बार कर्मभूमि विशेषांक भारतीय संस्कृति पर आधारित है, तो मेरे मन में आया संस्कृति: “culture is the way of living”. भारतीय संस्कृति के बारे में क्या कहा जाए, यह तो बहुत बड़ा विषय है। मैं यहाँ बस एक ही बात कहना चाहता हूँ। अमेरिका में हम Mother’s Day and father’s day मनाते हैं। बहुत ही धूम-धाम से यह दिन मनाया जाता है, लेकिन मैंने देखा माता-पिता को जब बूढ़ा होने पर अपने बच्चों की सबसे अधिक आवश्यकता होती है तब उन्हें बच्चे अकेला छोड़ देते हैं। ऐसे Mother’s Day और Father’s Day मनाने का क्या औचित्य।

भारत में हम गंगा माता, गऊ माता, धरती माता, भारत माता और शेरांवाली माँ जो सबकी माँ है, को माँ कह कर बुलाते हैं व जीवन भर इनका आदर करते हैं। हमारे अपने ही परिवार में कितनी माएँ हैं, जिनका हम बहुत ही आदर करते हैं। बड़ी माँ, छोटी माँ, अपनी मौसी माँ।

मुझे याद है जब मैं छोटा था अपने ताऊ जी, ताई जी को पापा व माँ कह कर बुलाता था। धीरे-धीरे बड़ा हुआ तो मैं उन्हें ताऊ जी-ताई जी कह कर बुलाने लगा। जब माँ कहतीं कोई चीज़ पापा को दे आऊँ तो मैं पूछता, “कौन से पापा?” यानि ताऊ जी या पापा। ऐसे ही मौसी, माँ ने बताया मौसी अर्थात् माँ जैसी। सही ही तो है क्योंकि मौसी बिल्कुल माँ की भाँति ही हमारा ख्याल रखती हैं। मौसी के पास होने से ऐसा लगता है, जैसे अपनी माँ के पास ही बैठे हैं।

मैं जब भारत जाता हूँ तो बहुत अच्छा लगता है। ताई जी, बुआ जी और मामा जी के घर अपने चचेरे, फूफेरे और ममेरे बहन-भाइयों के साथ मिलजुल कर रहने से बार-बार यही लगता है हमारे भारतीय परिवार कितने अच्छे हैं। मेरे मामा जी-मामी जी, ताऊ जी-ताई जी जिस प्रकार नाना-नानी व दादी का ध्यान रखते हैं देख कर ऐसे लगता है हमारी संस्कृति विश्व में सबसे अच्छी है। हम अपने माता-पिता को nursing home में नहीं छोड़ आते बल्कि उनके बुढ़ापे में सदा ही उनका सहारा बनते हैं। जिस प्रकार हमें माता-पिता की सीख की सदा ही आवश्यकता होती है उसी प्रकार माता-पिता को भी सदा ही अपने बच्चों के साथ की सदा ही आवश्यकता होती है। हम क्यों अपने कर्त्तव्य से विमुख हो जाएँ?

PEDIATRICS

Union County Pediatrics Group

Raghunandan Sundaram, MD.,FAAP
Narendra Saraiya, MD.,FAAP
Amita Patel, MD
Ravi K. Iyengar, P.A.

Locations

102 James St., Suite 303
Edison, NJ 08820
Tel: 732-662-3300

817 Rahway Ave.
Elizabeth, NJ 07202
Tel: 908-353-5750

PROCEDURES PROVIDED

Blood Drawing • Hearing Test • EKG • Asthma Treatment/Allergy

Minor surgeries • Vision Screening • Planned Parenthood

Counseling • OTC Contraception.

OFFICE HOURS

MONDAY THROUGH SATURDAY : CALL FOR OFFICE HOURS.

AGE: New Born, Children, Adolescent up to 21 years.

PARTICIPATING WITH THE FOLLOWING HOSPITALS

TRINITAS HOSPITAL - ELIZABETH
JFK MEDICAL CENTER - EDISON

For Appointments Only

732-662-3300 • 908-353-5750

A Referral is the greatest compliment we can receive

Khushboo

Pure Indian vegetarian Restaurant

1734 OakTree Road, Edison, NJ 08820

Tel : 732 - 548 - 0015 • Fax : 732 - 548 - 3607

www.khushboo-restaurant.com

Jain Food available for Catering

Catering Orders Accepted

Up to 1000 People Start at $5.95

We make food On-Site with your choice of Menu

We have a Party Hall up to 1000 People

Start at $ 12.95 per Person

Mon to Fri.: Khushboo Thali Unlimited Lunch&Dinner $ 9.95

Puri $0.30 each

100 for $25.00

Fulka Roti $0.35 each

100 for $30.00

પુરણ-પુરી / બાજરી રોટલા

Puran Puri / Bajari Rotal

$1.25 each

10 for $9.95

આઈસક્રીમ બકેટ

Ice Cream Bucket

$37.95 With coupon

ફ્રેશ મેથી થેપલા

Fresh Methi Thepla

1 lb $7.95

Samosa $0.75 each

10 pcs for $6.95

Lilva Kachori
Masala Paties
Cutlet
Batata Vada
} 0.60¢

10 for $4.95

Fafda - $7.95/lb

Reg. - $9.95/lb

Ladoo, Poori,
Val, Ringan Batata,
Fulvadi, Raita,
Rice, Dal,
Papad & Pickle

$5.75

min. 50 person

Chole Puri or Pav Bhaji
with Gulab Jamun or Jalebi
each $3.95 min. 25 person

Only for Catering, Party & Picnic

Call Naresh Kapadia: 732-829-2099

We do food supply to Adult Day Care Center. We make Fresh Food Everyday

લાડું, શ્રીખંડ,
ગુલાબજાંબુ, ગાજર હલવા,
મોહનથાળ, ભુંદી, જલેબી
$3.95/lb
min 10 lb
48 hrs. Advance order

ખમણ, ફુલવડી,
ખાંડવી,
ખીચું (પાપડી નો લોટ)
$3.95/lb
min 10 lb
48 hrs. Advance order

ALL SWEETS
$5.95/lb
min 10 lb
72 hrs.
Advance order

Catering for min. 50 people
30 days Advance Order $5.95
15 days Advance Order $6.45
1 Week Before $6.95
Two Vegetables, One Farsan, One Sweet Rice, Dal, Roti, Papad, Pickle and Chutney.
Above Price for Gujarati Menu only.
We do Catering for Punjabi, Chinese, South Indian and Italian Foods

We accept Party & Catering Order for
Pan, Juice Bar, Italian Ice, Cotton Candy, Slush Drinks, Sugar can Juice & much more drinks

1734 OakTree Road, Edison, NJ 08820
Tel: 732-548-0015 • Fax: 732-548-3607

Khushboo Pan Center

We accept Party & Catering Order
Open 7 Days: 10:00 am to 10:00 pm

Minimum 100 pan
Minimum 100 pan

NICKY'S SPORTS & SMOKE SHOP

WE OFFER THE FOLLOWING SERVICES

- Notary Public
- Lottery
- Utility Bills
- Fax Services
- Cigar Tobacco PDTS.
- Keys Made Here
- Gift Articles
- Calling Cards

NOTARY PUBLIC

DTDC DOMESTIC - INTERNATIONAL COURIER
COURIER SERVICE TO INDIA
DOMESTIC & INTERNATIONAL

Tel: 732-548-0019 • Fax: 732-548-3607

पहेलियों के उत्तर

रंगों के नाम

भू	स	पी	ला	बी	रा	सु
स्	फे	नी	गु	रा	बैं	ला
ना	द	रा	ला	बी	रा	टी
का	रं	स्	बी	ह	बी	स्
ला	भू	गी	न	ला	स्	ले
रा	ल	सु	बैं	ग	नी	टी
बैं	भू	रा	ला	ह	रा	ह

Sugam Sangeet

Sangeet Vidyalaya

We Offer	Training for Hindustani vocal music, Harmonium, Tabla, Karaoke, Voice Projection and Timing, Public speaking and Radio Jockey
Location	2088 US Highway 130 North Monmouth Junction, NJ 08852
Information and Registration	Contact - Kulraaj Anand E-Mail - kulraaj@gmail.com Cell Phone - (732)-668-3726

शहरों के नाम

दा	ड	क	य	पू	र	जा	सि	का	न	पु	र
र	ल	ख	न	ऊ	म	लं	य	ल	अ	री	न
जि	हौ	मे	का	टी	क	ध	अ	का	मू	ब	ज
लिं	ज़ी	न	न	स	र	र	मृ	म	ज	दि	म
ग	णे	श	पु	री	ल	य	त	ण	म्मू	ल्ली	शे
सि	ब	स	र	न	आ	प	स	के	त	न	द
या	ह	भु	र	ना	ग	पु	र	ब	र	रा	पु
ल	कु	ज	थ	स	रा	नी	खे	त	क	म	र
दा	फ	झ	ला	हा	व	ड़ा	थ	दा	म	पु	णे
ह	री	द्वार		ल	नी	कु	बं	ग	लौ	र	ह
चं	डी	ग	ढ़	य	ङ	मुं	ब	ई	र	स	ग
ज	न	भो	पा	ल	ख	ग	म	ना	ली	म	घ

महाभारत प्रश्नावली के उत्तर

सुधा अग्रवाल

उत्तर १: (क) - किन्दप ऋषि ने श्राप दिया था क्योंकि वह अपनी पत्नी के साथ मृग के रूप में आनन्दित थे। राजा पाण्डु उन्हें पहचान न सके और मृग समझ कर बाण चला दिया। जिससे ऋषि एवं उनकी पत्नी घायल हो गए और श्राप दिया कि जब भी पाण्डु अपनी पत्नी को स्पर्श करेंगे उनकी मृत्यु हो जाएगी।

उत्तर २: (ख) - किन्दप ऋषि के श्राप से दुखी होकर सन्यास लिया था क्योंकि वह अपनी पत्नी कुंती एवं माधवी को स्पर्श करना नहीं चाहते थे।

उत्तर ३: (क) - दुर्वासा ऋषि ने कुंती को आशीर्वाद एवं मंत्र दिया था कि तुम जिस भी देवता का आवाहन करोगी वह आयेंगे और तुम्हारी इच्छानुसार फल देंगे।

उत्तर ४: (क) - धर्मराज का आवाहन किया पुत्र "युधिष्ठिर" को जन्म दिया।

उत्तर ५: (ख) - वायु देवता का आवाहन किया, भीमसेन का जन्म हुआ।

उत्तर ६: (ग) - देवराज इन्द्र देवता का आवाहन किया था, पुत्र अर्जुन का जन्म हुआ।

उत्तर ७: (क) - सूर्य देवता के आवाहन तथा आशीर्वाद से पुत्र कर्ण की प्राप्ति हुई।

उत्तर ८: (क) - कर्ण का जन्म कवच एवं कुण्डल पहने हुए हुआ था इसीलिए कर्ण नाम से पुकारे गए।

उत्तर ९: (ख) - अश्विनी कुमारों का आवाहन किया, उनसे नकुल एवं सहदेव की प्राप्ति हुई।

उत्तर १०: (ख) - दो वर्ष

उत्तर ११: (क) - भीम सेन एवं दुर्योधन

उत्तर १२: (ख) - दुशासन **१३: (क)** - हस्तिनापुर

उत्तर १४: (क) - द्रोणाचार्य

उत्तर १५: (ख) - महर्षि भरद्वाज के पुत्र - जन्म का स्थान गंगाद्वार

उत्तर १६: (क) - अग्निवेश्य जी से शिक्षा प्राप्ति की थी।

उत्तर १७: (ख) - कृपी **उत्तर १८: (क)** - अश्वत्थामा

उत्तर १९: (क) - महेन्द्रांचल में जाकर परशुराम जी से अस्त्रों-शस्त्रों को प्राप्त किया।

उत्तर २०: (क) - द्रोणाचार्य एक गरीब ब्राह्मण थे, वह क्षत्रिय नहीं थे।

उत्तर २१: (क) - गौतम ऋषि के पौत्र व ऋषि शरद्वान के पुत्र थे।

उत्तर २२: (क) - कृपी **उत्तर २३: (ख)** - अर्जुन

उत्तर २४: (क) - निषादपति हिरण्यधनु के पुत्र थे।

उत्तर २५: (क) - एकलव्य क्षत्रिय नहीं थे, वे निषाद जाति के थे, इसीलिए धनुर्विद्या सिखाने से द्रोणाचार्य जी ने मना कर दिया?

Inglemoor

Rehabilitation & Care Center

Excellence In Service

To Residents and Families

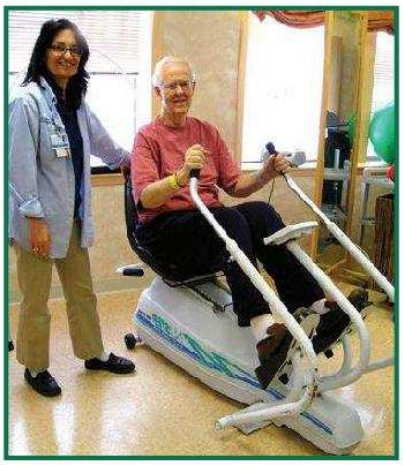

- ✓Professional long-term and skilled care, sub-acute and rehabilitation services
- ✓Specializing in cardiac, orthopedic, rehabilitation and wound care in our new, 3,000 square foot, state-of-the-art Therapy Gymnasium
- ✓**5 Star Rating** from the Centers for Medicaid and Medicare Services, U.S. Dept. of HHS

973-994-0221

Inglemoor Rehab & Care Center
311 South Livingston Avenue
Livingston, NJ 07039

www.inglemoor.com

Wherever your personal or business travels take you, you'll receive a warm welcome as a Premier client at over 8,000 locations worldwide, letting you bank anywhere you go. And no matter how far your wanderlust leads you, you'll always have access to someone who speaks your language. So you can keep building a life without boundaries.

To begin a Premier relationship, stop by our branch at 33 Route 27 Edison NJ 08820 to speak with Hal Gandhi, Premier Relationship Manager, call 732-590-3013 or visit hsbcpremierusa.com.

HSBC Premier

HSBC
The world's local bank

United States persons (including U.S. citizens and residents) are subject to U.S. taxation on their worldwide income and may be subject to tax and other filing obligations with respect to their U.S. and non-U.S. accounts (including, for example, Form TD F 90-22.1, Report of Foreign Bank and Financial Accounts ("FBAR"). U.S. persons should consult a tax adviser for more information.

Deposit products offered in the U.S. by HSBC Bank USA, N.A. Member FDIC. ©2010 HSBC Bank USA, N.A..

04103 -1

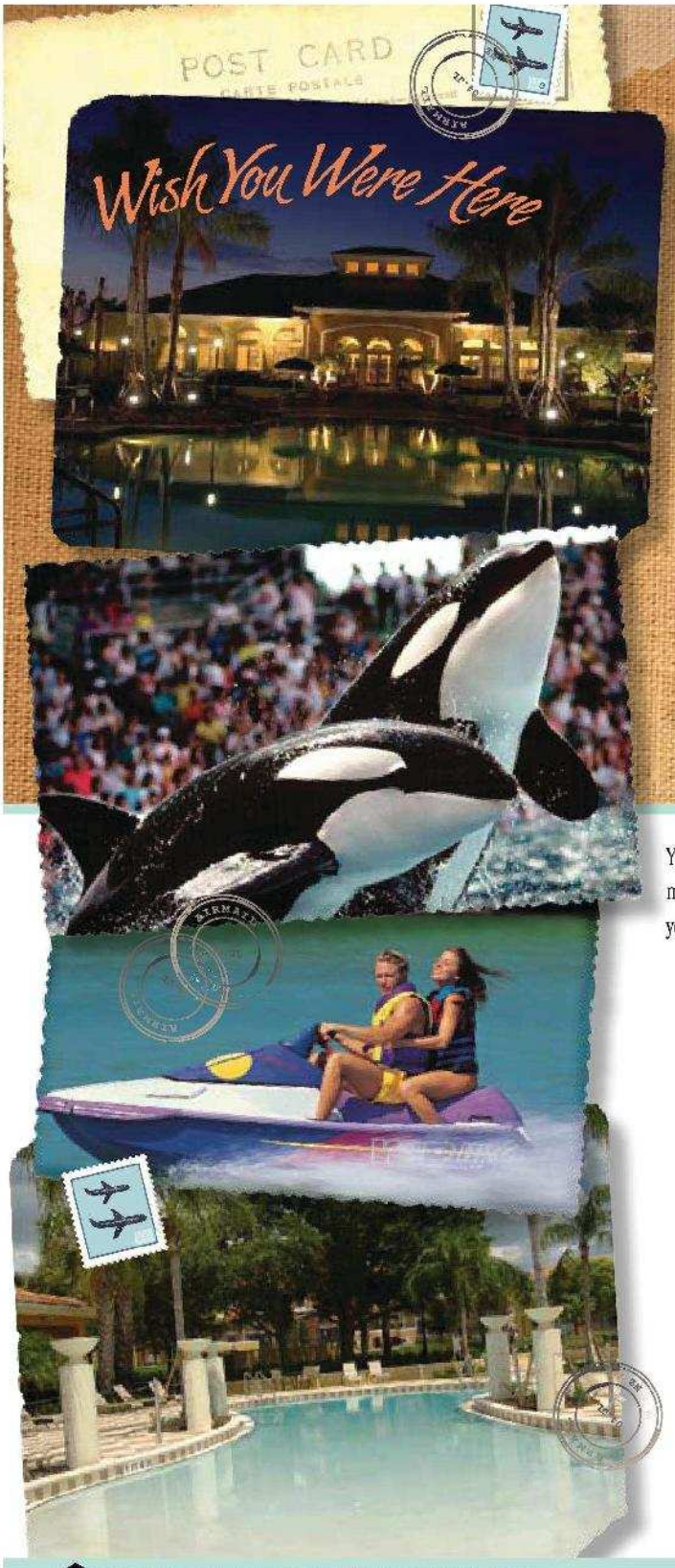

Turn the vacation of a lifetime into a lifetime of vacations

You're sold on all there is to do in Central Florida. Now is the perfect time to make it your home away from home! Our luxurious homes come with a resort in your backyard and famous neighbors at your doorstep.

BellaVida Resort
Single-family homes & townhomes
407.397.0210
Townhomes from the $150s
Single Family from the $300s

Veranda Palms
Single-family homes
407.432.1057
Single Family Homes from the low $240s!

Watersong Resort
Single-family homes
863.420.2156
From the mid $260s

- Floorplans range from 3 - 5 bedrooms
- Resort-style pools and spacious clubhouses
- 3 spectacular communities near all your favorite Orlando attractions
- Private owner lock-up storage
- Easy access from airport and major roadways
- Zoned for short-term rental

Park Square HOMES

©2010 Park Square Homes. Prices, options, plans and availability are subject to change without notice. Oral representations cannot be relied upon as correctly stating representations of the developer. CBC1256275. Not an offer where prohibited, including NY and NJ.

www.ParkSquareHomes.com

Orlando Vacation Home Rentals!

Make yourself at home in Orlando The next time you visit Central Florida, make plans to stay in a spacious single-family home or townhome. You'll enjoy all the space and privacy not found in a hotel room, with private or community pools, clubhouses and other resort-style amenities! Just minutes from the Walt Disney World® Resort area, Sea World,® Universal Studios® and all the attractions.

800-520-8070
www.NowRentMe.com
emanagement
your investment means everything to us!